धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

जुलाई–2016 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

पूज्य गच्छाधिपति
श्रीमद्विजय जयन्तसेन
सूरीश्वरजी म.सा.
का म.प्र. प्रवेश पर
खजूरी ग्राम में उद्बोधन

श्री जयंतसेन म्युजियम पर
ज्ञानायतन-5 के शिविरार्थियों
के मध्य मार्गदर्शन देते हुए
पूज्य गच्छाधिपतिजी म.सा.

दिशादर्शक-धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

युग प्रभावक सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में

दि. 10 जुलाई 16 को रतलाम में चातुर्मासिक प्रवेश • 18 जुलाई 16 से चातुर्मास पर्व प्रारम्भ

चलो रतलाम! पधारो रतलाम! पधारो रतलाम!

युग प्रभावक गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय

जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का

रतलाम में चातुर्मास प्रवेश **10 जुलाई** को पधारिये

श्रीसंघ सहित अधिकाधिक संख्या में रतलाम पधारने का आमंत्रण

त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ, रतलाम की आज्ञा से

– चातुर्मास लाभार्थी –

चेतन्य काश्यप (विधायक)

अखिल भारतीय नवयुवक परिषद एवं परिषद परिवार, रतलाम

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

इरट्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा.तगराजजी जेठमलजी हिराणी रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत खिमेल, मुम्बई

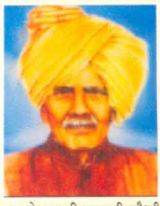

शा.जेठमलजी लादाजी चौधरी गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी गुढाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन बागरा

Received 3007

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंदर (सियाणावाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोतंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तखतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्दूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतडा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतडा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुगानी, मोदरा, विजयवाड़ा

शा. घेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्दुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराय्

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

32412

श्रा. नरेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

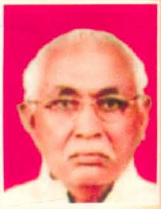

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

श्रा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी वीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

श्रा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

श्रा. ओपचंदजी जवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

श्रा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
थलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

श्रा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तीलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
डामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी छाजेड़
नैगावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
भाणजी भाई, भोरडुवाला, हीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
भोगीलाल सरूपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुड़ालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डुंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

हमारे गौरव

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

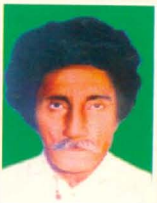

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

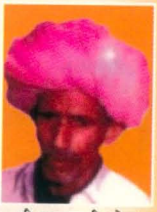

श्री पुखराजजी ओरा थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वड़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

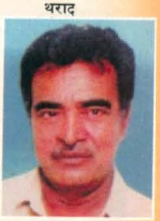

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तल्लेरा कर्मड़वाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

श्री मानसिंहजी राजगढ़

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कावदी, बीजापुर (कर्नाटक)

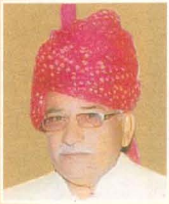
शाह सोहनलाल
मिश्रीचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

ज्ञा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (मायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

जुलाई–2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 64 अंक 7
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए **सुरेन्द्र लोढ़ा**, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

प्रेरक प्रसंग

आंसुओं की धारा, केवलज्ञान प्यारा

समवसरण में बिराजमान

वाणी के पैंतीस गुणों से युक्त वाणी में तीर्थंकर महावीर स्वामी देशना प्रदान कर रहे थे।

साध्वी मृगावती तीर्थंकर वाणी को मंत्रमुग्ध-सी श्रवण कर रही थीं। उन्हें समय का ज्ञान नहीं रहा।

वे बस्ती में लौटीं, तब तक सूर्यास्त हो चुका था। अंधेरा धरती पर उतरने लगा था। मृगावती को ख्याल आया लेकिन क्या कर सकती थी ? झटझट उपाश्रय आई तथा गुरुणीजी चन्दनबाला को वंदन किया। उनने मृगावती से पूछा कि-'अभी तक कहाँ थीं। इतनी देर तक बाहर रहना अनुचित है।'

चंदनबाला संथारा ले चुकी थीं एवं मृगावती ने क्षमा मांगते हुए संथारे की अनुमति मांगी।

चंदनबाला की स्थिति मृगावती की प्रार्थना सुनी-अनसुनी-सी थी। उन्हें निद्रा आ गई। मृगावती वहीं बैठी रह गईं।

उनने पुनः गुरुणीजी से कहा कि- 'मुझे क्षमा कर दीजिये। मुझे आलोयणा दे दीजिये। मैं दंड मांग रही हूँ।' चन्दनबाला तो सो चुकी थीं। वे निद्रा की शरण में थीं। मृगावती को उत्तर प्राप्त नहीं होने पर उनके मन में पश्चाताप का तूफान घुमड़ने लगा। उन्हें लगा कि उनने अक्षम्य अपराध कर लिया है। वे रोने लगीं। उनके नयनों से आंसुओं का टपकना प्रारंभ हो गया।

आंसू... आंसुओं पर आंसू .... फिर आंसू ... आंसू ही आंसू ... पश्चाताप के आंसुओं ने मृगावती के कर्मों को निर्जरा द्वारा शुद्ध कर दिया। वे क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ हो गईं।

उन्हें वहीं बैठे - बैठे केवल ज्ञान हो गया। मृगावती केवलज्ञानी बन गईं।

संचालक- अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रम

क्र.		पृष्ठ संख्या
1.	दुख का मूलः मोह (4) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	11
2.	गणधरवाद (लेखांक–36) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	14
3.	स्वर्णप्रभा (लेखांक–36) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	16
4.	प्रश्नोत्तरी	19
5.	श्रीसंघ अध्यक्ष की पाती (वाघजीभाई वोरा)	20
6.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	21
7.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	22
8.	चातुर्मास में होता आत्मा का विकास व ज्ञान का प्रकाश (मुनिश्री संयमरत्न विजयजी 'प्रवासी')	24
9.	चातुर्मास का महात्म्य (श्रीमती मंजू लोढ़ा)	26
10.	वर्षायोग एक संस्कृति (गणाचार्य श्री विरागसागरजी)	29
11.	चातुर्मास का संदेशः अप्पा सो परमप्पा (प्रकाश डी. गुंदेचा)	32
12.	तीर्थंकर श्री अजितनाथजी (मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	36
13.	गुरु जीवित जिनेश्वर है (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	39
14.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	41
15.	साधना आराधना का काल 'चातुर्मास' आचार्यश्री जयन्तजी के चरणरज कल्याणकारी (शांतिलाल सगरावत, मन्दसौर)	43
16.	परमहितकारिणी–गुरुसेवा (साध्वीश्री रुचिदर्शनाश्रीजी)	44
17.	सबसे बड़ी पूजा सद्भाव (श्रीमती ममता भारती)	46
18.	महिला शाश्वत	48
19.	स्वास्थ्य शाश्वत (अचलचन्द जैन)	50
20.	वर्षा ऋतु में आपका स्वास्थ (प. श्रीराम नारायणजी शास्त्री)	51
21.	बाल शाश्वत (संकलन–मुनिराज श्री तारकरत्न विजयजी)	55
22.	वास्तु शाश्वत	56
23.	माँ तो माँ होती है (एस.सी. कटारिया)	60
24.	वर्ग पहेली–49 (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाजी म.सा.)	61
25.	गुजराती संभाग	62–78
26.	कुमकुम सने पगलिये	79–97
27.	परिषद प्रांगण से	99
28.	श्रीसंघ सौरभ	101
29.	जैन विश्व	104
30.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	105–106

प्रवचन

दुःख का मूल : मोह (4)

(गतांक से आगे)

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक राष्ट्रसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

महानुभावों !

चरम तीर्थंकर प्रभु महावीर स्वामी अपने अन्तिम उपदेश का प्रारम्भ करते हुए शिष्यों से कह रहे हैं :-

संजोगा विप्पमुक्कस्स, अणगारस्स भिक्खुणो ।
विणयं पाउकरिस्सामि, आणुपुव्विं सुणेह मे ।।

संयोगों से मुक्त अनगार भिक्षु के लिए मैं विनय का स्वरूप प्रकट करने वाला हूँ । आप क्रमशः मेरी बातें सुनिये ।

आत्मा को अपने संयोग से कलुषित करने वाले दोष ये हैं-

1. क्रोध 2. मान 3. माया 4. लोभ 5. राग-मोह-ममता 6. विषय-काम-भोग 7. द्वेष-ईर्ष्या-मत्सर 8. प्रमाद 9. मन-वचन-काय के अशुभ योग और 10. अविरति ।

इनमें से क्रमशः क्रोध, मान, माया और लोभ-इन चार विषयों पर विस्तृत विचार किया जा चुका है । आज से हम राग-मोह-ममता पर विचार करेंगे ।

राग समस्त पापों का जन्मदाता है, इसीलिए वीतराग बनने की बात बार-बार कही जाती है । सभी अरिहन्त देव, तीर्थंकर , सभी ऋषि-महर्षि-महात्मा वीतराग होते हैं । गीता में स्थान-स्थान पर प्रसङ्गानुसार श्रीकृष्ण ने अर्जुन को वीतराग बनने का उपदेश दिया है ।

एक मनीषी के अनुसार देने वाला देव होता है और रखने (लेने) वाला राक्षस। देव बनने के लिए, देवत्व प्राप्त करने के लिए देने का, दान करने का अभ्यास जरूरी है । यही कारण है कि प्रव्रज्या अंगीकार करने से पहले लगातार नियमित रूप से प्रतिदिन वर्षभर तक तीर्थंकर परमात्मा धन का दान करते हैं । देने और लेने वाले में क्या अन्तर होता है ? यह जानने के लिए बादल का उदाहरण बहुत उपयोगी है । किसी आचार्य ने लिखा है -

किसिणिज्जन्ति लयन्ता, उदहिजलं जलहरा पयत्तेण ।
धवलीहुन्ति हु देन्ता, देन्त-लयन्तन्तरं पेच्छ ।।

सावधानीपूर्वक समुद्र का जल लेने वाले बादल काले हो जाते हैं, किन्तु वे ही जब क्रमशः जल का दान करने लगते हैं, तो सफेद हो जाते हैं । देने और लेने वाले के बीच यह जो अन्तर है, उसे देखो ।

दान करने पर धन के प्रति जो मन का राग है, उसका त्याग अपने आप होने लगता है । किरायेदार किराये पर लिए गए मकान की सजावट के लिए अपना धन खर्च नहीं करता । मकान में रंग-रोगन पर सुविधाजनक परिवर्तन पर खर्च करना मकान-मालिक का काम है, किरायेदार का नहीं । महापुरुष अपने शरीर को भी ऐसा ही किराये का एक मकान मानकर उस पर धन और समय खर्च नहीं करते । इस प्रकार वे शरीर के प्रति मोह का त्याग कर देते हैं। ऐसे मोह के त्यागी कभी पाप करने का विचार तक नहीं कर सकते ।

जीव का शरीर से सम्बन्ध है, इसलिए आहार आवश्यक होता है- शरीर को जीवित रखने के लिए। बुद्धिमान और मूर्ख में यह भी महत्त्वपूर्ण अन्तर है कि मूर्ख खाने के लिए जीता है और बुद्धिमान जीने के लिए खाता है । भोजन को जीवन का साधन बनाने वाला कभी स्वाद की परवाह नहीं करता । भोजन में स्वाद ढूँढने वाला तो भोज्य वस्तुओं के प्रति मोहित होता है । प्रतिमा के समक्ष उत्तमोत्तम भोज्य वस्तुएँ नैवेद्य पूजा के समय समर्पित करने वाला भक्त मन में ऐसी भावना करता है- 'हे प्रभो ! आपकी कृपा से इन भोज्य वस्तुओं के प्रति मेरी आसक्ति मिट जाय, स्वाद के प्रति विरक्ति पैदा हो जाय ।'

तौलते समय दुकानदार और ग्राहक दोनों का ध्यान डंडी की ओर होता है कि वह किसी भी तरफ झुकी न हो । ठीक उसी प्रकार मन भी किसी सांसारिक वस्तु की तरफ झुका न हो, ऐसा ध्यान रहना चाहिए । वीतराग का उपासक सदा ऐसा ध्यान रखता ही है ।

कुदेव, कुगुरु और कुधर्म से बचकर उपासक सुदेव, सुगुरु और सुधर्म की आराधना करता है । तराजू के काँटे की तरह गुरु मध्यस्थ होता है । एक ओर वह भक्तों को देव का स्वरूप दिखाता है, वहीं दूसरी ओर धर्म का आचरण भी सिखाता है । वह समझाता है कि वीतराग की उपासना के लिए किस प्रकार त्याग का राग भी आवश्यक होता है । मराठी में राग आला= गुस्सा आया, परन्तु संस्कृत-प्राकृत में राग का अर्थ ममत्व है । इसे ममता भी कहते हैं, जो शोक का कारण है । समता से सुख प्राप्त होता है और ममता से दुःख -

अवेहि विद्वन ! ममतैव मूलम्,
शुचां, सुखानां समतैव चेति ।।

हे विद्वन् ! सब प्रकार के शोकों का कारण ममता और सब प्रकार के सुखों का कारण समता को जानो ।

यों तो हजारों आदमी दुनिया में मरते रहते हैं, परन्तु हमें दुःख तभी होता है, जब उन मरने वालों में से अपना कोई कुटुम्बी हो, रिश्तेदार हो, मित्र हो या मिलने-जुलने वाला (पड़ौसी) हो । इससे स्पष्ट होता है कि जहाँ ममता है, वहीं दुःख है ।

किं दुःखमूलम् ? ममताभिधानम् ।।

दुःख का मूल क्या है ? जिसका नाम ममता है, वही ।

धन, पशु, पत्नी, मित्र और शरीर कोई भी मरने के बाद साथ नहीं आता, यह हम प्रत्यक्ष देखते हैं-

धनानि भूमौ पशवश्च गोष्ठे, कान्ता गृहद्वारि जनः श्मशाने ।
देहश्चितायां परलोकमार्गे, कर्मानुगो गच्छति जीव एक :।।

धन (जिसे पुराने जमाने में लोग गाड़ दिया करते थे, क्योंकि बैंकें नहीं होती थीं) जमीन में, पशु बाड़े में, पत्नी घर के दरवाजे तक, बन्धुजन श्मशान तक और शरीर चिता तक आकर छूट जाता है (मृत्यु होने पर इनमें से कोई साथ नहीं आता) परलोक में अपने शुभाशुभ कर्मों के साथ जीव को अकेले ही जाना पड़ता है ।

गोस्वामी सन्त तुलसीदासजी लिखते हैं-

सहसबाहु दसबदन आदि नृप, बचे न काल बली ते ।
हम-हम करिधन-धाम सँवारे, अन्त चले उठि रीते ।
मन पछितैहे अवसर बीते ।।

सहस्रबाहु रावण आदि बड़े-बड़े राजा भी बलवान् काल (मृत्यु) से अपने आपको नहीं बचा सके, 'हम-हम' करके धन और महलों का निर्माण किया , परन्तु अन्त में सब कुछ यहीं छोड़कर खाली हाथ परलोक की ओर चल दिये । हे मन ! यदि इन वस्तुओं के प्रति ममता का तूने त्याग नहीं किया तो अवसर (आयु) बीत जाने पर तू बुरी तरह पछताएगा।

ममत्त्वबन्धं च महद्भयावहम् ।।

अर्थात् ममता का बन्धन जीव के लिए महान भयंकर होता है ।

(क्रमशः)

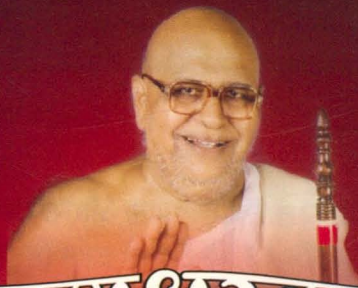

गणधरवाद

प्रवचनकार
सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

कार्मण शरीर की सिद्धि

अग्निभूति–आर्य ! माना कि सुख-दुःख का कोई अदृष्ट कारण भी है । लेकिन बाल शरीर देहान्तरपूर्वक है, आपके इस अनुमान से इतना ही सिद्ध होता है कि बाल शरीर देहान्तरपूर्वक है । अतः कार्मण शरीर के बदले बाल शरीर से पूर्व के शरीर अर्थात् पूर्वभवीय अतीत शरीर को ही उसका कारण मानना चाहिये ।

महावीर– यह तो तुम देखते हो कि अन्तराल गति में पूर्वभवीय दृश्यमान स्थूल अतीत शरीर का सर्वथा अभाव हो जाता है । अतः तत्पूर्वक बाल शरीर निष्पन्न न होने के कारण उस पूर्व भव के अतीत शरीर को बाल शरीर का कारण नहीं माना जा सकता और अन्तराल गति में पूर्वभवीय शरीर का सद्भाव इसलिए नहीं है कि मृत्यु के अनन्तर प्राप्य नवीन जन्म के प्रति गति करते समय जीव का पूर्व-भवीय शरीर तो छूट जाता है और नया शरीर अभी ग्रहण नहीं किया है । इस प्रकार अन्तराल गति में औदारिक आदि स्थूल शरीर से सर्वथा रहित होने से बाल शरीर को औदारिकादि पूर्वभवीय शरीर का कार्य नहीं कहा जा सकता है और न यह कहना शक्य है कि वह पूर्व भव के शरीरपूर्वक है । लेकिन जीव के यदि कोई शरीर ही न हो तो नियत गर्भदेश में वह जायेगा ही कैसे? इसलिए नियत देश की प्राप्ति और नये शरीर की रचना का कारणभूत कोई शरीर तो मानना ही चाहिये । लेकिन औदारिक शरीर को तो उसका कारण रूप में मानना चाहिये । जीव स्व स्वभावतः नियत देश को प्राप्त कर लेगा यह पक्ष युक्तियुक्त नहीं है । इसका स्पष्टीकरण यथास्थान आगे किया जायेगा ।

शास्त्रों में भी कहा है- मृत्युपरान्त जीव कार्मण योग से आहार ग्रहण करता है ।

अतः बाल शरीर को कार्मण शरीरपूर्वक मानना चाहिये।

चेतन की क्रिया द्वारा कर्म सिद्धि – कर्म साधक तीसरा अनुमान इस प्रकार है– दानादि क्रिया का कोई न कोई फल होना चाहिये, क्योंकि वह सचेतन व्यक्ति द्वारा की गई क्रिया है– कृषि आदि क्रिया की तरह। सचेतन पुरुष कृषि क्रिया करता है तो उसका धान्यादि फल उसे प्राप्त होता है। इसी प्रकार दानादि क्रिया भी सचेतन द्वारा की गयी है। अतः उसका कुछ न कुछ फल उसे प्राप्त होना चाहिये और उसका जो फल प्राप्त होता है, वही कर्म है।

महावीर – यह बात तो तुम स्वीकार करोगे ही कि बुद्धिमान चेतन जो भी क्रिया करता है, उसे फलवती मानकर ही करता है, लेकिन जब क्रिया का फल प्राप्त नहीं होता तो वहाँ उसका कारण अज्ञान अथवा सामग्री की विकलता–न्यूनता है। इसलिए चेतन द्वारा प्रारम्भ की गई क्रिया को निष्फल नहीं माना जा सकता और यदि वैसा हो तो ऐसी निष्फल क्रिया में सचेतन पुरुष प्रवृत्ति ही क्यों करेगा ? तथा जो दान आदि क्रिया भी यदि मनःशुद्धि पूर्वक नहीं की जाती है, तो उसका भी कोई फल नहीं मिलता है, ऐसा मैं भी मानता हूँ। अतएव मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि यदि सामग्री की पूर्णता हो, तो सचेतन द्वारा प्रारम्भ की गयी क्रिया निष्फल नहीं होती।

अग्निभूति – आपके कथनानुसार भले ही दानादि क्रिया का फल हो, परन्तु जैसे कृषि आदि क्रिया का दृष्ट फल धान्यादि है, वैसे ही दान आदि क्रिया का भी सभी को अनुभवसिद्ध मनःप्रसाद रूप दृष्ट फल ही मानना चाहिये, किन्तु कर्मरूप अदृष्ट फल नहीं। इस प्रकार आपका हेतु अभिप्रेत अदृष्ट फल नहीं। इस प्रकार आपका हेतु अभिप्रेत अदृष्ट कर्म के बदले दृष्ट फल को सिद्ध करने वाला होने से विरूद्ध हेत्वाभास ही है।

महावीर – यही तुम्हारी भूल है, क्योंकि मनःप्रसाद भी एक क्रिया है। इसलिए सचेतन की दूसरी क्रियाओं की तरह इसका भी फल होना चाहिये और इसका जो फल है, वह कर्म है। इस प्रकार मेरे इस कथन में किसी भी प्रकार का दोष नहीं है। सचेतन द्वारा प्रारंभ की गयी क्रिया फलवती होती है।

अग्निभूति – मनःप्रसाद का भी फल कर्म है, यह आप कैसे कहते हैं ?

महावीर – क्योंकि इस कर्म का कार्य सुख–दुःख फल अनुभव में आता है।

(क्रमशः)

लेखांक 36

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

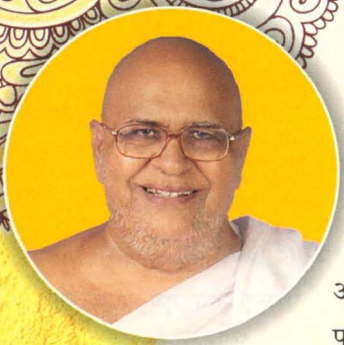

परिवार वाले तो फूलकुंवर का व्यवहार सहन कर लेते थे, किन्तु पड़ोसी कब तक सहन करते । परिणाम यह हुआ कि अब नित्य प्रति पड़ोसियों से झगड़ा होने लगा ।

परिवार वालों ने सोच-विचार कर निर्णय किया कि जहाँ तक हो सके फूलकुंवर से बातचीत ही नहीं की जावे । जब बात ही नहीं होगी तो झगड़ा भी नहीं होगा । अमरचंद ने अपने पड़ोसियों को भी विनयपूर्वक निवेदन किया कि कोई भी फूलकुंवर से बातचीत न करे । यदि वह स्वयं बोले तो भी उसकी बात का उत्तर संक्षेप में देकर वहाँ से एक ओर हट जावे । इस प्रकार यह प्रयास किया गया कि फूलकुंवर से झगड़ा न हो । किन्तु जो झगड़ा करने पर ही उतर आया हो, फिर उसका कोई उपचार नहीं होता है । जब सबने फूलकुंवर से बोलना बंद कर दिया तो उसने इसी बात को लेकर घर में कोहराम मचा दिया । वह स्वयं ही झगड़ा करने लगी । पड़ोसियों पर भी वाक बाणों से प्रहार करने लगी । जो थोड़ा भी विवेक रखते थे और फूलकुंवर के स्वभाव से परिचित थे, वे तो अपना घर का दरवाजा बंद कर लेते थे, किन्तु सभी एक समान नहीं होते। कुछ ऐसे भी थे, जो मुकाबले के लिये घर से निकलकर बाहर आ गए । इस प्रकार झगड़ा बढ़ता जाता । अमरचंद और उसके पुत्र जैसे-तैसे पड़ोसियों को समझा-बुझाकर झगड़ा समाप्त करते । एक तरफ वे झगड़ा समाप्त करते, तो दूसरी ओर फूलकुंवर कोई नया झगड़ा खड़ा कर देती। इस प्रकार फूलकुंवर के दुराग्रही, हठी स्वभाव के कारण पूरा परिवार परेशान हो रहा था । फूलकुंवर की वाणी भी कर्कश थी । उसने मीठा बोलना तो सीखा ही नहीं था । वह जब भी बोलती उसकी वाणी जहर ही उगलती थी । सेवक-सेविकाओं का हाल तो सबसे बुरा था । फूलकुंवर के कारण कुछ सेवक-सेविकायें तो काम छोड़कर

चले गये थे । अमरचंद ने नये सेवक रखे थे । दो-चार दिन में वे भी घबराकर काम छोड़कर चले गए । पड़ोसी मन ही मन कामना करते थे कि कब यह लड़की यहां से अन्यत्र जावे और कब वे झंझटों से मुक्त हों । अभी तक पड़ोसी ही ऐसा सोचते थे । अब तो परिवार के सदस्य भी उससे छुटकारे की सोचने लगे, किन्तु अभी उसकी वय विवाह योग्य नहीं हो पाई थी । फिर विवाह भी सरलता से होने वाला नहीं था । इसका कारण यह था कि आसपास के नगर ग्रामों में भी उसके कटु व्यवहार की बात फैलती जा रही थी ।

अमरचंद अपना अधिकांश समय ठाकुरजी की पूजा-भक्ति में व्यतीत करते थे । दिन या रात में वे प्रातः भजन गुनगुनाया करते थे । एक दिन वे अपने स्वभाव के अनुसार भजन गुनगुना रहे थे । भजन के बोल कुछ इस प्रकार थे-

जो रूठे उसको रूठन दे, तू मत रूठे मन बेटा ।

एक नारायण नहीं रूठे तो सबके काट लूं चोटी पटा ।।

जिस समय ये बोल अमरचंद के मुख से प्रस्फुटित हुए, उसी समय फूलकुंवर का वहाँ आना हुआ । उसने ये बोल सुन लिये । अपने स्वभावानुसार उसने इन बोलों का अर्थ उल्टा ही ग्रहण किया ।

उसने समझा - 'यदि ठाकुरजी प्रसन्न हों तो मैं सबकी चोटी काट लूँ । कोई भी रूठे, इसकी मुझे चिंता नहीं है, बस ठाकुरजी की कृपा बनी रहनी चाहिए ।' अब तो फूलकुंवर के व्यवहार और वाणी की कटुता और भी बढ़ने लगी । आयु के साथ-साथ इस व्यवहार में भी अभिवृद्धि होती गई । अब वह सबकी आँख का काँटा बन चुकी थी । उसकी आँख की त्यौरियाँ सदा चढ़ी की चढ़ी रहती । कडुवास से भरे बोल उसके मुख से निकलते रहते । माता-पिता मोह-ममता के कारण उसके साथ कठोर व्यवहार नहीं कर पाते । फिर सोचते - 'एक न एक दिन इसे दूसरे घर जाना ही है । वहाँ सब कुछ ठीक हो जाएगा । माता-पिता के सहनशील व्यवहार के कारण फूलकुंवर का पारा और भी चढ़ता गया ।

प्रभु भक्ति से तो विनय, धैर्य, क्षमा, सहनशीलता, मृदुता, मित्तभाषिता,

दया, करुणा जैसे सद्गुणों का आविर्भाव होता है, क्रोध कटुता का विनाश होता है । किन्तु फूलकुंवर पर ठाकुरजी की भक्ति का उल्टा ही रंग चढ़ रहा था। उसमें गुणों के स्थान पर अवगुणों की अभिवृद्धि होती जा रही थी । उसके खिलते रूप और बढ़ते यौवन के विपरीत उसका स्वभाव था । जितनी सुन्दर वह थी, उतना ही असुन्दर - कटु, उसका व्यवहार था ।

साहित्य समीक्षा

पुस्तक का नाम	:	पीयुष प्रभा (गुजराती)
लेखक	:	गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.
प्रकाशक	:	श्री राज राजेन्द्र प्रकाशक ट्रस्ट, भाषा-गुजराती
प्राप्ति स्थान	:	श्री राज राजेन्द्र जैन तीर्थ दर्शन, (जयन्तसेन म्युजियम) श्री मोहनखेड़ा तीर्थ, राजगढ़ (म.प्र.)
मूल्य	:	
मुद्रक	:	भाग्योदय प्रिन्टर्स (डीसा-अहमदाबाद), पृष्ठ संख्या-92 (कवर सहित)
छपाई-सफाई	:	ठीक

विक्रम संवत 2072 में गच्छाधिपति जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने प्रथम पुस्तक की रचना की थी जिसे उनके गुरुदेवश्री ने प्रोत्साहन स्वरूप प्रकाशित करवाई थी । इससे उनका उत्साह व उमंग वृद्धिगत हुए थे । वह प्रथम पुस्तक का प्रथम संस्मरण था, इस पुस्तक के साथ में प्रथम पुस्तक का द्वितीय संस्मरण पाठकों के मध्य लाया गया है। पुस्तक में जीवन के विभिन्न विषयों पर महापुरूषों के जीवन अध्याओं का लेखन किया गया है । ऐसा लेखन जीवन पवित्रता की दिशा में प्रेरणादायी है । पुस्तक की प्रभावना करना श्रुत की सेवा है ।

सुरेन्द्र लोढ़ा

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

कषाय के प्रकार

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. | पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. कषाय कितने प्रकार के हैं ?

उ. सोलह - 4 अनन्तानुबन्धी क्रोध, मान, माया, लोभ, 4 अप्रत्याख्यान क्रोध, मान, माया, लोभ, 4 प्रत्याख्यान, क्रोध, मान, माया, लोभ, 4 सज्जवलन क्रोध, मान, माया, लोभ - 16।

प्र. अनन्तानुबन्दी चौकड़ी (क्रोध, मान, माया, लोभ) किसे कहते हैं ?

उ. जो जीव के सम्यक्त्व को नष्ट करके अनन्तकाल तक संसार में परिभ्रमण करावे उसे अनन्तानुबन्धी चौकड़ी कहते हैं।

प्र. अप्रत्याख्यान चौकड़ी किसे कहते हैं?

उ. जो कषाय आत्मा के देशविरति गुण (श्रावकपन) का घात करे उसे अप्रत्याख्यान चौकड़ी कहते हैं।

प्र. प्रत्याख्यानावरण चौकड़ी किसे कहते हैं ?

उ. जिस कषाय से आत्मा का सर्वविरति चारित्र गुण नष्ट हो उसे प्रत्याख्यानावरण चौकड़ी कहते हैं।

प्र. संज्वलन चौकड़ी किसे कहते हैं ?

उ. जिस चौकड़ी से आत्मा को यथाख्यात चारित्र की प्राप्ति न हो सके उसे संज्वलन की चौकड़ी कहते हैं।

प्र. नोकषाय किसको कहते हैं।

उ. जो कषायों का प्रेरक हो उसे नोकषाय कहते हैं।

प्र. नोकषाय के कितने भेद हैं ?

उ. नोकषाय के नौ भेद हैं - 1. हास्य, 2. रति , 3. अरति , 4. भय, 5. शोक 6. जुगुप्सा, 7. स्त्रीवेद, 8. पुरुषवेद, 9. नपुंसकवेद।

प्र. हास्य नोकषाय किसे कहते हैं ?

उ. जिसके उदय से हँसी आवे उसे हास्य कहते हैं।

प्र. रति नो कषाय किसे कहते हैं ?

उ. जिसके उदय से विषयों में उत्सुकता हो उसे रति कहते हैं।

प्र. शोक नोकषाय किसे कहते हैं ?

उ. जिसके उदय से शोक हो उसे शोक नोकषाय कहते हैं।

प्र. भय नोकषाय किसे कहते हैं ?

उ. जिसके उदय से भय हो उसे भय नोकषाय कहते हैं।

प्र. जुगुप्सा नोकषाय किसे कहते हैं ?

उ. जिसके उदय से दूसरों की निंदा, घृणा करने की वृत्ति हो उसे जुगुप्सा कहते हैं।

प्र. मिश्र मोहनीय किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से जीव की मिश्र रुचि हो अर्थात जैसे दही और गुड़ के मिश्रित होने से न ही दही का स्वाद आता है न ही पूरा गुड़ का, वैसे न पूरी तत्व रुचि हो और न पूरी अतत्वरुचि हो उसे मिश्र मोहनीय कहते हैं।

रतलाम-प्रवेश ऐतिहासिक बनाएं

वाघजीभाई वोरा
(राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्रीसंघ)

आगामी दस जुलाई त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ का त्यौहार है । इस दिन शुभ प्रभात में पूज्य सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत जैनाचार्य वांगमय वैभव युग प्रभाव जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मासार्थ मध्यप्रदेश (मालवा) के रतलाम नगर में प्रवेश होने जा रहा है । रतलाम का त्रिस्तुतिक समाज के इतिहास में जो गौरवशाली स्थान है, उसे दृष्टिगत कर इस चातुर्मास का अद्वितीय महत्व स्थापित हो रहा है । वैसे रतलाम श्रीसंघ की वर्षों से पूज्य गुरुदेवश्री के चातुर्मास के लिये विनती थी । अ.भा. श्री सौधर्मबृहत्पोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ के राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री चेतन्यजी काश्यप यह लाभ लेने हेतु रतलाम श्रीसंघ की विनती को वर्षों से प्रस्तुत करते रहे हैं । इस वर्ष पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति ने अपनी उदार स्वीकृति प्रदान कर श्री चेतन्यजी काश्यप को सम्पूर्ण चातुर्मास के लाभार्थी बनने का लाभ प्रदान किया है । श्री काश्यपजी को हार्दिक बधाई । रतलाम का चातुर्मास निश्चित रूप से सम्पूर्ण मालवा में आलोक प्रसारित करने में सफल रहेगा ।

रतलाम ने दादा गुरुदेव योगीराज श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. की त्रिस्तुतिक क्रांति का अग्रणीय सम्पोषक पाने की भूमिका का निर्वाह किया है । अभिधान राजेन्द्र कोष जैसे महत्तर साहित्य को मुद्रण के द्वारा विश्व के पटल पर प्रस्तुत करने का श्रेय रतलाम श्रीसंघ को ही है । रतलाम श्रीसंघ के दानवीर उदार महानुभावों ने दादा गुरुदेव के चातुर्मासों में पहुंच कर धर्मप्रभावना को बहुमुखी बनाने में योगदान दिया है । दादा गुरुदेव की पूर्ण कृपा रतलाम श्रीसंघ पर रही । जैनाचार्य श्रीमद् विजय यतीन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. ने पीताम्बर विजेता का गौरव रतलाम नगर में ही अर्जित कर दादा गुरुदेव की आध्यात्मिक अवधारणा का मस्तक गौरवशाली बनाया था ।

रतलाम हम सभी के लिये तीर्थ है तथा आगामी दस जुलाई त्यौहार । सम्पूर्ण त्रिस्तुतिक समाज का राष्ट्रीय स्तर पर यह कर्तव्य है कि दस जुलाई को रतलाम चातुर्मास प्रवेश को शानदार बनाने के लिये सभी अधिकाधिक संख्या में रतलाम पधारें । राष्ट्रसंत जैनाचार्य सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास प्रवेश हम सभी के भक्तिभावपूर्वक समर्पण से स्वर्ण अध्याय बनने जा रहा है । जय जिनेन्द्र ! जय राजेन्द्र ! जय जयंत !

ज्ञानपीठ की परीक्षाओं में बैठिये

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

सुविशाल गच्छाधिपति जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा संस्थापित श्री यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ की परीक्षा इस वर्ष 31 जुलाई रविवार घोषित हुई है। ज्ञानपीठ के समस्त परीक्षा केन्द्रों पर दोपहर 1 से 4 बजे तक परीक्षाएं होंगी। हिन्दी भाषी परीक्षा केन्द्रों पर सभी कक्षाओं याने कक्षा–एक उदय से लेकर दो–इष्ट, तीन–वरिष्ट, चार–ज्येष्ठ तथा पांच–श्रेष्ठ की परीक्षाएं लिखित ही होंगी। पूर्व में मंदसौर ज्ञानपीठ मुख्यालय से प्रसारित परिपत्र में कक्षा एक व दो की मुखाग्र परीक्षा लिये जाने की सूचना की गई थी, उसमें परिवर्तन कर पूर्ववत स्थिति स्थापित की गई है याने हिन्दी भाषा परीक्षा केन्द्रों पर पांचों कक्षाओं की लिखित परीक्षा होगी। इस परीक्षा का आधार पाठ्यक्रम की नवीन पुस्तक होगी। इस वर्ष पाठ्य पुस्तक में संशोधन किया गया है। यह पाठ्य पुस्तक हिन्दी तथा इसका अनुवाद गुजराती में इस प्रकार दोनों भाषाओं में उपलब्ध है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि जैनाचार्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा अपने उपदेश से ईश्वी सन 1992 में जावरा चातुर्मास में श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ की धार्मिक परीक्षाएं सम्पन्न करवाने के लिये स्थापना की गई थी। तब से यह देशभर में प्रतिवर्ष व्यवस्थित रूप से परीक्षाओं का संचालन कर रहा है। अभी तक हजारों छात्र इन परीक्षाओं में उत्तीर्णता प्राप्त कर अपने धार्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि कर चुके हैं। इन सभी को बहुरंगी आकर्षक प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया जाता है। प्रथम श्रेणी में उत्तीण छात्रों को नकद पुरस्कार भी दिया जाता है।

इस वर्ष से छात्रों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से युग प्रभावक जैनाचार्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा व शुभाशीर्वाद से सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना प्रारंभ की जा रही है। इसे तीन वर्ष तक निरंतर रखने का लाभ अपने आर्थिक योगदान से पू. मातुश्री विजयाबेन बचुभाई चीमनलाल धरू परिवार (पेपराल–थराद) ने लिया है। इसके अनुसार पांचों कक्षाओं की परीक्षा में अस्सी प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले प्रतिभागियों को क्रमशः कक्षाओं में रु. 150, रु. 200, रु.250, रु. 500 तथा रु. 1000/– तक का पारितोषिक दिया जायेगा।

आशा है, परीक्षार्थीगण इसका अधिक से अधिक लाभ उठाएंगे। जय हिन्द ! जय जिनेन्द्र ! जय राजेन्द्र ! जय जयंत !

संपादकीय

गुजरात में जैनों के अल्पसंख्यक होने की घोषणा

अन्ततः गुजरात राज्य सरकार ने अपने राज्य में जैनों को अल्पसंख्यक का दर्जा दे दिया। यह मांग वर्षों से यहाँ चल रही थी। राज्य शासन बार-बार आश्वासन देता रहा लेकिन घोषणा विलम्बित होती रही। गुजरात की राजधानी में इस मांग को लेकर जैन समाज द्वारा एक बड़ा प्रदर्शन भी आयोजित किया गया था। सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री विजयजी रूपाणी ने विगत महिनों जैनों को अल्पसंख्यक करार दिये जाने का निर्णय शीघ्र किये जाने का संकेत दिया था। जब वे राज्य मंत्रिमण्डल में थे तब भी उनने ऐसा आश्वासन दिया था लेकिन घोषणा किसी न किसी बहाने टलती गई। लगता है कि इस घोषणा के मार्ग में उपस्थित अवरोधों को दूर करने में श्री विजयजी रूपाणी का अथक परिश्रम रहा जो स्वयं जैन हैं। इसके लिये उन्हें दिल्ली स्तर तक के अपने नेताओं को सहमत करना पड़ा होगा। मुख्यमंत्री श्रीमती आनन्दी बहिन पटेल को तो पूरे विश्वास में लेना ही था। जो भी हो, गुजरात जैनों के लिये इस मसले पर कसौटी बन गया था। गुजरात से बाहर रह रहे जैनों को भी भरोसा नहीं हो रहा था कि वर्तमान शासन किसी उदाहरण का परिचय देने की मनस्थिति में है। फिर भी, 'देर आयद दुरुस्त आयद' उक्त को चारितार्थ करते हुए गुजरात में जैनों को सफलता प्राप्त हो गई है। इससे सम्पूर्ण जैन समाज में हर्ष की लहर व्याप्त है। मुख्यमंत्री श्रीमती आनन्दीबेन पटेल द्वारा कदम उठाये जाने का स्वागत किया जा रहा है।

सुरेन्द्र लोढा
सम्पादक

गुजरात में जनगणना के हिसाब से जैनों की संख्या लगभग पांच लाख अस्सी

हजार है । जैन समाज में धनाड्य परिवारों की संख्या का प्रतिशत अन्य कई समाजों की तुलना में अधिक हो सकता है लेकिन कम से कम तीस प्रतिशत जैन ऐसे हैं जिन्हें गरीबों की श्रेणी में रखा जा सकता है तथा इन्हें हर प्रकार की आर्थिक सहायता की आवश्यकता है । इनमें से कई के लिये स्वयं जैन समाज ने कल्याणकारी योजनाएँ संचालित कर रखी हैं, इनके मासिक कूपन भी बना रखे हैं । इन्हें जैन समाज अनाज, पाठ्य सामग्री आदि उपलब्ध कराती है । अहमदाबाद में मकान की योजना भी कार्यान्वित हुई है । इन परिवारों के सामने अपने बच्चों को महंगी शिक्षा दिलाना एक समस्या है । ऐसे परिवार शिक्षा तथा स्वास्थ्य की दिशा में अपने अस्तित्व के लिये संघर्षरत् हैं ।

जैन समाज की अपने आपको अल्पसंख्यक घोषित किये जाने की मांग को अन्यों द्वारा अलगाव से जोड़ा जाना दुर्भाग्यपूर्ण है । श्रमण संस्कृति ने न तो विदेश में जन्म लिया है, न ही कहीं बाहर से यह यहाँ आई है । इस कालचक्र में प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी के समय से इसका सूत्रपात है । इसी श्रेणी में तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी चरण (याने चौवीसवें) तीर्थंकर हुए । उनके ढ़ाई सौ वर्ष पूर्व तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ का इस संस्कृति में आगमन हुआ । भगवान श्री कृष्ण के युग में उनके चचेरे भाई श्री नेमीनाथजी 22 वें तीर्थंकर हुए । जो संस्कृति सहस्त्रों वर्षों से यहीं के जनमानस के लिये आराधना का माध्यम बनी हुई है तथा जिसके सूत्रपात का बिन्दु इसी धरती पर है, उसके लिये देश के साथ वह एक है । भारत नाम भी तीर्थंकर श्री ऋषभदेवजी के पुत्र भरत पर है । इन सभी बातों का उल्लेख करने पर यह प्रश्न उछाला जाता है कि फिर अपने ही देश में अल्पसंख्यक घोषित होने का तात्पर्य क्या है ? स्पष्टतः भारत सरकार ने धार्मिक दृष्टि से अल्पसंख्यक वर्ग को जो शिक्षा प्रसार की सुविधा दे रखी है, जैन समाज उसकी पात्रता के लिये इस तरह प्रयत्नशील है । वैसे सिख तथा बौद्ध भी इसी देश के धर्म हैं, संख्यात्मक न्यूनता के कारण उन्हें अल्पसंख्यक घोषित किया हुआ है । जैन समाज भी अपनी आर्थिक तथा शैक्षिक समुन्नति के अवसर की चाह में है । इस अवसर के लिये यह एक प्रक्रिया है ।

देश के अधिकांश प्रदेशों में तथा राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक घोषित होने के पश्चात् जैन समाज को अल्पसंख्यक वर्ग को प्राप्त होने वाली सुविधाओं का अध्ययन करना चाहिए तथा उनकी प्राप्ति के सार्थक प्रयत्न करने में जुटना चाहिये ।

चातुर्मास में होता आत्मा का विकास व ज्ञान का प्रकाश

(मुनि श्री संयमरत्नविजयजी 'प्रवासी')

चातुर्मास में होते हैं, अपने शुभाशुभ कर्मों का नाश
चातुर्मास याने आत्मगुण, स्वगुण एवं सद्गुणों का विकास
चातुर्मास में होता है, अज्ञान रूपी अंधकार का विनाश
चातुर्मास याने हमारे अंतर में ज्ञान की ज्योति का प्रकाश
चातुर्मास में होता है दुर्गुणों, अवगुणों एवं बुराईयों का विनाश
चातुर्मास याने किए हुए कुकर्मों व पापों का पर्दाफाश
चातुर्मास में होता है, जीवन का व्यक्तित्व विकास
चातुर्मास याने सतत् आत्मरमण एवं आत्मा में वास
चातुर्मास में पूर्ण होती है, हमारी अंतर अभिलाष
चातुर्मास याने देव, गुरु, धर्म में हमारा पूर्ण विश्वास
चातुर्मास में ही पा सकते हैं, परमात्मा के निकट निवास
चातुर्मास याने अंतर मन में दर्शन, ज्ञान, चारित्र की सुवास
चातुर्मास में कर सकते हैं, तप-त्याग-ज्ञान-ध्यान की साधना
चातुर्मास याने श्रद्धा-भक्तिमय आराधना उपासना
चातुर्मास आत्मा से परमात्मा की ओर जाने के लिए
चातुर्मास वासना से उपासना की ओर जाने के लिए
चातुर्मास भोग से योग की ओर जाने के लिए
चातुर्मास अहं से अर्हं की ओर जाने के लिए
चातुर्मास हिंसा से अहिंसा की ओर जाने के लिए
चातुर्मास प्रदर्शन से दर्शन की ओर जाने के लिए
चातुर्मास स्वाध्याय, साहित्य-सृजन के लिए
चातुर्मास जैन शासन की पुण्य प्रभावना के लिए
चातुर्मास एकान्त की पावन साधना, आराधना के लिए
चातुर्मास राग से वैराग व वीतराग की ओर जाने के लिए

चिंतन की चांदनी -4

* दुःख के समय अपने कर्मों को दोष देनेवाला और सुख के दिनों में देव-गुरु की कृपा को आगे करने वाला व्यक्ति कभी भी असमाधि का भोग नहीं बनता। – आचार्य जयन्तसेनसूरि

* लडकपन जिंदगानी की सवेर है, जवानी जिंदगी की दोपहर है।
बुढ़ापा शाम है प्रभु को याद कर, आयेगी कब मौत की रात किसी को क्या खबर ।।
– डॉ. मुनि सिद्धरत्नविजय

* जिसे भविष्य सुधारने की इच्छा है, वे सुकृति का एक भी अवसर न खोयें।
– मुनि अपूर्वरत्नविजय

* हर भौतिक सुख पराधीन है, भौतिक सुख विनाशी है, भौतिक सुख भय से युक्त है इसलिए उसका भरोसा नहीं करना चाहिए।
– मुनि चारित्ररत्नविजय

* गुरु वो ही तय कर सकता है जो लघु बनता है, लघु बने बिना कभी गुरु नहीं बन सकते।
– मुनि निपुणरत्नविजय

* धर्म करने में अगर उल्लास नहीं आता तो पाप करते वक्त कभी राग मत करो। मुक्ति जल्द हो जायेगी जिसे भविष्य सुधारने की इच्छा है, वो सुकृति का एक भी अवसर न खोयें।
– मुनि अपूर्वरत्नविजय

* शान का उपयोग होना चाहिए, जो ज्ञान का उपयोग नहीं करता उसकी प्रगति मंद हो जाती है। – मुनि प्रत्यक्षरत्नविजय

* मिथ्याज्ञान का आदर करने से भयंकर ज्ञानावरणीय कर्म बंधता है, इसलिए मिथ्याज्ञान की अनुमोदना से बधना चाहिए। – मुनि जिनागमरत्नविजय

* पवित्र महापुरूष के पवित्र मुख से सुने हुए पवित्र बंधन पूर्ण जीवन पवित्र बनाता है।
– मुनि पवित्ररत्नविजय

* जो शान आत्मा के गुणों को जलावा है वो मिथ्याज्ञान जीवन को दूर्गति की और धकेलता है।
– मुनि उपयोगरत्नविजय

चातुर्मास का महात्म्य

(श्रीमती मंजू लोढ़ा)

एक बार बादशाह अकबर ने दरबार में दरबारियों से एक सवाल किया- 'बारह में से चार गए तो कितने बचे ?' बीरबल को छोड़कर सबने कहा 'हुजूर आठ बचे।' बादशाह ने बीरबर की ओर देखा, बीरबल बोला, 'जहाँपनाह शून्य बचा।' अकबर ने पूछा- 'कैसे' बीरबल ने उत्तर दिया अगर बारह में से वर्षा ऋतु के चार महीने यूं ही चले गए तो शून्य ही बचेगा। बारिश के बिना धरती पर त्राहि-त्राहि मच जाएगी न फसल पैदा होगी, न जीवनयापन ही हो पाएगा । 26 नक्षत्रों में वर्षाकाल के 10 नक्षत्र और 12 महीने में चातुर्मास के चार महीने ऋतुचक्र की धूरी हैं । सृष्टि के लिए जीवनदायी हैं । वर्षावास का यही काल धर्माराधना के लिए ही सर्वोत्तम माना गया है ।

अब इसे आध्यात्मिक दृष्टि से देखें । चातुर्मास में साधु-संत एक जगह रहकर धर्म की देशना देते हैं, मनुष्य को धर्म की उचित राह दिखाते हैं, मुक्ति का मार्ग बतलाते हैं । हमारे अधिकतर तीज-त्यौहार राखी से लेकर दीपावली तक हम इन्हीं दिनों में मनाते हैं । जैनों का सबसे बड़ा पर्व पर्युषण महापर्व एवं संवत्सरी यानि समापन दिवस भी हम चातुर्मास के दौरान ही मनाते हैं । चातुर्मास या वर्षावास या वासावास, श्रावण-भादो, आसोज और कार्तिक । सभी धर्मों में इन चार महीनों को चातुर्मास कहा गया है । इस महीनों में साधु-साध्वी, ऋषि-मुनि, श्रावक-श्राविका एक ही जगह पर निवास करते हैं, 'अहिंसा परमो धर्म' का पालन करने वाले महानुभाव वर्षाकाल के दौरान विहार नहीं करते, एक से दूसरी जगह पर नहीं जाते । (क्योंकि इस काल में छोटे-छोटे जीवों की बहुत उत्पत्ति होती है विहार करने पर इनकी हिंसा होने का डर रहता है।) एक जगह रहकर धर्म की आराधना करते हैं, लोगों को आत्मिक ज्ञान सिखाते हैं, धार्मिक शिविर लगाते हैं, जिसका लाभ मानव जाति को प्राप्त होता है । यूं तो जिस तरह नदी निरंतर बहती रहती है, साधु-संत भी निरंतर एक जगह से दूसरी जगह चलते रहते हैं, लेकिन प्राणियों को अभयदान मिले, और लोगों में धर्म के संस्कार पनपें, वह चातुर्मास के दौरान एक जगह वास करते हैं और संयम की शिक्षा देते हैं ।

वैदिक और बौद्ध भिक्षु भी किसी समय चार महीनों तक एक जगह वास करते थे,

पर आजकल अधिकतर संत-महात्मा दो महीने ही एक जगह ठहरते हैं। जैन परंपरा में अब भी चार महीनों के चातुर्मास की परंपरा अक्षुण्य चल रही है। आषाढ़ी चौदस से कार्तिक चौदस तक पाद विहारी जैन साधु-साध्वी वृंद एक ही स्थान पर निवास करते हैं। जैन श्रमणों के लिए नवकल्पी विहार आगमों में बतलाया गया है। (मृगसर से आषाढ़ मास तक 8 महीने एक-एक मास कल्प तथा श्रावण के कार्तिक मास तक चातुर्मास का एक कल्प।)

वैदिक ग्रंथों में वशिष्ठ मुनि का कथन है कि चौमासे के दौरान चार महीने विष्णु भगवान समुद्र में जाकर शयन करते हैं। इसलिए यह चार महीने योग, ध्यान, धर्मश्रवण, भागवत पाठ, रामायण पाठ व जप-तप में बिताना चाहिए। इन चार महीनों में विवाह-शादी, गृह निर्माण या कोई भी काम नहीं करना चाहिए। यात्रा नहीं करनी चाहिए। रात्रि भोजन का त्याग करना चाहिए। माना जाता हैं कि इन महीनों में सभी देवता शयन करते हैं। इस सोने का अर्थ यही है कि मनुष्य अपनी बाहरी प्रवृत्तियों को थाम ले, संकुचित कर ले तथा आंतरिक ऊर्जा का विकास करे, आत्मा के उत्थान हेतु कार्य करे और अंतर्मुखी बने। आंतरिक जागरण ही सर्वोत्तम जागरण है, क्योंकि वही जीवात्मा को परमात्मा से मिलाने की राह है और जब देवता सोते हैं तो हमारी रक्षा के लिए हमें सहकार्यों में लगे रहना चाहिए। जप-तप साधना और सद्वृत्तियां ही वह मार्ग है, जिसमें हम स्वयं ही रक्षा कर सकते हैं। भगवान नेमिनाथ के श्रीमुख से श्रीकृष्णजी ने तथा आचार्य हेमचंद्रसूरिजी के मुख से राजा कुमारपाल ने जब चातुर्मास की व्याख्या सुनी, तब उन्होंने भी जीवों की रक्षा की खातिर चार मास तक एक ही स्थान पर रहने का नियम लिया। चातुर्मास में स्थिर रहने का नियम प्राकृतिक पर्यावरण तथा आरोग्य की दृष्टि से भी बड़ा महत्वपूर्ण है। क्योंकि लगातार वर्षा होने से पानी में असंख्य जीवों की उत्पत्ति होती है, मच्छर के प्रकोप से मलेरिया डेंगू आदि प्रकार का बुखार होता है, शरीर में दर्द, जोड़ों में जकड़न होने लगती है। खाद्य वस्तुएं शीघ्र ही खराब होने लगती हैं। प्रवास के दौरान कहीं पेड़ गिर जाए, पुल टूट जाए, बाढ़ आ जाए तो हम रास्ते में ही अटक जाते हैं। इसलिए हमें एक जगह स्थिर रहने की सीख दी जाती है। श्रावण-भाद्रपद ये दो माह तप के कहलाते हैं। इन दिनों में जितनी तपस्या होती है पूरे साल नहीं होती। यह माह तपस्या के लिए अत्यंत अनुकूल है, क्योंकि वर्षा की वजह से न ज्यादा भूख लगती है न प्यास।

प्राचीन धर्मग्रंथों में आचार्य भगवंतों ने धर्म-साधना के लिए माह की तिथियों को तीन भागों में बांटा है।

छह चरित्र तिथियां : दो अष्टमी, दो चौदस, अमावस और पूनम यह छह चरित्र तिथियाँ हैं । इन पर्व तिथियों में उपवास, पौषध, दया, तप आदि धार्मिक कार्य करने चाहिए।

छह ज्ञान तिथियां : दो दूज, दो पंचम, दो एकादशी यह छह तिथियां ज्ञान तिथियां कहलाती हैं । इनमें ज्ञान, स्वाध्याय आगम श्रवण आदि करने चाहिए ।

अठारह दर्शन तिथियां : दो एकम, दो तीज, दो चौथ, दो छठ, दो सप्तम, दो नवमी, दो दसमी, दो बारस, दो तेरस यह सभी तिथियाँ दर्शन तिथियाँ कहलाती हैं । इन तिथियों में देव-गुरु वंदन आदि सम्यकत्व की शुद्धि और शासन प्रभावन के कार्य करने चाहिए ।

इसका यह अर्थ नहीं है कि तप किया तो सम्यकत्व शुद्धि का आचरण उपेक्षित कर देना चाहिए, यह वर्गीकरण तो एक राह है, गाईड लाइन है जिसमें हम दिन में कम से कम एक साधना, एक आराधना तो करें । चातुर्मास में व्रत और प्रतिक्रमण पर विशेष जोर दिया जाता है ताकि हम दिन भर में हुए अपने पापों का प्रायश्चित कर सकें । श्रावक के बारह नियमों का पालन करना चाहिए । नियम से ही साधना प्रारंभ होती है। नियम से आसक्ति कम होती है । पाप कर्म कम करते हैं और पुण्योदय बढ़ते हैं ।

आइए इस चातुर्मास के दौरान हम यह नियम लें कि कम से कम प्रवास करेंगे, रात्रि भोजन का त्याग करेंगे। जीवों की विराधना से बचेंगे । संतों के मुख से संतवाणी सुनेंगे और सत्संग का लाभ उठाएंगे । तप-जप और धर्माराधना में स्वयं को लीन करेंगे, इस मानवीय जीवन को सफल बनाएंगे ।

'दुर्लभ मानव जीवन, मिले न बारंबार,
पत्ता टूटा वृक्ष का, लगे न फिर से डार।'

किस कर्म के क्षय से कौन-सा गुण प्रकट हो

ज्ञानावरणीय कर्म के क्षय से	केवलज्ञान
दर्शनावरणीय कर्म के क्षय से	केवलदर्शन
मोहनीय कर्म के क्षय से	क्षायिक समकित
वेदनीय कर्म के क्षय से	अव्याबाध सुख
आयुष्य कर्म के क्षय से	अटल अवगाहना
नाम कर्म के क्षय से	अमूर्तत्व (अरूपीता)
गोत्र कर्म के क्षय से	अगुरुलघुत्व
अंतराय कर्म के क्षय से	अनन्तवीर्य

अतिथि रचना

वर्षायोग एक संस्कृति

(गणाचार्य श्री विरागसागरजी)

वर्षायोग की प्राचीनता – वर्षायोग का सर्वाधिक प्राचीन उल्लेख दिगम्बर जैन ग्रन्थों में मिलता है, मूलाचार ग्रन्थ में मुनियों के दस स्थिति कल्पों में पद्य नामक कल्प वर्षायोग का विधान है, वहाँ पर कहा है कि मुनिजनों को वर्षायोग नियमित करना चाहिए । इसी प्रकार अन्य ग्रन्थों में भी वर्षायोग का विधान है । बौद्ध के चातुर्मास का तथा हिन्दु ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण आदि में श्री रामचन्द्रजी के चातुर्मास का उल्लेख है, चातुर्मास की परम्परा आज भी निर्वाधिक रूप से चलती आ रही है । दिगम्बर जैन संत आज भी नियम से चातुर्मास करते हैं ।

वर्षायोग का अर्थ :– वर्षायोग दो शब्दों से मिलकर बना है, वर्षा यानि वर्षात्, योग यानि धारण करने वाली, योग शब्द अनेक अर्थों में प्रचलित है– यथा

1. योगशास्त्र में योग का अर्थ मिलना अर्थात् आत्मा से जुड़ने को योग कहा जाता है ।

2. गणित शास्त्र में योग (जैसे –2+2 का योग 4) शब्द का अर्थ वृद्धि लिया गया है ।

3. जैन ग्रन्थों में योग शब्द का अर्थ आत्म प्रदेशों के परिस्पंदन में कारण भूत मन, वचन, काय को कहा है अथवा इन तीनों को स्थिर रखने को योग कहा है । यहाँ यही अर्थ अनुग्रहीत है ।

4. जैन ग्रन्थों में आध्यात्मिक साधना, आराधना, बाह्याभ्यंतर तप, निश्चय व्यवहार परक पंचाचार, ध्यान को भी योग कहा गया है । प्राचीन काल में मुनिगण वर्षाकाल में किसी वृक्ष के नीचे 4 माह तक स्थिर और अखण्ड साधना करते थे किन्तु वर्तमान काल में हीन संहनन (कम शक्ति) होने के कारण किसी तीर्थक्षेत्र, ग्राम, नगर, मंदिर या धर्मशाला आदि में रहकर यथा शक्ति साधना करते हैं । इसीलिए वर्षायोग या वर्षावास यह सार्थक संज्ञा है ।

चातुर्मास :– श्रावण, भाद्रपद, आश्विन और कार्तिक इन चार माह में वर्षायोग होने से इसे चातुर्मास भी कहते हैं, इससे अर्थ स्पष्ट होता जाता है कि वर्षायोग का संबंध मात्र वर्षा ऋतु के दो माह से नहीं अपितु वर्षाकाल के चार माह से है । अतः चातुर्मास यह भी सार्थक संज्ञा है ।

वर्षायोग क्यों :– वर्षाकाल में निरंतर पानी बरसता है जिससे नदी नालों में बाढ़ आती है, मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं । अनंत

जीवों वाली साधारण वनस्पति अर्थात् हरी घास उत्पन्न हो जाती हैं। बिलों में पानी भर जाने से बहुत से जीव जन्तु बिलों से बाहर आ जाते हैं। जिससे उन सबकी रक्षा बहुत कठिन हो जाती है। अतः अहिंसा व्रत के धारी साधुजन अपने प्राणी संयम की रक्षा हेतु चातुर्मास करते हैं। अर्थात् चार माह एक ही स्थान पर ठहरते हैं।

वर्षायोग कब :- चातुर्मास की स्थापना आषाढ़ माह के शुक्ल चतुर्दशी की पूर्व रात्रि में की जाती है। किन्हीं ग्रन्थों में आषाढ़ माह की प्रतिपदा को वर्षायोग धारण करते हैं ऐसा भी उल्लेख है। यथा- जैनाचार्य श्री जिनसेन ने कहा है कि आदिनाथ ने कृषि शिक्षा आषाढ़ माह की प्रतिपदा को ही दी थी। इसी कारण वर्षायोग इसी माह में स्थापित किया जाता है।

व्याकरणाचार्य पाणिनी ने भी वर्ष की समाप्ति आषाढ़ माह में मानी है तथा कार्तिक कृष्णा अमावस्या की अंतिम रात्रि में साधुजन चातुर्मास समाप्त करते हैं क्योंकि इस दिन ही वीर निर्वाण संवत् आदि की परि समाप्ति होती है। राजाओं के युग में आर्थिक वर्ष की भी पूर्णता दीपावली अर्थात् कार्तिक कृष्णा अमावस्या के दिन ही मानी जाती है इसी दिन वार्षिक आय-व्यय की पूर्णता पुरानी बही-खातों में की जाती है।

वर्षायोग कैसे :- वर्षायोग के स्थापना व निष्ठापन के एक दिन पूर्व मध्याह्न सामायिक में मंगल गोचर मध्याह्न वंदना क्रिया, सिद्ध, चैत्य, पंचगुरु, शांति व समाधि भक्ति पूर्वक की जाती है तथा बाद में मंगल गोचर भक्त प्रत्याख्यान विधि (उपवास ग्रहण क्रिया) सिद्ध, योगी, आचार्य, शांति व समाधि भक्ति पूर्वक की जाती है। दूसरे दिन साधुगण वार्षिक प्रतिक्रमण करते हैं पश्चात् चातुर्मास स्थापना पूर्व रात्रि में एवं निष्ठापन अपर रात्रि में वृहद सिद्ध, चैत्य तथा स्वयं भू स्तोत्र में से क्रमशः दो -दो तीर्थंकर की स्तुति व लघु चैत्य भक्ति क्रमशः सभी दिशाओं में मुख करके की जाती है किन्हीं संघों में यह सभी क्रिया खड़े-खड़े की जाती है तथा किन्हीं-किन्हीं संघो में पूर्व या उत्तर दिशा में मुखकर ही की जाती है मात्र आवर्तन शिरोनति चारों दिशा में की जाती है।

अंत में पंच महागुरु भक्ति शांति व समाधि भक्ति पढ़ते हुए स्थापन, निष्ठापन करें। वर्षायोग समाप्ति के बाद वीर निर्वाण क्रिया करें। सुयोग्य श्रावकजन इस कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के उद्देश्य से अभिषेक विधान क्रिया करें। सुयोग्य श्रावकजन इस कार्य कि निर्विघ्न समाप्ति के उद्देश्य से अभिषेक विधान करते हैं, ध्वजारोहण, कलश स्थापना, मंगलदीप प्रज्ज्वलन करते हैं तथा स्थापना व निष्ठापन के अवसर पर

चारों दिशाओं में मंगल हेतु पीली सरसों या पुष्पादि का क्षेपण करते हैं।

एक और प्रश्न खड़ा हो सकता है कि चातुर्मास-कलश की स्थापना क्यों की जाती है ? कलश के प्रकरण में पंचास्तिकाय तात्पर्य वृत्ति 1/5/15 में कहते हैं-

पुण्णा मणोरहेहि य केवलणाणेण चावि संपुण्णा।
अरहंता इदि लोए सुमंगलं पुण्णकुंभो दु ।।

अरहंत भगवान सम्पूर्ण मनोरथों से तथा केवलज्ञान से पूर्ण है, इसीलिए लोक में पूर्ण कलश को मंगल माना जाता है।

वर्षायोग से लाभ :- चातुर्मास काल में साधुगणों को गमनागमन की सीमा निर्धारित कर चार माह एक ही स्थान पर रहने से ध्यान, अध्ययन, चिंतन का अधिक अवसर प्राप्त होता है। उनकी त्याग तपस्या भी सर्वाधिक होती है आहारादि में भी वे हरी पत्ती, साग, घुने अनाज, फली, पुराने मेवा आदि का त्याग करते हैं और भी अपनी शक्ति अनुसार नियम आदि लेकर तप, त्याग तथा अध्ययन की विशेष साधना करते हैं तथा श्रावकों को भी साधुजनों की सेवा सुश्रुषा एवं घर-घर में चौकों के माध्यम से श्रावक भी शुद्ध प्रासुक आहार लेते हैं एवं साधुजनों के माध्यम से श्रावक संस्कार शिविर, पूजन शिविर, शिक्षण शिविर, व्यसन मुक्ति-शाकाहार अभियान, स्वाध्याय क्लास, सामाजिक संगठन, धर्म प्रभावना का पर्याप्त अवसर प्राप्त होता है।

वर्षाकाल में प्रायः व्यवसाय, विवाह आदि नहीं होने से श्रावकजनों को भी पर्याप्त मात्रा में धर्मलाभ प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाता है। साधुओं के उपदेश से श्रावक क्षेत्रादिकों में दान, आहार दान इत्यादि शुभ क्रियाओं में प्रवृत्त होकर धर्म का अर्जन करते हैं। श्रावकों का साधुओं के निकट आने से उनमें भी तप, त्याग, साधना चर्या के संस्कार आते हैं।

बुद्धबुदी

सम्यक अपनी माँ से बुरी तरह से पिटने के बाद अपने पापा सचिन के पास गया और पूछा....
पापा-आप कभी पाकिस्तान गये हैं?
पापा-नहीं बेटा
सम्यक-कभी अफगानिस्तान गये हो?
पापा-नहीं बेटा, नहीं गया?
सम्यक -और सीरिया गये।
पापा-अरे नहीं गया बाबा।
सम्यक-तो फिर आप यह आतंकवादी आईटम कहाँ से लाए हो?

चातुर्मास का संदेशः अप्पा सो परमप्पा

(श्री प्रकाश डी. गुंदेचा)

संसार की प्रत्येक आत्मा में अनन्त शक्ति है । मात्र जरूरत है, पुरुषार्थ द्वारा उसे प्रकट करने की । आत्मा पर कर्मों का आवरण आ जाने के कारण वह शक्ति छुप जाती है । सूर्य के ऊपर बादलों का आवरण सूर्य के प्रकाश को ढंक देता है, वही स्थिति कर्मों के आवरण से आत्मा की हो जाती है। अप्पा सो 'परमप्पा' अर्थात् आत्मा ही परमात्मा है । प्रत्येक आत्मा में स्वयं परमात्मा बनने की शक्ति मौजूद है । विपरीत पुरुषार्थ के कारण वह शक्ति उठकर सामने नहीं आती है । जिस प्रकार किसी सेठ के काल धर्म प्राप्त कर लेने पर उसका एक मात्र पुत्र सेठ के खजाने से अनभिज्ञ होने के कारण भिखारी बना फिरता है वही हालत संसारी आत्मा की रहती है । जब तक सद्गुरु या शास्त्रों के द्वारा सम्यग्ज्ञान प्राप्त करके उसकी दृढ़ श्रद्धा के साथ आचरण में नहीं लाया जाता है तब तक यह आत्मा परमात्मा नहीं बनकर संसार में नाना गतियों में भटकती रहती है । प्रत्येक जीव सम्यग् पुरुषार्थ करे तो आत्मा को परमात्मा बनाना उसी के हाथ में है। प्रत्येक व्यक्ति संसारी भौतिक सुखों को ही सब कुछ मानकर उसके लिए दिन-रात पुरुषार्थ करता है जबकि अनन्त सुखों के खजाने-आत्मा को भूल रहा है । भौतिक सुख क्षणिक रहने वाले होते हैं जबकि आत्मिक सुख शाश्वत रहते हैं । स्थायी सुख शांति चाहने वालों को आत्मकेन्द्रित होकर आत्मा को परमात्मा बनाने का लक्ष्य रखना चाहिए। यह लक्ष्य ही परम् लक्ष्य है ।

शरीर और आत्मा भिन्न-भिन्न हैं - मुख्य रूप से दो तरह के तत्व हैं, एक जड़ व दूसरा चैतन्य । जड़ तत्व शरीर हैं व चैतन्य तत्व आत्मा है। एक अस्थायी है जबकि दूसरा स्थायी है। शरीर जड़ तत्व है । उसकी कितनी भी सार-संभाल करो वह अन्त में साथ देने वाला नहीं है। संसार में रहना है और आत्मा रूपी मक्खन में से घी निकालना है तो शरीर का पोषण करना होगा परन्तु यह माना कि शरीर ही सब कुछ है, समझदारी नहीं होगी । शरीर तो मक्खन गर्म करने का बर्तन है ताकि घी की प्राप्ति की जा सके । अगर बर्तन व मक्खन को एक ही मानें तो यह बुद्धिमत्ता नहीं है । पूर्व

पुण्य उदय से यह मानव भव का शरीर मिला है। अब हमें आत्मा को विकसित करने का पुरुषार्थ करना चाहिए । शरीर तो जीव निकलते ही यहीं रह जाएगा परन्तु आत्मा आगे चली जाएगी और वह शाश्वत रहेगी। शरीर और आत्मा को अलग मानते हुए आत्म विकास की ओर ध्यान देना हमारा मुख्य लक्ष्य होना चाहिए। हमें अनन्त बार जन्म मिला है परन्तु हमने हर बार मौका खो दिया । अब भी शरीर-आत्मा के भेद विज्ञान को समझें व पूरा पुरुषार्थ आत्मा के उत्थान में लगावें। कवि ने कहा है-

काया काली कुत्तरी, करे भजन में भंग ।
इसको टुकड़ा डालकर, भजन करे निशंक।।

आत्मा अखण्ड हैं, शाश्वत है :- आत्मा को न काटा जा सकता है और न ही छेदा- भेदा जा सकता है। यह हमेशा अखण्ड ही रहती है । व्यक्ति की मृत्यु के साथ उसका शरीर समाप्त होकर मिट्टी रह जाती है । कारण शरीर जड़ है व उसमें से आत्मा, जो कि चैतन्य है, निकल चूकी है। मरने पर शरीर को जलाया जाता हैं, चूंकि आत्मा तो निकल चुकी है और उसने अपनी अगली गति को पकड़ लिया है । उस शाश्वत आत्मा को नहीं जलाया जा सकता है । यह जरूरी है कि इस जन्म में जैसे अच्छे बुरे कर्म किये गये हैं वे अवश्य ही आत्मा के साथ आगे जाते हैं । कहा जाता है कि कर्म करते वक्त पूरी सावधानी रखो कारण कि कर्म को शर्म नहीं है वह तो बिना निमंत्रण ही आत्मा के साथ-साथ जाने वाली है । शरीर लक्षी नहीं बनकर आत्म लक्षी बनो । यह समझने के बाद कि आत्मा शाश्वत है, अखण्ड है, हमें हर हाल में कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए जिससे आत्मा मैली हो, भारी हो । आत्मा ही हमारी असली निधि है। इसकी रक्षा हमारा कर्तव्य है।

आत्मा एक प्रवासी है :- जिस तरह प्रवासी लोग अपना वतन छोड़कर विदेश पैसा कमाने हेतु जाते हैं, परन्तु उनका मुख्य लक्ष्य तो अपना वतन ही होता है । ठीक उसी तरह यह आत्मा इस संसार में अपने प्रवास पर है । कर्मों के अनुसार आत्मा भिन्न-भिन्न गतियों में प्रवास कर रही है । यदि विदेश में रहने वाला भौतिक सुखों में मग्न होकर अपने वतन को भूल जाता है तो वह बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि उसका असली घर तो उसका वतन हैं जहाँ उसका परिवार है, समाज है । वैसे ही आत्मा का असली घर मोक्ष है । कोई यदि मोक्ष को भूलकर संसार सुखों में ही मग्न हो जाये तो उसे समझदार नहीं कहा जायेगा । संसार सुख तो उसे जन्म-जन्म तक भिन्न-भिन्न गतियों में भटकाते रहेंगे । कभी वनस्पति में जन्म तो कभी पानी में

आदि । समझदार इन सबसे बचने के लिए सम्यग् पुरुषार्थ से आत्मा को परमात्मा बनाकर शीघ्र ही अपने शाश्वत घर मोक्ष को जाने की ही कोशिश में रहेगा । वहां जाने के बाद सभी दुःख स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं। मोक्ष के अभिलाषी को हर वक्त याद रहेगा कि यह संसार अनित्य है । मैं यहां पर प्रवासी की तरह हूँ । यह घर, परिवार, पत्नी, बच्चे सभी इसी जन्म के साथी हैं । साथ में कोई भी चलने वाला नहीं है । कोई भी मेरे द्वारा किये कर्मों को नहीं भुगतेगा, मेरे कर्म मुझे ही भोगने होंगे चाहे मैं परिवार के पोषण के लिए ही गलत काम करूँ परन्तु उसका फल तो मुझे ही भोगना होगा । कर्म भुगतने में परिवार वाले साथ नहीं देंगे । सब अपने-अपने कर्मों के अनुसार गति प्राप्त करेंगे । प्रवास काल में अपनी आत्मा को मूल पूंजी मानकर हर वक्त सजग रहना चाहिए । जिस तरह प्रवासी अपनी पूंजी लुटादे तो वह सुखी नहीं हो सकता । वैसे ही आत्मा रूपी पूंजी को नष्ट करने वाला भी भव-भव में सुखी नहीं हो सकता ।

आत्मा का खजाना पहचानें :- जन्म लेने के बाद व्यक्ति सबसे बड़ी भूल यह करता है कि वह अपने असली खजाने को भूलकर नकली और अस्थायी भौतिक सुख-सुविधा व परिवार के चक्कर में फंस जाता है । जबकि उसका आत्मा रूपी खजाना अनन्त सुखों से भरा पड़ा है । यदि वह इस खजाने को पहचान ले तो उसे भौतिक सुख-सुविधाएँ सब तुच्छ लगेंगे । ज्ञान के अभाव में वह भौतिक सुख-सुविधाओं व लालसाओं में भटकता रहता है । आत्मा में अनन्त शक्ति विद्यमान है । पुरुषार्थ द्वारा उसे प्रकट कर सम्यग् ज्ञान, दर्शन व चारित्र की सहायता से आगे बढ़ने की जरूरत है, अनन्त जन्मों से भटकते हुए आत्मा पर जो कर्मों का आवरण चढ़ा दिया है उसे हटाने कि जरूरत है । शास्त्रों में कहा गया है 'पढ़मं नाणं तओ दया' अर्थात दया तब ही होगी जब ज्ञान हो ।

आत्म शुद्धि के उपायः- अनन्त काल से जन्म मरण के चक्कर में हमारी आत्मा अलग-अलग गतियों में भटक रही है । कभी यह आत्मा नरक में गई तो कभी स्वर्ग में, कभी तिर्यंच में तो कभी मनुष्य गति में । इस भटकन का मुख्य कारण आत्मा की पूर्ण शुद्धि न होना है । नरक में दुःख भोगे तो स्वर्ग में सुख भोगे ।

चारों गतियों में मनुष्य गति ही एक मात्र गति है जहां आत्मा को शुद्ध किया जा सकता है । क्या हम मनुष्य भव पाकर इसे शुद्ध करने का उपाय कर रहे ? यह हमें विचारना है । आज का मानव भौतिक सुखों के पीछे इतना भटक चुका है कि वह आत्मा को भूलता जा रहा है जबकि मनुष्य भव

मिलता है, अपनी आत्मा पर लगे कर्मों के आवरण को मिटाकर अपने गन्तव्य स्थान मोक्ष की प्राप्ति हेतु ।

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सऐ ।
जयं भुंजंतो भांसतो पाव कम्मं न बंधई ।।

चाहे कोई भी प्रवृत्ति करें, हर प्रवृत्ति यतना पूर्वक हो । चलना सोना, बैठना, उठना, खाना, बोलना हर प्रवृत्ति में यतना अर्थात विवेक रखें । विवेकपूर्वक की गई प्रवृत्ति से जीव कर्म बंध से बच जाता है । लाखों योद्धाओं को जीतने की अपेक्षा आत्मा का जीतना अत्यन्त कठिन है । असली योद्धा वही है जो स्वयं की आत्मा को जीत लेता है । जो अपनी आत्मा को जीत लेता है उसके लिए कुछ भी जीतना बाकी नहीं रहता है । आत्मशुद्धि चाहने वाले को अपनी आत्मा की दुष्प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कर आत्मा को सन्मार्ग, प्रभु पथ पर लगाना होगा ।

नियमित प्रार्थना, सामायिक (समभाव की प्राप्ति) स्वाध्याय, व्रत-नियम, तप व संयम को जीवन में उतारना होगा तभी यह आत्मा कर्मों से मुक्त होकर अपने शुद्ध शाश्वत स्वरूप को प्राप्त कर आत्मा से परमात्मा बन सकेगी ।

प्रेरक प्रसंग

एक बार एक वकील कुछ कोर्ट के कागजों पर हस्ताक्षर कराने हेतु तेली के तेल निकालने की घाणी पर आया। उस समय तेली घाणी के चक्कर पर बैठकर ऊँघ (नींद) ले रहा था। वकील ने उसे जगाकर पूछा ? अगर बैल चक्कर लगाते-लगाते रुक जाये तों तुम्हें नींद में कैसे मालूम होगा ? तेली ने कहा कि बैल अगर रुक जायेगा तो उसके गले में बांधी घंटी की आवाज बन्द हो जायेगी। इस पर वकील ने कहा बैल चलेगा नहीं फिर भी खड़े-खड़े गर्दन हिलाकर घंटी की आवाज तुम्हें सुना देगा। इतना सुनकर तेली बोला-यह मेरा बैल है कोई वकील नहीं है। अपना मन तेली के बैल के समान है आत्मा निंद्रा अवस्था में है हम परिस्थितियों की अनुकूलता के लिए स्वयं के मन को वकील बना देते हैं । यही संसार की विचित्रता है ।

जसराज देवड़ा, धोका

तीर्थंकर श्री अजितनाथजी

(मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)

तीर्थंकर भगवान श्री ऋषभदेवजी के बाद द्वितीय तीर्थंकर श्री अजितनाथ प्रभु हुए। जम्बूद्वीप के महाविदेह क्षेत्र में सीता नामक नदी के दक्षिण तट पर समृद्धशाली वत्स नाम का देश था। वहाँ सुसीमा नगरी में विमलवाहन नाम के राजा राज्य करते थे जो प्रजा को सन्तान की तरह पालते थे। वे पराक्रमी, न्यायप्रिय, धर्मपरायण एवं शासक के योग्य सभी गुणों से युक्त थे। संसार में रहते हुए भी उनका जीवन भोगों से अलिप्त था। विशाल राज्य और भव्य भोगों को पाकर भी वे आसक्त नहीं हुए। एक दिन विमलवाहन आत्मनिरीक्षण करने लगे कि मानवभव पाकर प्राणी को क्या करना चाहिए। उनकी चिन्तनधारा आगे की ओर प्रवाहित हुई। वे सोचने लगे कि जन्म-मरण के इस भयावह भव-पाप से मैं कब छुटकारा पाऊंगा ? चौरासी लाख जीव योनियों में केवल एक मानव ही ऐसा प्राणी है जो साधना पथ पर अग्रसर हो सभी सांसारिक दुःखों का अंत कर भवपाश से मुक्त हो शिवपद को प्राप्त कर सकता है। अनेक योनियों में भटकने के बाद अनन्त पुण्य के प्रताप से मुझे इस भवपाश से विमुक्त होने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ है। विमलवाहन इस प्रकार संसार से विरक्त वैराग्य भावों में निमग्न थे उसी समय उद्यानपाल ने उनके सम्मुख उपस्थित हो

सुसीमा नगरी के समीप उद्यान में तपस्वी आचार्यश्री अरिंदम महाराज के आगमन का समाचार सुनाया। इस समाचार को सुनकर राजा विमलवाहन अपने परिजनों के साथ आचार्य महाराज को वंदना करने के लिए उद्यान की ओर रवाना हुए एवं उद्यान में पहुंचकर आचार्य महाराज को विधिपूर्वक वंदन किया एवं सभी के साथ विनयपूर्वक आचार्यश्री के सम्मुख बैठ गये। आचार्यश्री अरिंदम के प्रभावी उपदेश सुनकर राजा विमलवाहन का प्रबल वैराग्य भाव जागृत हो गया एवं उन्होंने अपने पुत्र को राज्यभार सौंपकर श्रमणधर्म स्वीकार कर लिया व गुरुसेवा में लीन रहते हुए अपने कर्मों की निर्झरा की। उन्होंने अनेक तपस्याएँ की एवं अन्यान्य तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन करने वाले स्थानकों का आराधन कर तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन किया। अन्त में दो प्रकार की संलेखना और अनसन व्रत ग्रहण

करके पंच परमेष्ठी का ध्यान करते हुए देह का त्याग किया।

प्रथम भव में देह त्याग कर राजा विमलवाहन (श्री अजितनाथजी) का जीव अपने द्वितीय भव में 'विजय' नाम के अनुत्तर विमान में तैंतीस सागरोपम की आयु वाला देव हुआ। आयु के छः माह शेष रहने पर दूसरे देवताओं की तरह उन्हें मोह नहीं हुआ बल्कि पुण्योदय के निकट आने से उनका तेज और भी बढ़ गया। वहां से अपने तीसरे भव में विमलवाहन (श्री अजितनाथजी) का जीव विजया विमान से च्यवनकर, वैशाख की शुक्ल त्रयोदशी के दिन तीर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामी के इक्ष्वाकु वंश के राजा जितशत्रु की रानी विजयादेवी की कोख में आया। प्रभु को गर्भ में ही मति, श्रुति और अवधि तीनों का ज्ञान था। माता विजयादेवी ने हस्ती आदि चौदह स्वप्न देखे। उसी दिन रात को महाराजा जितशत्रु के भाई की पत्नी वैजयन्ती देवी को भी वो ही चौदह स्वप्न आए। सवेरा होने पर राजा ने दोनों के स्वप्नों के बारे में स्वप्न पाठकों से पूछा तो उन्होंने बताया कि माता विजयादेवी की कोख से तीर्थंकर एवं माता वैजयन्ती देवी के गर्भ से चक्रवर्ती जन्म लेंगे। इन्द्रादि देवों ने भी नंदीश्वर द्वीप पर जाकर च्यवनकल्याणक उत्सव मनाया।

गर्भस्थ लोकपूज्य प्रभु के प्रभाव से माता विजयादेवी के अनुपम तेज और कांति में लगातार अभिवृद्धि होने लगी। गर्भकाल पूर्ण होने पर माघ शुक्ल अष्टमी की रात्रि में रोहिणी नक्षत्र में माता विजयादेवी ने पुत्ररत्न को जन्म दिया। प्रभु के जन्म से तीनों लोकों में दिव्य प्रकाश जगमगा उठा। छप्पन दिक्कुमारियों एवं 64 इद्राधिदेवों द्वारा प्रभु को मेरू शिखर पर ले जाकर हर्षोल्लास से जन्म-कल्याणक मनाया।

उसी रात्रि को महारानी वैजयन्ती ने भी चक्रवर्ती पुत्र को जन्म दिया। पुत्र एवं भातृज के जन्म की बधाई सुनकर महाराज जितशत्रु आनन्दविभोर हो गए। समस्त नगर को सजाया गया एवं दस दिन तक उत्सव मनाया गया। जन्मोत्सव के पश्चात महाराज जितशत्रु ने कुछ दिन बाद नामकरण संस्कार महोत्सव मनाया। महाराजा ने बताया कि 'जब से यह पुत्र महारानी के गर्भ में आया तब से मैं इन्हें एक बार भी चौसर में नहीं हरा पाया' अतः महाराजा ने अपने पुत्र का नाम 'अजितनाथ' रखा एवं अपने भ्राता सुमित्र के पुत्र का नाम सगर रखा। दूज के चन्द्रमा की तरह दोनों राजकुमार बढ़ने लगे। अपने पूर्व भव से ही विशिष्ट तीन ज्ञान साथ लेकर माता की कुक्षी से जन्में तीर्थंकर भगवान श्री अजिताथ को तो किसी शिक्षक से शिक्षा दिलाने की कोई आवश्यकता नहीं थी परन्तु

सगर कुमार को सभी कलाओं एवं विद्याओं में निपुण बनाने के लिए शिक्षाविद् कलाचार्य के पास भेजा गया। सगर कुमार कुशाग्र बुद्धि से निश्चित समय से पहले ही सभी प्रकार की शिक्षा में पूर्ण रूप से पारंगत हो गए। दोनों भाइयों की बाल्यावस्था समाप्त हुई। दोनों ने किशोरवय को पार कर युवावस्था में प्रवेश किया। रागरहित प्रभु श्री अजितनाथजी से इन्द्र महाराजा एवं महाराज जितशत्रु ने ब्याह के लिये आग्रह किया। प्रभु ने अपने भोगावली कर्म को जानकर विवाह हेतु अनुमति दे दी। दोनों राजकुमारों का सभी दृष्टियों से सुयोग्य कन्याओं के साथ विवाह किया गया। वे आनंद से सुखोपभोग करने लगे। जब प्रभु श्री अजितनाथ की वय 18 लाख पूर्व की हुई तब महाराज जितशत्रु एवं उनके भाई सुमित्र ने संसार से विरक्त हो श्रमण धर्म ग्रहण करने का निश्चय किया।

(क्रमशः)

तन-मन से स्वस्थ रहिये — शाकाहार को अपनाइये।

आइये इन नारों को अपने कार्यालय, स्कूटर, कार, मेटाडोर व शैक्षणिक संस्थानों, चिकित्सालय, सार्वजनिक स्थानों में लिखवाकर व अपने व्यवसाय से संबंधित बिल बुक, लेटर पैड, शुभकामना संदेश, निमंत्रण पत्र आदि में प्रकाशित करवाकर शाकाहार, व्यसन मुक्ति अभियान के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।

1. मानवता के दो आधार सदाचार और शाकाहार।
2. नशा–नाश की जड़।
3. नशा बिगाड़े जीवन की दशा।
4. तन को करता कौन खराब–अण्डा, मछली और शराब।
5. गाय हमारी माता है, जनम–जनम का नाता है।
6. कटती गाय करे पुकार, बन्द करो ये अत्याचार।
7. बैल अन्न का दाता है, फिर क्यों मारा जाता है।
8. गाय बचेगी दूध मिलेगा।
9. बैल बचेगा अन्न मिलेगा।
10. सत्य, अहिंसा प्यारा है। यही हमारा नारा है।
11. पान मसाला मौत मसाला।
12. गुटका खाओ गाल गलाओ।
13. जर्दा खाओ, जीभ जलाओ।

महेश नाहटा, नगरी

गुरु-जीवित जिनेश्वर है

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

अनादिकाल से मोहजन्य संस्कारों के कारण जीवित गुरुभगवंत के अनुपयोगादि के कारण जो भी दोष लगते हैं उन दोनों को मन में रखकर गुरु के प्रति आदर बहुमान भाव को घुमाने वाला शिष्य वास्तव में स्वयं का सर्वस्व घुमाता है और आध्यात्मिक जीवन में भिखारी-गरीबी जैसा स्थान प्राप्त करता है। छोड़ ऊपर गुलाब के फूल थोड़े छोटे होते हैं और कांटे बहुत होते हैं फिर भी शिष्ट पुरुष गुलाब को ही छोड़ कहते हैं, कांटे को नही।

पंचमहाव्रतों का पालन करने वाले, सरल स्वभावी, भद्रिक, समताधारी आदि गुणरत्नों से भरपूर ऐसे गुरु भगवंत में दोष दिखने के कारण गुरु का तिरस्कार करने वाले शिष्य वास्तव में तीनों लोक के, तीनों काल के, सभी क्षेत्र के अनंत गुरु भगवंतों की घोर आशातना का पाप बांधते है। एक सुसाधु एवं सुसाध्वी का तिरस्कार करने वाले के अठी द्वीप के सभी साधु-साध्वी की आशातना का भयंकर पाप बांधकर भविष्य में सद्गुरु प्राप्त न हो ऐसी अयोग्यता स्वयं के आत्मा में खड़ी करते हैं।

शिष्य की अयोग्यता अथवा पापोदय के कारण गुरु को कभी शिष्य के ऊपर विशेष प्रेम था उसकी देखभाल न करते हों तो भी एकलव्य के जैसे गुरु को हृदय में स्थापित करने वाले शिष्य थोड़े समय में ही संसार सागर से तिर जाता है। जो गुरु को हृदय में स्थापित नहीं करता है वह प्रभु को हृदय में स्थापित करने का भी सौभाग्य प्राप्त नहीं करता है। गुरु को मन मंदिर में प्रतिष्ठित नहीं करने वाला व्यक्ति हमेशा भाव संयम में स्थिर रहने का सामर्थ्य प्राप्त करने में अथवा अन्य संयमी के हृदय में स्थान प्राप्त करने में भी निष्फल जाता है।

गुरु यह जीवित जिनेश्वर है। मूर्ति स्वरूप भगवान की भक्ति भी जीवित भगवान स्वरूप गुरु की उपेक्षा करके करने में आए तो उसकी विशेष कीमत नहीं रहती है, विशेष लाभ नहीं मिलता है, जैसे जीवित माँ-बाँप की उपेक्षा करके उनके फोटो के सामने धूप, दीप करे तो उसकी कीमत कितनी ? जीवित भगवान स्वरूप गुरु की तरफ समर्पण भाव, बहुमान भाव यह परमात्मा की भावपूजा है। इसलिए सभी शिष्यों को स्वयं के गुरु को केवल ज्ञानी समझकर उनके साथ व्यवहार करना चाहिए।

गुरु की उपासना करने वाला शिष्य

परमात्मा की उपासना कर सकता है । स्वयं समर्थ होने पर भी गुरु का गलत ठपका सहन करने वाला चंडरुद्राचार्य के शिष्य के जैसे जल्दी ही आगे बढ़ सकते हैं । गुरु का गलत ठपका भी सहन करने वाले को गुरु पाये का बहुमान भाव सूचित करता है । गुरु के प्रति समर्पण भाव न हो तो, मक्खी की पाँव भी दुःखी नहीं हो ऐसा निर्मल चारित्र भी हो तो भावचारित्र नहीं कहलाता है । गुरु के प्रति समर्पण भाव सर्वाविरति का मूल है, नहीं तो कोड रुपिया की क्रिया भी मामूली फलवाली होती है।

गुर्वादि से जो बात छुपाने में आए तो वह बात अच्छी हो तो भी अविरती का पोषक है । 18 पापस्थानकों से बचने के लिए गुरु वचन अनुसार अपना जीवन बने तो विरती आ सकती है क्योंकि चारित्र का अभ्यास नियंत्रण वाला है । गुरु के प्रति समर्पण भाव से आत्मा तीसरे भव में मोक्ष में जाए ऐसा बन सकता है । क्योंकि उसके प्रभाव से तीर्थंकर देव की आराधना करने का सद्भाग्य भवांतर में मिलता है । गुरु की गलत बातों को सहन करने में गुण की वृद्धि होती है, अन्यथा गुण का ह्रास होता है ।

(संकलन-मुक्ति ना पंथे पुस्तक)

महापद्म चक्रवर्ती : हस्तिनापुर के इक्ष्वाकु वंशी पद्मोत्तर महाराजा की ज्वाला नामक रानी ने 'महापद्म' नामक पुत्र को जन्म दिया। राजा के ज्येष्ठ पुत्र जिनका नाम 'विष्णुकुमार' था ।

भगवान मुनि सुव्रत स्वामी के शिष्य श्री सुव्रताचार्य के उपदेश सुनकर दीक्षित हो गये । विष्णु कुमार मुनि के रूप में प्रकट हुए । महापद्म ने चक्रवर्ती पद पर आसीन होकर अपनी कीर्ति दसों दिशाओं में प्रसारित की । इन्हीं के समय में इनका मंत्री बना था नमुचि । यही नमुचि आगे चलकर मुनिद्वेषी बना। इसने संतों को कष्ट दिया, तब लब्धिधारी विष्णुकुमार मुनि ने शासन-संघ की रक्षा की । नमुचि को सीख दी, अन्ततः महापद्म चक्रवर्ती ने नमुचि के इस दुष्ट व्यवहार से कुपित होकर उसे अपने जनपद सीमा से बाहर कर दिया। विष्णु कुमार मुनि ने इस कृत्य की आलोचना की और आत्म-शुद्धि भी। केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्षधाम जा विराजे।

महापद्म चक्रवर्ती मुनि बने, घातिकर्मों का क्षय किया, वे भी मुक्ति को प्राप्त हुए।

आचार्य श्री भद्रबाहु

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

वीर निर्वाण की आठवीं शताब्दी के अंतिम दशक में महाराष्ट्र के प्रतिष्ठानपुर नामक नगर में भद्रबाहु एवं वराहमिहिर दो सहोदर ब्राम्हण किशोर रहते थे । वे दोनों बड़े ही विद्वान एवं कुशाग्रबुद्धि के थे परन्तु दोनों निर्धन एवं पूर्ण रूप से निराश्रित थे । एक बार एक विद्वान जैनाचार्य प्रवचन दे रहे थे । उसी प्रवचन सभा में भद्रबाहु एवं वराहमिहिर भी पहुंचे एवं ध्यानपूर्वक उनके उपदेश सुनने लगे । उन महापुरुष के उपदेशों का भद्रबाहु के अंतर्मन पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा उसका रोम-रोम वैराग्यमयी हो गया एवं उसने श्रमण धर्म अपनाने का दृढ़ निश्चय कर लिया एवं अपने छोटे भाई वराहमिहिर से कहा कि 'मुझे इस संसार से अब कोई मोह नहीं रहा है, मैं इन महान जैनाचार्य की शरण में दीक्षा ग्रहण कर जीवन पर्यन्त संयम जीवन का पालन करूंगा। यदि तुम चाहों तो वापस घर लौटकर अपने कौशल से सुखी सांसारिक जीवनयापन कर सकते हो।' इस पर वराहमिहिर ने विनम्र भाव से कहा कि जब आप इस संसार से विरक्त हो धर्ममयी संयम जीवन जीने का दृढ़ निश्चय कर चुके हैं तो फिर मैं क्यूं इस भवसागर में डूबूं ? मैं भी आपका अनुगमन कर संयम मार्ग ग्रहण करूंगा । तब दोनों भाइयों ने आचार्यदेव के पास श्रमण धर्म की दीक्षा अंगीकार कर ली। मुनिभद्रबाहु अत्यंत सेवाभावी स्वाध्यायपरायण एवं आगमज्ञान के रसिक थे वे बड़ी निष्ठापूर्वक आगमों का अध्ययन करते थे जिससे उनकी गणना आगम-मर्मज्ञ मुनियों में की जाने लगी । वहीं दूसरी ओर वराहमिहिर अपने गुरु एवं ज्येष्ठ भ्राता की शिक्षाओं की उपेक्षा कर केवल ज्योतिष शास्त्रों के अध्ययन में ही रुचि लेते । ज्योतिष ग्रंथों का गहरा अध्ययन कर वे उसमें निमित्तज्ञानी बन गये । अपने ज्योतिष ज्ञान पर उनके अन्तर में अहंकार जागृत हो गया और उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया । अपने अंतिम दिनों में उनके गुरु ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में आचार्य पद हेतु भद्रबाहु को योग्य समझकर आचार्य पद प्रदान किया । गुरु के इस निर्णय से वराहमिहिर को गहरा आघात हुआ एवं वह

अपने ज्येष्ठ भ्राता से ईर्ष्या करने लगा । उसके मन में तीव्र कषाय एवं मिथ्यात्व इतना प्रबल हो गया कि अपने श्रमण जीवन को छोड़कर वह पुनः गृहस्थ बन गये । अनेक प्राचीन ग्रंथों से चमत्कारी मंत्रों एवं तंत्रों का चयनकर अपना प्रभाव जमाया एवं धन अर्जित करने लगे। ज्यों-ज्यों उन्हें धन की प्राप्ति होती गई त्यों-त्यों उनकी महत्वकांक्षाएँ भी बढ़ती गई । उन्होंने सूर्य प्रज्ञप्ति व चन्द्रप्रज्ञप्ति एवं अन्य ज्योतिष ग्रंथों के सार को लेकर एक अपूर्व ज्योतिष ग्रंथ की रचना की । अनेक चमत्कारपूर्ण कृतियों एवं किवदन्तियों के परिणाम स्वरूप वराहमिहिर की प्रसिद्धि चारों ओर फैलने लगी जिससे प्रभावित होकर प्रतिष्ठानपुर के महाराज ने उन्हें अपना राजपुरोहित बना लिया । विहार करते हुए आचार्य भद्रबाहु का प्रतिष्ठानपुर में आना हुआ । आचार्यश्री के आगमन के समाचार सुन राजा भी अपने परिजनों के साथ उनके दर्शन एवं प्रवचन श्रवण करने के लिये उद्यान में पहुंचे । राजपुरोहित वराहमिहिर भी महाराज के साथ पहुंचे एवं धर्मोपदेश के पश्चात ज्ञान चर्चा की । उसी क्षण महल से एक संदेशवाहक आकर महाराज को पुत्रजन्म का सुखद समाचार सुनाता है । समाचार सुनकर महाराज ने वराहमिहिर से प्रश्न किया कि पुत्र का भविष्य क्या होगा ? तब वराहमिहिर ने जन्मकाल, नक्षत्र आदि पर विचार करने के बाद कहा कि यह बालक शतायु एवं समस्त विद्याओं को पूर्ण कर सभी ओर पूजित होगा । उत्तर सुनकर महाराज प्रसन्न होते हुए निमित्त शास्त्र में पारंगत आचार्य भद्रबाहु से प्रश्न करते हैं कि 'भगवन् ! क्या ऐसा ही होगा, जैसा कि पुरोहितजी कह रहे है ?' इस प्रश्न पर आचार्य भद्रबाहु शान्त भाव से मौन खड़े रहे। (क्रमशः)

कीमती मानव-जीवन

मानव जीवन कीमती है, अमूल्य है। चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए पुण्योदय से मनुष्य जन्म मिलता है। मानव जीवन का परम लक्ष्य है, धर्माचरण। सांस्कृतिक मूल्यों, धार्मिक परंपराओं और उच्च आदर्शों का अनुसरण कर व्यष्टि तथा समाष्टि के सर्वतोन्मुखी कल्याण के लिए जीवन को समर्पित कर दिव्यता की ओर अग्रसर होना ही मानव जीवन का परम लक्ष्य है। इसी भावना से हम परमात्मा को सहजभाव से प्राप्त कर सकते हैं। युवावर्ग प्राचीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराओं को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए संस्कृति के मूल धर्म को आत्मसात कर संगठित एवं योजनाबद्ध प्रयासों को गति प्रदान करें ।

साधना-आराधना का काल 'चातुर्मास' आचार्यश्री जयन्तजी के चरणरज कल्याणकारी

(श्री शान्तिलालजी सगरावत, मंदसौर)

दर्शन, ज्ञान, चारित्र की सम्यग् आराधना उपादेय मार्ग है । आत्मा के अपने कल्याण उन्नयन के लिये चातुर्मास काल अद्वितीय अवसर होता है । इसका सदुपयोग करने वाला भव्यात्मा, आत्मविकास की सीढ़ियों पर आरोढ़ करने में सफल होता है । जैन धर्म आत्मवादी संस्कृति का संस्करण है । इसने अपना आध्यात्मिक स्वरूप आत्मा को केन्द्र बिन्दु पर स्थापित कर उकेरा है । आत्मा का परिशुद्ध चरम विकास ही जीवन का लक्ष्य है । जैन चिन्तन की यही विशेषता है कि इसने साध्य की प्राप्ति के लिये शुचितासिद्ध साधनों का प्रावधान किया है । व्रत, पच्चखाण, तपस्या, त्याग, स्वाध्याय, पर्वाराधना, पूजा, अर्चना, सामायिक, प्रतिक्रमण की शैली आत्मोन्नयन के उद्देश्य से अभिप्रेरित है ।

भारतीय दर्शनों के अनुसार चातुर्मास साधना काल की प्रारंभिक भूमिका की रचना के लिये साधना को अनुकूल समय और व्यवस्थित दिनचर्या उपलब्ध कराता है। साधनाशील धर्मालुओं के नयनों में धर्म क्रियाओं, तपस्याओं और अनुष्ठानों के माध्यम से आत्मोन्नति का उजास आँजने की व्यवस्था का दूसरा नाम चातुर्मास है ।

वर्ष में तीन चातुर्मास आते हैं । आषाढ़ मास की शुक्ल चतुर्दशी की पूर्व रात्रि से प्रारम्भ होकर कार्तिक चतुर्दशी पश्चित रात्रि तक के चातुर्मास को विशेष महत्वशाली माना जाता है । इस चातुर्मास काल के लिये पंक्तियाँ- जीवन के सूने पतझण में फिर फूल खिले सौरभ पाया । मन नंदन वन में रमण करे, यह ऐसा मंगलकारी है, सटीक है । सभी धर्मों में चातुर्मास, वर्षावास या वासावास श्रावण, भादौ, आषाढ़ और कार्तिक मास में ही मनाये जाने वाले काल को चातुर्मास ही कहते हैं । चातुर्मास में साधु-सन्त एक जगह रहकर धर्म-देशना देते हैं । श्रावक-श्राविकाओं को धर्म की राह प्रशस्त कर मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं । चातुर्मास में एक ही स्थान पर रहने का नियम जहाँ जीवों की रक्षा हेतु आवश्यक है, वहीं प्राकृतिक पर्यावरण और आरोग्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

रतलाम (मध्यप्रदेश स्थित) नगर में वीतरागवाणी की आध्यात्मिक तरंगों का सिंहनाद करने हेतु जिनशासन सजग प्रहरी, अनंत आस्था के आयाम, मुखरित प्रज्ञा, अजातशत्रु, कान्तदर्शी, सौम्यमूर्ति, जीवन शिल्पी श्वेतवस्त्रधारी परमपूज्य गच्छाधिपति दिशादर्शक, धर्म चक्रवर्ती राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास पदार्पण हो रहा है । जिससे कि धर्म आराधना के द्वार खुलकर साधना-आराधना का काल है चातुर्मास । तन-मन को तपाने का अद्भुत है, यह मधुमास । आपके चरणरज स्व पर कल्याणकारी है ।

परमहितकारिणी - गुरुसेवा

(साध्वी श्री रुचिदर्शनाश्रीजी)

(मई अंक के लेख का शेष भाग)

पडागसमाना - कुछ गुरुभक्त पताका के समान होते हैं जैसे ध्वजा जिधर हवा बहती है उधर उड़ने लगती है। वैसे ही श्रावक भी जिधर हवा बहती है उधर चल पड़ते हैं। उनका कोई एक निश्चित ध्येय और सिद्धान्त नहीं होता है। वे जहाँ जाते हैं वहाँ के गुणगान करने लग जाते हैं। उनकी श्रद्धादृढ़ नहीं होती है। वे गंगा गये तो गंगादास और जमुना गये तो जमुनादास हो जाते हैं। जिस किसी ने जो कुछ कह दिया उसी पर विश्वास करके आस्थाहीन हो जाते हैं। संदेह का भाव पैदा कर लेते हैं। सोचने समझने हेतु वे अपने स्वयं के दिमाग का उपयोग नहीं करते हैं। यह सब तभी संभव होता है जब गुरु के प्रति सच्चा समर्पण नहीं होता है। समर्पण के बिना गुरु के आंतरिक गुणों को नहीं जाना जा सकता है। आचार्य हरिभद्रसूरिजी म.सा. ने षोडषक ग्रन्थ में तीन प्रकार के श्रावक कहे हैं। प्रथम बालजीव जो मात्र वेश के प्रति आकर्षित हो जाते हैं। दूसरे मध्यमजीव जो वेश के साथ आचरण को भी महत्व देते हैं। तीसरे उत्तम जीव होते हैं जो गुरु के निर्मल अंतःकरण पहचानकर अथवा तो मोहनीय कर्म के क्षयोपशम से प्राप्त गुण को जानकर फिर अपने हृदय में गुरु के प्रति श्रद्धा स्थापित करते हैं। ऐसे जीव अपनी श्रद्धा से चलित नहीं होते हैं। भक्त को अपने हृदय में गुरु भक्ति की रेखा वज्र के समान अंकित करना चाहिए।

जैसे धूल में अंगुली से की गई रेखा बिना प्रयत्न के वायु के प्रवाह मात्र से नष्ट हो जाती है। कागज पर की गई रेखा रबर के थोड़े प्रयत्न से मिट जाती है। लकड़ी पर धातु से की गई रेखा बहुत परिश्रम से दूर होती है किन्तु शिला के ऊपर वज्र की चोट से की गई रेखा किसी भी प्रयोग से दूर नहीं की जा सकती है। शिला के नष्ट होने पर ही वह रेखा नष्ट होती है। उसी प्रकार भक्त को अपने हृदय में गुरु के प्रति श्रद्धा के भाव को स्थापित करना चाहिए। चाहे जैसी परिस्थिति बने किन्तु गुरु के प्रति श्रद्धा का भाव नाश होना तो दूर की बात है कम भी नहीं होना चाहिए। तलवार टूट जाती है पर उसकी धार, उसका पानी नष्ट नहीं होता वैसे ही व्यक्ति मर जाए पर उसकी निष्ठा बरकरार रहे।

ठाणुसमाना - कुछ श्रावक ठूंठ की तरह अकड़ में रहते हैं। वे किसी के सामने झुकते नहीं हैं। उनमें न ही कोई जिज्ञासा होती है और न ही नम्रता होती है। वे अपने आप को बहुत बड़ा आदमी मान बैठे हैं। नदी के पास आने के बाद भी यदि प्यासा व्यक्ति झुके नहीं तो प्यासा ही रह जाता है। वैसे ही ज्ञानी गुरु के पास आकर भी यदि व्यक्ति झुके नहीं तो अज्ञानी ही रह जाता है। सूरज का महात्म्य

जानने के लिए आँख का खुला होना जरूरी है। वैसे ही गुरुकृपा का अधिकारी होने के लिए हृदय में कृतज्ञता का भाव होना आवश्यक है। कृतज्ञता सभी गुणों में श्रेष्ठ गुण है जो अन्य गुणों को भी प्रगट करता है। कृतघ्नता सभी दोषों में सिरमौर है जो रहे गुणों को भी नष्ट कर देता है।

खरकंटय समाणा – कुछ श्रावक तीखे कांटे के सामन चुभने वाले और दुख देने वाले होते हैं उनका अभिमान बहुत प्रबल होता है। वे इसी ताक में रहते हैं कि मैं कब गुरु भगवंत अथवा तो साधु-साध्वी भ. की गलती पकडु और उनकी निंदा करूं। वे संघ में भी संक्लेश पैदा करते हैं तथा उनका व्यवहार संगठन के लिए विघ्नकारक होता है। ऐसे व्यक्ति का संघ में रहना भी अच्छा नहीं होता है। जैसे सड़ा हुआ पान दूसरे पान को बिगाड़ देता है। वैसे ही वे संघ के वातावरण को खराब करते हैं।

मान-सम्मान प्राप्त करने के लिए वे दोहरा व्यवहार करते हैं। गुरु के सामने तो प्रशंसा करते हैं और पीठ पीछे निंदा करते हैं। निंदा करके वे भयंकर कर्म का बंधन करते हैं। निंदा और प्रशंसा में उतना ही विरोध है जितना अमृत और विष में। मुख रूपी भूमि से निकलने वाला एक सुंदर सुरभित फूल है तो एक तीक्ष्ण कांटा।

शास्त्रों में कहा गया है कि प्रत्यक्ष या परोक्ष गुरु की निंदा करने वाला इस भव में तो अनर्थ को प्राप्त करता ही है पर, परभव में भी उसके लिए जिनवचन दुर्लभ बन जाते हैं जिनशासन प्राप्त करने की उसकी योग्यता समाप्त हो जाती है। गुरु का गुणानुवाद एकांतरूप से लाभकारी होता है। गुरु के गुणानुवाद करने से अन्य को भी गुरु की महानता का पता चलता है। वे गुरु की ओर आकर्षित होते हैं। गुरु के भक्त बनते हैं फिर गुरु सरलता से उनको धर्म प्राप्त करवा सकते हैं। गुरुभक्त के लिए विनयगुण बहुत महत्त्वपूर्ण है। विनीत गुरु भक्त गुरु की आज्ञा को प्राथमिकता देते हैं। उनके मन में यश कीर्ति की आकांक्षा नहीं होती है। उनका व्यवहार संगठन के अनुकूल होता है।

गुरु सेवा वृक्ष के समान है समस्त ऋद्धियां उसके फूल के समान है। यदि ऐश्वर्य और ऋद्धियां चाहिए तो गुरु सेवा रूप वृक्ष अवश्य बोना चाहिए। उपाध्याय यशोविजयजी म.सा. ने गुरुतत्वविनिश्चय में कहा है 'गुरु की आज्ञा पालन से मोक्ष होता है, गुरु की कृपा से सिद्धियां मिलती हैं, गुरु भक्ति से अवश्य विद्या सफल होती है। संसार रूपी अटवी में गुरु को छोड़कर दूसरा कोई शरण नहीं है, नहीं था, नहीं होगा।' त्रिस्तुतिक संघ में इस बात को लेकर संतोष है कि यहां के गुरुभक्त श्रावक 'अद्धागसमाणा' अर्थात् मार्मा के समान सीधे, सरल एवं विनम्र हैं। अन्य आचार्य भ. अपने भक्तों को जिनकी मिसाल देते हैं और कहते हैं कि गुरु भक्ति यदि सीखना है तो आचार्य जयन्तसेन सूरीश्वरजी के गुरु भक्तों से सीखिए। यहाँ गुरुभक्तों की अंध श्रद्धा नहीं बल्कि अगाध श्रद्धा है। सभी गुरुभक्त अपनी गुरुभक्ति में और अधिक कीर्तिमान बनाएं एवं स्वपर कल्याण करें यही शुभेच्छा।

सबसे बड़ी पूजा सद्भाव

(श्रीमती ममता भारती)

यदि हमारे मन में सभी के प्रति सच्ची सद्भावना नहीं है तो हमारी सारी पूजा, अर्चना और भक्ति सब निरर्थक है । परमात्मा सदैव उन्हीं से प्रसन्न होता है जो दूसरों को प्रसन्न रखते हैं । इसलिये प्राणियों से प्रेम करने को ईश पूजा कहा जाता है ।

दूसरों को पीड़ा पहुंचाने वालों को हमारे धर्मग्रंथों में अधम कहा गया है । अतः चाहे इंसान हो या पशु-पक्षी, अपना हो या पराया, किसी भी जीव को दुख नहीं देना चाहिये । सद्भावना, पूजा-पाठ और कर्मकांड से बढ़कर है और सर्वोपरि है । पूजा करने का अर्थ यह नहीं है कि हम पत्थर दिल हो जायें और दूसरों पर कोई ध्यान ही न दें । सद्चिंतन, सद्वचन और सत्कर्म की त्रिवेणी में स्नान करके हम अपने आपको पवित्र कर सकते हैं, बशर्ते हमारे जीवन में कुभाव, कुवचन और कुकर्म के लिये कभी कोई स्थान न हो ।

संयम के सहारे हम अपने क्रोध पर काबू रख सकें । अपने जीवन में संतोष को उतार सकें तथा दया, क्षमा और विनम्रता को अपना सकें । क्रोध, कलह और कुसंग करने वालों की पूजा कभी नहीं फलती । इसी प्रकार कुविचारों, कर्महीन तथा आलसी व्यक्ति का जीवन भी व्यर्थ में नष्ट हो जाता है, अतः सुचिंतन और सत्कर्म ही करने चाहिये ।

हम पूजा-पाठ करें, किन्तु अपने कर्तव्यों से कभी विमुख न हों । देव प्रतिमा को भोग लगायें किन्तु प्राणवान व्यक्तियों की उपेक्षा न करें । तीर्थों का भ्रमण करें, किन्तु अपनी जिम्मेदारी को न भूलें, कथा कीर्तन या सत्संग में जायें, लेकिन अपने परिजनों पर क्रोध न करें ।

अपने पड़ोसियों के प्रति दुर्भावना न रखें। पूजा और भक्ति तो वही सार्थक है, जो पूरे जीवन को ही बदल कर रख दे । उसकी महक से हमारे कार्य व्यवहार में सुगंध भर जाये । हमारा जीवन आनंद का पर्याय बन जाये । हम भूल से भी किसी का दिल न दुखायें, अर्थात सभी के प्रति अपने दिल में सद्भाव रखें । पवित्र नदियों पर, तीर्थ और मंदिरों में भारी भीड़ देखने को मिलती है ।

कथा प्रवचनों में भारी जन समूह उमड़ पड़ता है । ईश्वर के प्रति, श्रद्धा, आस्था और विश्वास बढ़ रहा है। व्रत, उपवास, दान और पुण्य के बावजूद आपसी कलह क्लेश और द्वेष भाव कम होता दिखाई नहीं देता ।

उग्रता, असंतोष और हिंसा में कमी नहीं आ रही। इसका मूल कारण यही है कि हम प्रस्तर प्रतिमाओं को तो ईश्वर का प्रति रूप मानते हैं, किन्तु प्रायः इंसान को इंसान नहीं

समझते । उसे भगवान की संतान नहीं मानते। जीवों पर दया नहीं करते । नतीजा हमारे सामने है । तनाव, हिंसा और भ्रष्टाचार में लगातार वृद्धि हो रही है । इसका सीधा अर्थ है कि हमारे दिल और दिमाग से सद्भावना का लोप हो रहा है । स्वार्थ बढ़ रहा है । उचित-अनुचित का अंतर मिट रहा है । आज स्वस्थ समाज और सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण करने के साथ-साथ अपने जीवन को उर्ध्वमुखी बनाने का प्रयास में हमें स्वयं भी इस संबंध में सदैव सजग और सचेष्ट रहना चाहिए ।

हर पल मन निश्छल रहे, सात्विक जीवन की आभा मुख मंडल पर विद्यमान हो, प्रत्येक प्राणी के लिए हमारे दिल में प्यार और सम्मान हो, यही सच्ची पूजा है । दूसरों के कष्टों में हम द्रवित हो उठें । जरुरतमंदों की यथासंभव सहायता के लिये तैयार रहें । दीनहीन का कभी उपहास न करें - पद, प्रतिष्ठा और प्रभाव से पैदा अहंकार से दूर रहें । यही सच्चे संत और भक्तों की पहचान है ।

कषाय मुक्ति

आज के मनुष्य को सबसे अधिक जरूरत है मानसिक शांति की। उसने जितना भौतिक विकास किया है, जितने सुख सुविधा के साधन जुटाए हैं, उतना ही वह अशांत और तनाव ग्रस्त होता जा रहा है। अशांति का मूल कारण है कषाय, आंतरिक आवेश और आवेग। मनुष्य की मौलिक वृत्ति है कामना। कामना प्रेरित मनुष्य वह सब कुछ जुटाना चाहता है जिससे उसे अधिक से अधिक सुख-सुविधा मान-प्रतिष्ठा उपलब्ध हो सके। सत्ता और संपदा की दिशा में उसकी दौड़ प्रारंभ हो जाती है। लक्ष्य पूर्ति के लिए वह छलना प्रवंचना का सहारा लेता है। जैसे-जैसे सफलता मिलती है उसका अहं पुष्ट होता जाता है । अहं जहां भी आहत होता है, स्वत्व के विस्तार और संरक्षण में, जहां भी बाधा उपस्थित होती है, वह उत्तेजना से भर जाता है। यही कषाय चक्र। यही राग और द्वेष। विस्तार की भाषा में यही है! क्रोध, मान, माया और लोभ। अंतिम बिंदु से चले तो कह सकते हैं लोभ, माया, मान और क्रोध तो परिणाम हैं, उसका उत्पादन लोभ है, कामना है। कामना ही दुःख है। कामना का अतिक्रमण ही दुःख मुक्ति का उपाय है । दुःमुक्ति या मानसिक शांति का कषाय मुक्ति के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं है। अध्यात्म का मूल सूत्र है-कषाय मुक्ति। जैन धर्म के पास कषाय उपशांत या क्षीण करने की वैज्ञानिक प्रक्रिया है। इसलिए यह आध्यात्मिक धर्म है और यही मानसिक शांति का निरापद मार्ग है।

महासती सुभद्रा -1

भगवान श्री पार्श्वनाथ के समय में विद्यमान सुभद्रा से यह सुभद्रा भिन्न है। जैन साहित्य में इस नाम की अनेक धर्मनिष्ठ महिलाओं का उल्लेख प्राप्त होता है। इसको सोलह सतियों में स्थान प्राप्त है।

यह सुभद्रा बसन्तपुर के राजा जितशत्रु के मन्त्री श्रावक जिनदास की पुत्री थी। आवश्यक चूर्णी के अनुसार सुभद्रा के पिता जिनदास जैन संस्कृति के अनन्य उपासक थे, अतः सुभद्रा भी जिन संस्कृति में पूर्ण निष्ठा रखने वाली महिला थी।

जिनदास उसका विवाह किसी ऐसे ही युवक से करना चाहते थे जो जैन संस्कृति के अनुसार आचरण करने वाला हो। परन्तु बुद्धदास नामक एक युवक जिसका सारा परिवार बौद्ध धर्म को मानने वाला था, वह सुभद्रा के प्रति अत्यन्त आकृष्ट था, अतः उसने जैनधर्म स्वीकार कर जिनदास से सुभद्रा की याचना की। जिनदास ने पुत्री का उससे विवाह कर दिया।

सुभद्रा की सास ने अनेक यत्न किये कि सुभद्रा बौद्ध धर्म की अनुगामिनी बन जाए, परन्तु वह अपनी आस्थाओं पर ध्रुव की तरह अटल रही। बुद्धदास भी सुभद्रा से हार्दिक प्रेम रखता था, उसे भी उसकी माँ ने बहुत बहकाया परन्तु उसका एक ही कथन था - 'सुभद्रा पतिव्रता है, सुशीला है, मैं उसके जीवन चन्द्र को सर्वथा निष्कलंक मानता हूँ।'

एक दिन एक श्रमण सुभद्रा के घर पर आहार-पानी के लिये आए। सुभद्रा ने देखा कि साधु महाराज की आँख में एक छोटा-सा तिनका पड़ा है, अतः उनकी आँख लाल हो गई थी और उन्हें पीड़ा भी हो रही है, अतः उसने साधु महाराज को विनय-पूर्वक बिठाया और उनकी आँख से तिनका निकालने लगी।

सुभद्रा की सास ऐसे ही अवसर की ताक में थी और उसने बुद्धदास को यह दृश्य दिखा दिया, अतः अब वह भी सुभद्रा से उदासीन रहने लगा।

एक बार बसन्तपुर के राजमहल के द्वार अनायास ही इस प्रकार बंद हो गए कि बहुत उपाय करने पर भी वे खुल नहीं पाए। तान्त्रिकों ने इसे देवी प्रकोप बताते हुए कहा- 'राजन ! यदि कोई पतिव्रता नारी कच्चे सूत में चलनी बांध कर कुएँ से पानी खींच ले और उस पानी का छींटा द्वार पर दे तो द्वार निश्चय ही खुल जाएगा।

राजाज्ञा प्रसारित कर दी गई, अतः अनेक महिलाओं ने प्रयास किया, परन्तु कोई भी सफल न हो सकी। सुभद्रा इस उपयुक्त अवसर को कैसे खो सकती थी। उसने प्रभु महावीर का ध्यान किया, नवकार मंत्र का स्मरण किया और कच्चे सूत में चलनी बांध कर कुएँ से पानी

निकाला तथा द्वार पर उसका छींटा देकर द्वार खोल दिया।

बुद्धदास तो इस घटना से विश्वस्त होकर सुभद्रा से एक देवी जैसा व्यवहार करने लगा, सारे नगर में ही नहीं चारों ओर उसकी जिन-भक्ति और पतिव्रत-धर्म की यशोगाथा फैल गई।

साध्वी सुव्रता – निरयावलिका सूत्र के अनुसार भगवान् श्री पार्श्वनाथजी के समय में साध्वी सुव्रताजी की निश्रा में 216 महिलाओं ने प्रव्रजित होकर साधना की थी जिसमें श्री, ह्री, घी, कीर्ति आदि दस देवियां प्रमुख हैं, परन्तु इनका विशेष विवरण अनुपलब्ध है।

गिरनारजी तीर्थ की महिमा

* पूरे विश्व की सबसे प्राचीन जैन प्रतिमा (गत चौबीसी के तीसरे तीर्थंकर के समय की) नेमिनाथजी की गिरनारजी तीर्थ में है।
* विश्व की पहली ऐसी प्रतिमा जिसका निर्माण किसी शिल्पी मनुष्य ने नहीं बल्कि पांचवें देवलोक के इन्द्र महाराजा के द्वारा हुआ है।
* मूलनायक नेमिनाथजी की प्रतिमा तीनों लोक (स्वर्गलोक और नीचे पाताललोक) में असंख्य देवी-देवताओं द्वारा पूजी गई है।
* संपूर्ण पश्चिम भारत की एक मात्र तीर्थंकरों की कल्याणक भूमि सिर्फ गिरनार है।
* अजंता-अरिहंतों की मोक्ष और असंख्य आत्माओं की दीक्षाभूमि यानि गिरनार।
* विश्वभर का एक मात्र ऐसा जैन मंदिर जो संपूर्ण ग्रेनाईट पत्थर का बना हुआ है।
* आगामी चौबीसी के 24 के 24 तीर्थंकर परमात्मा जिस परम पवित्र भूमि से निर्वाण पद को प्राप्त करके सिद्धशिला में विराजित होने वाले हैं वह भूमि यानी गिरनार।
* अमूल्य जड़ी बूटियों, रोगविनाशक औषधियों, रस कुंपीकाऐं, स्वर्णादि धातुओं का खजाना यानी गिरनार।
* प्रकृति ने जहां मुक्तमन से अपना सौंदर्य बिखेरा है ऐसी प्राकृतिक नैगर्गिक भूमि यानी गिरनार।
* संपूर्ण भारत भर के जैन श्वेतांबर, दिगंबर, वैष्णव रामभक्त, शिवभक्त, दत्तभक्त, अंबाभक्त, बौद्धभक्त लोगों की आस्था का केन्द्र यानी गिरनार।
* शत्रुंजय महातीर्थ की तरह दूसरी शाश्वत तीर्थ भूमि यानी गिरनार।
* जिस तीर्थ का घर पर बैठकर भी ध्यान धरने से जीव चौथे भव में मोक्ष में जाता है, ऐसा महान तीर्थ यानी गिरनार।

आरोग्य वर्द्धक है - उनोदरी तप

(श्री अचलचन्दजी जैन)

तप त्याग का सूचक है । इससे न केवल मन पर नियंत्रण रहता है । अपितु मन निर्मल भी रहता है । यही कारण है कि जैन धर्म में तप का विशेष महत्त्व है । घर में तप का होना शुभ माना जाता है । समाज तपस्वी को आदर की दृष्टि से देखता है ।

जैन धर्म में दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप को मोक्ष का मार्ग माना गया है । तप के 12 भेद बताए गये हैं । छह अभ्यन्तर तप तथा छह बाह्य तप । बाह्य तप के अन्तर्गत आहार पद पर नियंत्रण के लिये कई प्रकार के तप प्रचलित हैं जिसकी शुरूआत 'उनोदरी' तप से होती है । उनोदरी तप के अलावा एकासणा, बियासणा, निवी, आयंबिल, उपवास, तेला अट्ठाई, मासक्षमण, उपधान, वरसीतप आदि ।

तप की पहली सीढ़ी 'उनोदरी' तप है । जिसमें भूख से थोड़ा आहार अर्थात 10% आहार कम ग्रहण करना होता है । यह तप प्रतिदिन किया जाना चाहिये । बुजुर्गों के लिये तो यह तप और अधिक उपयोगी और आरोग्य वर्द्धक है । क्योंकि इस उम्र में बुजुर्गों की पाचन शक्ति कमजोर हो जाती है। अतः कम खाना स्वस्थ रहने के लिये आवश्यक है । परन्तु मनुष्य का स्वभाव है कि जब कोई मनपसन्द अथवा स्वादिष्ट भोजन सामग्री खाने को मिलती है तो वह भूख से अधिक खायी जाती है । जिससे पेट दर्द, बदहजमी आदि तकलीफें होती हैं । खाने पर नियंत्रण अर्थात भूख से कम खाने पर 'उनोदरी' तप का लाभ मिलता है । हमारे यहाँ पुरानी कहावत है कि 'कम खाना, गमखाना और अवसर आवे तो नम जाना।' उपरोक्त कहावत में भी कम खाने का महत्त्व दर्शाया गया है ।

हाल ही में अमेरिका में हुई आहार सम्बन्धी शोध से यह निष्कर्ष निकला है कि भूख से कम भोजन ग्रहण करना रोगों से मुक्त रखने, स्वस्थ रहने तथा दीर्घ जीवन के लिये लाभदायक है । इस प्रकार विदेशी शोध ने भी 'उनोदरी' तप की श्रेष्ठता सिद्ध कर दी हैं । यदि जैन पद्धति से जीवन-यापन किया जाये तो अनेक प्रकार की बीमारियों से बचा जा सकता हैं । 'अलूणा' (बिना नमक का) एक धान का आयंबिल कई रोगों से मुक्ति दिलाता है । जिसमें दिन में केवल एक बार बिना नमक का भोजन किया जाता है । यह तपस्या 9 दिन तक चलती है। इसे नवपदजी की 'ओली' कहा जाता है। चैत्र एवं अश्विन मास में जब ऋतु परिवर्तन होता है नवपदजी की ओली की आराधना आरोग्य वर्द्धक एवं मंगलकारी है । दूसरे शब्दों में यह प्राकृतिक चिकित्सा प्रणाली का ही रूप है ।

आजकल मधुमेह (डायबिटीज) जैसा रोग आम हो गया है । इसका कारण हमारी बदली हुई जीवन शैली एवं भूख से अधिक भोजन करना है । यदि हम 'उनोदरी' तप को अपने जीवन का अंग बना लें तो आरोग्यता प्राप्त की जा सकती है । क्योंकि 'उनोदरी' तप आरोग्यता का सूचक है ।

वर्षा ऋतु में आपका स्वास्थ

(प. श्रीरामनारायणजी शास्त्री)

यद्यपि हमारे देश में छः ऋतुएँ प्रतिवर्ष आती-जाती हैं तथापि वर्षा, सर्दी और गरमी-इन तीन मौसमों का हम प्रायः सभी स्थानों पर सहज ही अनुभव करते रहते हैं। जब गर्मी की ऋतु में सूरज की तीखी किरणों से तपी हुई धरती, वायु और आकाश प्राणियों को बेचैन कर देते हैं तथा पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, वन-उपवन-सभी गरमी से व्याकुल हो उदास-से दिखायी देने लगते हैं, तभी वर्षा का शुभागमन होता है। सूखे ताल-तलैया भरने लगते हैं और नदी-नाले उफनने लगते हैं। इस रिमझिम के मौसम में नर-नारियों और सभी प्राणियों के मन में आनन्द उमड़ आता है। मेघों की गर्जना, बिजली की लुका-छिपी, वर्षा की रिमझिम और आकाश का मनोहर रूप किस प्राणी को आनन्द विभोर नहीं कर देता ?

इतना सुहावना मौसम होने पर भी इसका आनन्द हम तभी पा सकते हैं, जब हम इस ऋतु के सम्बन्ध में जानकारी पाकर अपने स्वास्थ्य को सँभाल में पूर्ण सावधानी रखें। यहाँ इसी विषय पर कुछ आवश्यक विचार प्रस्तुत हैं -

1. बरसात में तपते हुए भूमण्डल पर सहसा पानी बरसने लगता है अर्थात् एक साथ बढ़ी हुई गरमी से तपी धरती पर अचानक शीतल जल का अभिषेक होने लगता है। इससे वही बात होती है जैसे जलती हुई आग पर कोई एकदम पानी उड़ेल दे। इस प्रकार धरती के गर्भ से गर्भ भाप निकलने लगती है, जो वातावरण को काफी प्रभावित करती है। बरसे हुए जल के साथ सिमटा हुआ कूड़ा-कचरा, कीड़े-मकोड़े आदि सभी हमारे जलाशयों में पहुँच जाते हैं, जिससे जल दूषित हो जाता है। इस तरह गर्म भाप से बोझिल हवा, बरसात से मटमैला दूषित पानी और गीली एवं नमीयुक्त धरती-ये सब हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। इनसे यदि न बचे तो पाचन बिगड़ सकता है, ज्वर हो सकता है, पीलिया, अम्लपित आदि रोग हो सकते हैं, रक्त दूषित हो अनेक चर्मविकार हमें दुःख दे सकते हैं। इसी कारण विषूचिका अर्थात् हैजा, प्रवाहिका यानी पेचिश, विषमज्वर-मलेरिया आदि इस ऋतु में बहुतायत- से होते देखे जाते हैं।

2. बादलों से घिरा आकाश हो या पानी की रिमझिम का मधुर शब्द - कई लोग ऐसे समय में देर तक सोने में आनन्द का अनुभव करते हैं। यह निश्चय ही हानिकारक है। सूरज उगने के समय से एक घड़ी (ढाई घण्टा) पहले हमें अवश्य बिस्तर छोड़ देना चाहिये तथा सौच आदि से निवृत्त हो तिल्ली या सरसों के तेल की मालिश कर

हल्का व्यायाम करना चाहिए।

3. वर्षा में वायु के विकार अधिक कष्ट देते हैं तथा अग्निबल क्षीण रहने से कफ तथा पित्त भी उपद्रव कर सकते हैं। इसलिये बिस्तर से उठते ही एक गिलास उबले जल को ठंडाकर उसमें दो-तीन चम्मच नींबू का रस और तीन-चार चम्मच शहद डालकर सेवन करना अत्यन्त लाभकर है। इससे पेट साफ रहता है तथा पाचन शीघ्र बिगड़ता नहीं। जिन्हें नींबू अनुकूल न हो, वे पाँच लौंग पानी में पीसकर और शहद मिलाकर ले सकते हैं।

4. जिन्हें वर्षा के दिनों में शरीर में पीड़ा बनी रहती हो, उन्हें गर्म जल से स्नान प्रारम्भ कर देना चाहिये। इसी प्रकार नम हवा में और वर्षा में भीगते हुए सोना कदापि हितकर नहीं है, विशेषतया बच्चों को इनसे अवश्य बचाना चाहिये।

5. कलेवे में गुड़ से बनी लापसी, शहद, हरी मिर्च डालकर घी में बनायी उपमा या नमकीन दलिया अथवा हरी मिर्च, नींबू और राई से स्वादिष्ट बने पोहे खाकर ऊपर से गर्म दूध या अन्य उष्ण पेय ले सकते हैं। जिस दिन बादल घिरे हों, पानी बरस रहा हो, झड़ी लग रही हो उस दिन का भोजन गर्म प्रकृति का हलका लवण रसयुक्त तथा घृत-तेल से सिद्ध किया हुआ विशेष अनुकूल रहता है। सामान्य रूप से पुराना अन्न, पुराने चावल, मूँग, परवल, नींबू, हरी मिर्च, अनार, नारियल, चीनी आदि से बने आहार का सेवन करना चाहिये। भोजन के साथ पुराने द्राक्षासव का सेवन भी लाभप्रद है।

6. जहाँ जलशोधन की व्यवस्था नहीं है, वहाँ पीने का पानी उबालकर ही उपयोग में लेना चाहिये तथा तालाब के पानी का प्रयोग न कर कुएँ का पानी पीने के काम में लेना हितकर है। कदाचित् पानी गंदा हो तो उसे निर्मली अथवा फिटकरी फेरकर साफ कर लेना चाहिए।

7. बरसात के दिनों में कीचड़, पानी, गर्म भाप आदि के कारण खुले पैर नहीं घूमना चाहिये। कपड़ों को धूप दिखाते रहना चाहिये तथा पहनते समय झटककर पहनना चाहिये जिससे कोई बरसाती कीड़ा छिपा न रह जाय। रात में चारपाई बिछाकर तथा मच्छरदानी लगाकर सोना चाहिये। गूगल चन्दन, देवदारू, अगरू और कपूर की धूप तैयार कर प्रातः - सायं घरों को धूपित करना इस ऋतु में बहुत लाभदायक है। इससे कृमि, कीटादिक दूर होकर वातावरण स्वच्छ और सुगन्धित हो जाता है। गहरी घास में अथवा बगीचे या जंगल में विचरण करते समय पूरी सावधानी से चलना चाहिये। हाथ में छतरी या लकड़ी अवश्य रखें, इससे आप किसी भी जीव-जन्तु से रक्षा पाने में सहायता पायेंगे।

8. अपने देश में इस मौसम का बहुत प्यारा तथा लोकप्रिय व्यायाम है - झूला झूलना। यह छोटे-बड़े, स्त्री-पुरुष सभी

के लिये मनोरंजक और लाभदायक है । हरे-भरे वन-उपवन में मजबूत वृक्ष की शाखा पर झूला बाँधकर स्वच्छन्द पेंग बढ़ाना कितना आनन्दप्रद है , यह वही बता सकता है जिसने यह आनन्द लिया है । झूला झूलना फेफड़ों की उत्तम कसरत है, साथ ही इससे माँसपेशियाँ मजबूत होती है, रक्तशुद्ध होकर वर्ण का रंग निखरता है, नेत्रों की ज्योति बढ़ती है, भूख बढ़ती है तथा पाचन क्रिया सुधरती है । इसके साथ ही इस व्यायाम से निर्भयता तथा मन में उत्साह और प्रसन्नता उत्पन्न होती है । किन्तु ध्यान रहे, गर्भवती स्त्रियाँ, बहुत दुर्बल व्यक्ति तथा रोगों से अभी-अभी स्वास्थ्य लाभ किये हुए व्यक्तियों को यह व्यायाम नहीं करना चाहिए ।

9. वर्षा ऋतु में पाचन की गड़बड़ी का अनुभव होते ही सौंफ का अर्क, पीपरमेन्ट का अर्क, अजवायन का अर्क और कपूर का अर्क मिलाकर या पृथक् रूप से सेवन करना चाहिए । नींबू, पोदीना और हरी मिर्च इस मौसम में अवश्य उपयोग में लेते रहना चाहिए । इस ऋतु में पाचन बिगड़कर अथवा जलवायु के दोष से पेचिश पैदा होते देर नहीं लगती । पेचिश में बारंबार शौच के साथ आँव और अक्सर खून भी आने लगता है तथा पेट में ऐठन या मरोड़ हो-होकर शौच जाने की शंका बनी रहती है । प्रायः ज्वर भी हो जाता है तथा इसकी सँभाल न करें तो आँतों में चिरकारी सूजन और घाव हो जाते हैं । इसलिये पेचिश से बचने के लिये आहार पर अधिक ध्यान देना चाहिये । सड़ा-गला बासी भोजन, बाजार में खुले बर्तनों में बिकने वाले खाने के पदार्थ या वे फल जिन पर मक्खियाँ बैठा करती हैं, तले हुए चटपटे पदार्थों का अति सेवन तथा गंदे जलाशयों का पानी पीना- ये सभी पेचिश को उत्पन्न कर सकते हैं । पेचिश होते ही अन्य भोजन बंदकर ताजी छाछ, साबूदाना या दही-खिचड़ी का आहार लेना चाहिये तथा पिसी हुई सौंफ में मिश्री मिलाकर या बेलगिरी के चूर्ण में ईसबगोल की भूसी मिलाकर पाँच-पाँच ग्राम की मात्रा में छाछ से या सौंफ के अर्क से लेना प्रारंभ कर देना चाहिये । फिर तुरंत योग्य चिकित्सक को बताकर उसकी सम्मति के अनुसार व्यवस्था करनी चाहिये। सोंठ, सौंफ और मिश्री-समान भाग चूर्णकर भोजन के बाद चार-चार ग्राम की मात्रा में जल के साथ लेने से पाचन नहीं बिगड़ने पाता ।

10. कभी-कभी पेचिश के सम्बन्ध में बताये गये कारणों से ही हैजा भी प्रारम्भ हो जाता है । इसलिये ज्यों ही किसी व्यक्ति को उल्टी-दस्त, ठंडा पसीना आना, हाथ-पैरों में ऐंठन, आँखे धँसी -सी लगना, पेशाब बंद होना आदि लक्षण दिखायी दें तो तुरंत उसे चिकित्सालय में पहुँचा देना चाहिए ।

11. इस ऋतु में मच्छरों और नमीयुक्त वातावरण के दोषों से मलेरिया बुखार भी हो

जाता है, अतः इसका भी योग्य उपचार प्रारम्भ कर देना आवश्यक है । तुलसी की चाय, बेलपत्र दूध में उबालकर या अदरक और बड़ी इलायची की चाय-ये तीनों पेय बरसात के विकारों से बचाकर रखने में बड़े ही उपयोगी हैं ।

12. जिन-जिन स्थानों पर अधिक कीचड़ रहता हो या कूड़ा-कचरा जमा होकर सड़ता हो या पालतू जानवरों के कारण गंदगी रहती हो - उन सभी को साफ और कम-से-कम गीला रखने का सदैव प्रयत्न करें तो हम आस-पास की गंदगी से होने वाले रोगों से बच सकते हैं।

इस तरह सावधानी रखते हुए दिनचर्या, आहार-विहार आदि का पूरा ध्यान रखें तो इस सुन्दर मौसम में हम अपने स्वास्थ्य को अच्छा रख सकेंगे तथा इस ऋतु का पूरा आनन्द भी ले सकेंगे ।

सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति, युगप्रभावक राष्ट्रसंत पूज्य
आचार्यदेवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज द्वारा संस्थापित

श्री यतीन्द्रजयन्त ज्ञानपीठ
(परीक्षा तिथि 31 जुलाई 2016)

श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ द्वारा इस सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना का प्रारंभ किया गया है । ज्ञानपीठ के पांचो पाठ्यक्रमों में 80 प्रतिशत एवं उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले समस्त प्रतिभागियों का बहुमान क्रमशः रु. 150, रु. 200, रु. 250, रु. 500 एवं रु. 1000 के पारितोषित से श्री यतीन्द्र जयन्त ज्ञानपीठ द्वारा किया जायेगा ।

हार्दिक अनुमोदना

सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति, जिनशासन सम्राट, युगप्रभावक, राष्ट्रसंत प.पू. आचार्य देवेश
श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराजा
की पावन प्रेरणा एवं शुभाशीर्वाद से
सम्यग् ज्ञान अभिवृद्धि योजना
आगामी तीन वर्षों के
संपूर्ण लाभार्थी
पू. मातुश्री विजयाबेन बचुभाई चिमनलाल धरू
परिवार (पेपराल-थराद)

जिनालय में प्रवेश व पूजा का क्रम

(संकलन- मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी)

* निसीह उच्चारण से जिनालय में प्रवेश करें।
* जिनेश्वर देव का मुखारविंद दिखते ही दोनों हाथ जोड़कर 'नमो जिणाणं' कहकर प्रभु को वंदन करें।
* अर्धावतन प्रणाम करके तीन प्रदक्षिणा करें।
* मधुर कंठ से प्रभु की स्तुति करें।
* दूसरी निसीहि कहकर गर्भ द्वार में प्रवेश करें।
* प्रतिमाजी पर मोर पीछी करना।
* पानी के कलश से भीगा हुआ केशर निकालना।
* आवश्यकता हो तो खस कूंची आदि का प्रयोग करना।
* पंचामृत से अभिषेक करके शुद्ध जल से अभिषेक करें।
* अभिषेक के समय घंटनाद करें।
* पबासन को पाट लूछणा से साफ करना, पाट लूछणा दो रखें, एक पबासन को पोंछने के लिये तथा दूसरा नीचे का खान पोछने हेतु।
* परमात्मा के अंगों को तीन बार विभिन्न अंग लूछणों से पोंछना।
* आवश्यकता अनुसार तांबे की कील का उपयोग किया जा सकता है।
* बरास द्वारा विलेपन पूजा करनी चाहिए।
* चंदन पूजा, पुष्प पूजा, धूप, दीप, अक्षत, नैवेद्य, फल पूजा आदि क्रमानुसार करना।
* नाद पूजा के रूप में घंटनाद करना।
* चामर नृत्य करना।
* दर्पण नृत्य करना।
* दर्पण में प्रभु का मुख देखकर अपनी आत्मा को परमात्मा स्वरूप से भावित करना।
* यथास्थान अवस्थात्रिक की भावना करनी चाहिए।
* तीसरी निसीहि बोलकर दुप्पट्टे के किनोर से तीन बार नीचे की भूमि का प्रमार्जन करके चैत्यवंदन आरंभ करना।
* चैत्यवंदन में दिशा त्यागत्रिक, आलम्बनत्रिक, मुद्रात्रिक और प्रणिधानत्रिक का पालन करना।
* पुनः स्तुति बोलना।
* पूजा के उपकरण यथा स्थान रखना चाहिए।
* प्रभु की ओर पीठ न पड़े इस प्रकार बाहर वापस आना।
* जिनालय के चबूतरे पर बैठकर तीन नवकार का स्मरण कर भक्ति भावना को स्थिर करना।
* परमात्मा के वियोग में पीड़ित हृदय से स्वगृह की ओर वापस लौटना।

घर में कभी न रखें ये वस्तुएँ ...

अगर अचानक आपके दिन बदलने लगें, अच्छे दिन बुरे दिनों में बदल जाएँ तो आप सम्भल जाएँ। अगर आपके साथ ऐसा होने लगे तो अपने ही घर में रखी चीजों पर ध्यान दें। अक्सर घर में रखी कुछ चीजें एक समय के बाद बुरा असर देने लगती हैं।

भारतीय वास्तुशास्त्र अनुसार घर में क्या रखना चाहिए और क्या नहीं ? यह जानना जरूरी है। कई बार एक छोटी सी वस्तु से ही व्यक्ति का भाग्य रुका रह जाता है या उसको किसी प्रकार की विपत्ति का सामना करना पड़ता है। याद रखें निर्जीव वस्तु में अपनी एक ऊर्जा होती है।

इस बार हम बताने जा रहे हैं कि ऐसी कौन-सी वस्तुएँ हैं, जो घर में नहीं रखना चाहिए जिससे घर में नकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है और जीवन दुःखमयी बन जाता है। अंतिम पांच वस्तुओं के बारे में आप जानकर हैरान रह जाएंगे।

टूटी-फूटी वस्तुएँ :- टूटे-फूटे बर्तन, दर्पण, इलेक्ट्रॉनिक सामान, तस्वीर, फर्नीचर, पलंग, घड़ी, दीपक , झाड़ू, मग, कप आदि कोई सा भी सामान घर में नहीं रखना चाहिए। इससे घर में नकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है और व्यक्ति मानसिक परेशानियाँ झेलता है। यह भी माना जाता है कि इससे वास्तुदोष तो उत्पन्न होता ही है, लक्ष्मी का आगमन भी रुक जाता है।

ये तस्वीरें न रखें :- कहते हैं कि महाभारत युद्ध का चित्र, नटराज की मूर्ति, ताजमहल का चित्र, डूबती हुई नाव या जहाज, फव्वारे , जंगली जानवरों के चित्र और कांटेदार पौधों के चित्र घर में नहीं लगाना चाहिए।

कहते हैं कि इससे मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है और लगातार इन चित्रों को देखते रहने से नकारात्मक भावों का ही विकास होता है जिसके चलते हमारे जीवन में अच्छी घटनाएँ घटना बंद हो जाती हैं।

कहा जाता है कि महाभारत एक युद्ध का चित्र है जिससे घर में क्लेश बढ़ता है। नटराज की मूर्ति या चित्र में शिव तांडव नृत्य मुद्रा में दर्शाए गए हैं, जो कि विनाश का प्रतीक है इसलिए इसे घर में नहीं रखना चाहिए। ताजमहल एक कब्रगाह अर्थात यह मौत से जुड़ा है इसलिए इसके रहने से भी मानसिकता नकारात्मक हो जाती है। डूबते

जहाज का चित्र आपके सौभाग्य को भी डुबो देगा । इससे रिश्तों में बदलाव आ जाता है ।

फव्वारे के चित्र का असर यह होगा कि जिस घर में समृद्धि या पैसा आता है उसी तरह वह व्यर्थ बह जाएगा । बहते पानी के साथ आपका पैसा भी बह जाएगा । उसी तरह जंगली या हिंसक जानवरों के चित्र लगाने से आपके घर के लोग भी उसी स्वभाव के होने लगेंगे । कैक्टस या काटों भरे पौधों का चित्र भी आपके जीवन में कांटे बो देगा ।

चित्र या तस्वीर लगाते वक्त ध्यान रखें वास्तु का । यदि कलाकृत्तियों के नाम पर कुछ ऐसी वस्तुएँ या पेटिंग हैं जिसमें सूखे ठूंठ हो, मानवरहित उजाड़ शहर हो, बिखरा हुआ घर हो, सूखा पहाड़ हो या वे सभी मृतप्रायः सजावटी वस्तुएं हों, जो मानी तो जाती हैं कलात्मक लेकिन वास्तुशास्त्र अनुसार ये सभी नकारात्मक ऊर्जा पैदा करती हैं ।

पुराने या फटे कपड़े की पोटली :- अक्सर लोग घरों की अलमारी या दीवान में फटे-पुराने कपड़ों की एक पोटली रखते हैं । हालांकि कुछ लोग जो कपड़े अनुपयोगी हो गए उनको कबर्ड या अलमारी के निचले हिस्से में रख छोड़ते हैं ।

फटे-पुराने कपड़ों या चादरों से भी घर में नकारात्मक मानसिकता और ऊर्जा का निर्माण होता है । इस तरह के वस्त्रों को किसी को दान कर देना चाहिए या इसका किसी और काम में उपयोग करना चाहिए।

कबाड़ कर देता है जीवन का कबाड़ा :- अक्सर देखा गया है कि लोग घर में अटाला या कबाड़ जमा कर रखते हैं । इसके लिए एक कबाड़खाना अलग से होना चाहिए। पुराने या टूटे जूते-चप्पल आपको आगे बढ़ने से रोक देते हैं। इन्हें भी घर से निकाल दें ।

घर की छत :- वास्तु के अनुसार घर की छत पर पड़ी गंदगी भी पैसों की तंगी को बढ़ा सकती है । परिवार की बरकत पर बुरा प्रभाव पड़ता है । ध्यान रखें कि घर की छत पर कबाड़ा अथवा फालतु सामान हरगिज न रखें । कबाड़ा व फालतु सामान रखने से परिवार के सदस्यों के मन-मस्तिष्क पर दबाव पड़ता है । माना जाता है कि इससे पितृ दोष भी उत्पन्न हो जाता है ।

पर्स या तिजोरी :- पर्स फटा न हो और तिजोरी में धार्मिक और पवित्र वस्तुएँ रखें जिनसे सकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है और जिन्हें देखकर मन प्रसन्न होता है ।

पर्स में चाबियाँ या किसी भी प्रकार की अपवित्र वस्तुएँ न रखें । पर्स में भगवान के

चित्र रख सकते हैं । इसी तरह तिजोरी में रुपयों के अलावा आप सोना, चांदी या जेवरात ही रख सकते हैं । चैक बुक, पासबुक, पैसे के लेन-देन संबंधी कागजात, पूंजी निवेश संबंधी कागजात भी रख सकते हैं ।

पूजा की सुपारी, श्रीयंत्र, कुबेर यंत्र आदि भी रख सकते हैं ।

टूटी या खुली अलमारी :- किताबें रखने या कुछ छोटा-मोटा सामान रखने वाली अलमारियों को बंद करने का दरवाजा नहीं है या उनमें कांच नहीं लगा है तो वह खुली मानी जाएगी । माना जाता है कि ऐसी अलमारी के होने से हर तरह के कार्यों में रुकावट आती है और धन भी पानी की तरह बह जाता है ।

सजावटी वस्तुएँ या कलाकृतियाँ :- कुछ लोग घर को कलात्मक लुक देने के लिए नकली या कांटेदार पौधे लगा लेते हैं अतः घर में कांटेदार पेड़-पौधे न लगाएं, इससे पारिवारिक संबंधो में भी कांटों-की-सी चुभन पैदा होने लगती है । कई लोग पुरानी या फालतु चीजों से भी अपना घर सजाते हैं, जो कि गलत है । ऐसी वस्तुएँ घर में नकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देती हैं । वास्तु के अनुसार जब घर में नकारात्मक ऊर्जा में बढ़ोत्तरी होती है तो इसका सीधा असर परिवार की आर्थिक स्थिति पर भी पड़ता है । इसके साथ ही स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी हो सकती हैं ।

सोफा, कुर्सी और टेबल :- आपके घर में टूटी हुई चेयर या टेबल पड़ी है तो उसे तुरंत घर से हटा दें । ये आपके पैसों और तरक्की को रोक देती है । बैठक रूम का सौफा भी फटा या टूटा हुआ नहीं होना चाहिए । उस पर बिछाई गई चादर भी गंदी या फटी नहीं होना चाहिए ।

मकड़ी का जाला :- घर में बनने वाले मकड़ी के जाले तुरंत हटा दें इनसे आपके अच्छे दिन बुरे दिनों में बदल सकते हैं । अक्सर लोगों के घर के किसी कोने के ऊपरी हिस्से में जाले लग जाते हैं।

कुछ लोग उनको हटाने से डरते है क्योंकि इससे किसी के घर को तोड़ने का आभास होता है लेकिन मकड़ी जाला रहने के लिए नहीं शिकार को फंसाने के लिए बनाती है । अतः माना जाता है कि यह जाला होना तो अनुचित ही है ।

प्लास्टिक का सामान :- आजकल प्लास्टिक का प्रचलन बढ़ गया है । आटे का डब्बा,रोटी का डब्बा, चम्मच, चाय का डब्बा, पानी की बोतल, मसाले आदि के छोटे-छोटे डब्बे आदि कई सामान प्लास्टिक के आने लगे हैं । प्लास्टिक की

थेलियां भी बहुत से घरों में इकट्ठी करके रखी जाती हैं।

प्लास्टिक की अधिकता से घर में नकारात्मक ऊर्जा का निर्माण तो होता ही है यह स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है। लगातार प्लास्टिक की बोतल में पानी पीना या प्लास्टिक की प्लेट में भोजन करने से हमारे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है। जिस तरह पीतल या तांबे के ग्लास से पानी पीने से उसके तत्व हमारे शरीर में जाते हैं उसी तरह प्लास्टिक की बोतल से पानी पीने से उसमें मौजूद विशाक्त तत्व हमारे शरीर में पहुंचते हैं। वैज्ञानिक कहते हैं कि प्लास्टिक कैंसर का भी कारण बन सकता है। प्लास्टिक मूल रूप से विषैला या हानिप्रद नहीं होता। परन्तु प्लास्टिक के थैले या अन्य वस्तुओं को रंग और रंजक, धातुओं और अन्य तमाम प्रकार के अकार्बनिक रसायनों को मिलाकर बनाया जाता है।

पत्थर, नग या नगीना :– कई लोग अपने घर में अनावश्यक पत्थर, नग, अंगुठी, ताबिज या अन्य इसी तरह के सामान घर में कहीं रख छोड़ते हैं। यह मालूम नहीं रहता है कि कौन-सा नग फायदा पहुंचा रहा है और कौन-सा नग नुकसान पहुंचा रहा है। इसीलिए इस तरह के सामान को घर से बाहर निकाल दें।

घर की खिड़की या दरवाजे से नकारात्मक वस्तुएं दिखाई देती हैं जैसे सूखा पेड़, फैक्टरी की चिमनी से निकलता हुआ धुआं आदि। ऐसे दृश्यों से बचने के लिए खिड़कियों पर पर्दा डाल दें।

घर के मुख्य द्वार के सामने या पास में बिजली का खंभा या ट्रान्सफॉर्मर लगा है तो इससे नकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होगा। इससे घर के सदस्यों को अपने कार्यों में हर जगह रुकावट और असफलता का सामना करना पड़ेगा।

घर के आसपास यदि कोई सूखा पेड़ या ठूंठ है, तो उसे तुरंत हटा देना चाहिए। घर के आस-पास कोई गंदा नाला, गंदा तालाब, श्मशान घाट या कब्रिस्तान नहीं होना चाहिए। इससे भी वातावरण में बहुत अधिक फर्क पड़ता है।

* मनुष्य को किसी भी वस्तु की प्राप्ति अपनी योग्यता के अनुसार होती है इच्छा के अनुसार नहीं।
* यदि हम अपने शत्रु को प्यार न भी कर सकें, तो कम से कम अपने आप को तो करें। हमें अपने को इतना प्यार करना चाहिए की हमारे शत्रु हमारे सुख स्वास्थ्य तथा आकृति पर काबू न पा सकें।

माँ तो माँ होती है

(एस.सी. कटारिया)

पति के घर में प्रवेश करते ही पत्नी का गुस्सा फूट पड़ा । पूरे दिन कहाँ रहे ? आफिस में पता किया, वहाँ भी नहीं पहुँचे । आखिर मामला क्या है ?

वो-वो...मैं...पति की हकलाहट पर झल्लाते हुए पत्नी फिर बरसी-बोलते क्यों नहीं ? कहाँ चले गये थे ? ये गंदा थैला और कपड़ों की पोटली किसकी उठा लाये ?

वो मैं माँ को लाने गाँव चला गया था । - पति थोड़ी हिम्मत करके बोला ।

क्या कहा ? तुम्हारी माँ को यहाँ ले आये ? शर्म नहीं आई तुम्हें ?

तुम्हारे भाईयों के पास इन्हें क्या तकलीफ है ?

आग बबूला थी पत्नी । उसने पास खड़ी फटी सफेद साड़ी से आँखें पोंछती बीमार वृद्धा की तरफ देखा तक नहीं ।

इन्हें मेरे भाईयों के पास नहीं छोड़ा जा सकता । तुम समझ क्यों नहीं रहीं । पति ने दबी जुबान से कहा ।

क्यों ? यहाँ कुबेर का खजाना है ? तुम्हारी सात हजार रुपट्टी की पगार में बच्चों की पढ़ाई और घर खर्च कैसे चला रही हूँ, मैं ही जानती हूँ । पत्नी की आवाज उतनी ही ऊँची थी ।

अब ये हमारे पास ही रहेंगी । पति ने जरा कठोरता अपनाई ।

मैं कहती हूँ, इन्हें इसी समय वापस छोड़कर आओ, वरना मैं इस घर में एक पल भी नहीं रहूंगी । इन महारानीजी को भी यहाँ आते जरा भी लाज नहीं आई ? कहते हुए पत्नी ने बूढ़ी औरत की तरफ देखा तो पाँव तले जमीन ही सरक गयी । झेंपते हुए पत्नी बोली- माँ । तुम ? हाँ बेटी । तुम्हारे भाई और भाभी ने मुझे घर से निकाल दिया है, दामाजी को फोन किया तो ये मुझे यहाँ ले आये । बुढ़िया ने कहा तो पत्नी ने गद्‌गद् नजरों से पति की ओर देखा और मुस्कुराते हुए बोली आप भी बड़े वो हो । पहले क्यों नहीं बताया कि मेरी माँ को लाने गये थे ?

पति ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा, इन दिनों नींद में मुझे अजीब-अजीब सपने दिखाई देने लगे हैं । कभी मैं तुम्हारे लिए हीरे जड़े हुए जेवरों के सैट खरीदता हूँ और कभी वेशकीमती साड़ियाँ।

दुःख की बात तो यही है कि आप सपने में ही ठीक-ठीक सोच पाते हैं। पत्नी ने उलाहना देते हुए कहा।

वर्ग पहेली -49

(साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

5			6			
		7		8		9
	10		11		12	
13						
14				15	16	
			17			

दाएँ से बाएँ -

1. नवपद के आराधक एक प्रसिद्ध महापुरुष ? (3)
3. महावीरस्वामी भगवान के परमभक्त एक राजा का नाम ? (3)
5. दस यतिधर्म में प्रथम यतिधर्म का नाम ? (2½)
6. श्री आदिनाथ भगवान का प्रथम पारणा किसने कराया ? (3½)
8. आदिनाथ भगवान की प्रजा जड़ और क्या थी ? (3)
10. सब्जी में क्या लगने पर खांसी और छींक आति है ? (3)
12. मल्लिनाथ भगवान एवं पार्श्वनाथ भगवान का वर्ण कौन सा है ? (2)
13. प.पू. आचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की माता का नाम क्या है ? (4)
14. युगलिक काल में हकार के बाद कौनसी नीति आई ? (3)
15. स्थूलिभद्रजी की बहन का नाम जिसे दो बार सुनने से याद हो जाता है ? (2)
17. प्रसिद्ध आयुर्वेद महर्षि का नाम ? (3)

ऊपर से नीचे

1. ग्रीष्म ऋतु में कौनसी मिठाई सबसे अधिक प्रसिद्ध है ? (3)
2. डाली के संग ? (2)
3. चौवीस तीर्थंकर प्रभु में गेंडे का लांछन (चिन्ह) कौन से भगवान का है ? (3)
4. चढ़ने उतरने का एक माध्यम ? (4)
7. महासती चंदनबालाश्रीजी की शिष्या का नाम ? (4)
9. इच्छा, चाहना, तृष्णा का पर्यायवाची ? (3)
10. सामान भरने का एक साधन ? (3)
11. कामदेव की स्त्री का नाम ? (3)
13. भिखारी, बिचारा, निम्न, तुच्छ का पर्यायवाची ? (3)
15. कमठ ने परमात्मा के साथ किसकी परंपरा चलाई ? (2)
16. पाँच इन्द्रियों में से एक का नाम ? (2)

वर्ग पहेली उत्तर सीट - 48

1 नि	2 गो	द		3 ते	र	4 ह
5 क्षे	प		6 वा	त		ठ
7 प	नी	8 र		9 ली	न	
	10 य	म		11 पु	र	
12 सं		13 ण	14 क्ष	त्र		15 गौ
16 सा	17 चि		मा		18 श	त
19 र	ता	लु		20 अ	म	म

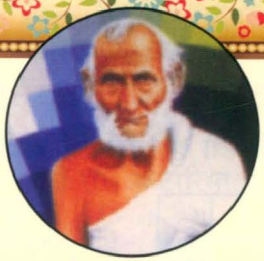

ગુર્જર જૈન જ્યોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

વિરલ વિભૂતિ વાચન વાચસ્પતિ પરમ પૂજ્ય આચાર્ય દેવેશ શ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ધ્વારા સ્થાપિત "શાશ્વત ધર્મ હિન્દિ માસિક" ને "શાશ્વત" બનાવવા અતિ ભગીરથ પુરૂષાર્થ કરી જૈન સમાજના ઘેરે ઘેરે વાંચતુ કરવા અને માર્ગદર્શન આપી અતિ લોકપ્રિય બનાવવા અદકેરૂં દાયિત્વ પુરૂં પાડનાર સમસ્ત જીવ પ્રત્યે મૈત્રી રાખવાવાળા. વચનસિધ્ધ, મોક્ષ માર્ગના મુસાફર દિવ્ય સિધ્ધિઓના સ્વામી સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રેરણાથી "શાશ્વત ધર્મ હિન્દિ માસિક" માં ગુર્જર જૈન જ્યોત ગુજરાતી વિભાગનો જાન્યુઆરી-૨૦૧૫ થી શુભારંભ કરાયો હતો જે માટે અત્યારે સંખ્યા બધ્ધ ગુજરાતી વાંચકો તરફથી ફોન ધ્વારા શુભેચ્છા પાઠવવામાં આવી રહી છે. જે વચન સિધ્ધ પૂજયશ્રીનમ પુણ્ય પ્રભાવ છે. સમાજના ઘરેણા સ્વરૂપ "શાશ્વતધર્મ હિન્દિ માસિક" ગુજરાતના ઘેરે ઘેરે ગુંજતુ થઈ લોકપ્રિય બની આગેકૂચ કરી રહ્યું છે.

"શાશ્વતધર્મ હિન્દિ માસિક - ગુર્જર જૈન જ્યોત"
પરિવાર સમસ્ત વાંચક મિત્રોની શુભેચ્છાનો
સ્વીકાર કરી આભાર માને છે.
લિ. ગુજરાતી સંપાદક - સુરેશ સંઘવી-નડીઆદ

માળવાની ધન્ય ધરા પર પૂજ્યશ્રીની ધમાકેદાર એન્ટ્રી

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પધરામણીથી સમસ્ત માળવામાં ઉત્સાહનું મોજુ...!!!

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ સંવત ૨૦૭૨ ના વૈશાખ વદ-૧૩ ને શુક્રવાર તા. ૩-૬-૨૦૧૬ ના રોજ મંગલ પ્રભાતે શિષ્ય સમુદાય અને સાધ્વીજી મંડળ સાથે હજ્જારો સમાજજનોની હોંશિલી હાજરી વચ્ચે માળવાની ધન્ય ધરા પર ધમાકેદાર એન્ટ્રી કરી હતી. અને રંગે ચંગે-વાજતે-ગાજતે, ભવ્ય સામૈયા સાથે ધામધૂમપૂર્વક ઐતિહાસિક ભવ્યાતિભવ્ય માળવાની ધરતી પર પ્રવેશ કરાવાયો હતો. માળવાની સીમા થાંદલા નજીક ખજુરી ખાતે શ્રધ્ધાવંત ગુરૂ ભક્તોનો માનવ મહેરામણ ઉભરાયો હતો. માળવાની ધન્ય ધરા જય જયકાર - જય જયકાર રાષ્ટ્રસંતની જય જયકારથી ગુંજી ઉઠી હતી.

પ્રભુ મહાવીરના ૭૨મા પટ્ટધર, દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા.ના છઠ્ઠા પટ્ટધર, શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના પરમોપકારી, લાખો ભક્તોના હૃદય સમ્રાટ, સમર્થ, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. સપરિવારની ઘણા લાંબા સમય બાદ, માળવાના ગામો-ગામ-નગરો-નગર ધર્મપ્રભાવના કરવા સાથે મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૫ માં નિશ્રા પ્રદાન અને રતલામ નગરે ચાતુર્માસ માટે પધરામણી થતાં માળવાવાસીઓમાં આનંદની અમી વર્ષા થઈ ગઈ હતી અને હરખની હેલી વરસી ગઈ હતી. પૂજ્ય શ્રી સપરિવારના પાવન પગલે માળવાના દરેક ગામો-નગરો ગુરૂભક્તિમ બની ગયા હતા. ધર્મસભામાં ભક્તો ઉમટી પડ્યા હતા. જ્યાં પૂજ્યશ્રીએ પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું.

માળવા પ્રવેશ સમયે ધર્મ સભાની તસ્વીરી ઝલક

૫-જુન મેઘનગર પ્રવેશ

આજે મેઘનગર વાસીઓના હૈયાં હેલે ચડ્યા હતા. આજે સવારે પૂજ્યશ્રી સપરિવારે મેઘનગર ખાતે પધરામણી કરી હતી મેઘનગરમાં કિર્તિમાન સામૈયા સાથે ભવ્યાતભવ્ય પ્રવેશ કરાવાયો હતો. પૂજ્યશ્રીના પાવન પગલે ભવ્ય શોભાયાત્રાનું આયોજન કરાયું હતું. આ શોભાયત્રા મુખ્ય માર્ગ પર ફરી ઉપાશ્રય ખાતે આવી પહોંચી હતી જ્યાં શોભાયાત્રા ધર્મસભા રૂપમાં પરિવર્તન પામી હતી. ત્યાં પૂજ્યશ્રીએ પ્રેરણાદાક પ્રભાવક પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું.

બ્રજેશ બોહરા

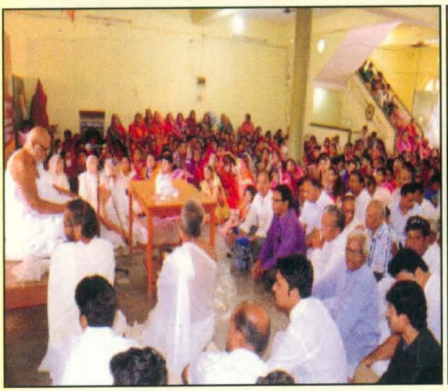

૬-જુન જાબુઆ

મેઘનગર જેવું જ ઉત્સાહનું મોજું જાબુઆના ભક્તોમાં ફરી વળ્યું હતું. ભક્તોનો ઉત્સાહ સમાતો ન હતો. સવારે પૂજ્યશ્રી આદિઠાણાએ વિહાર કરી જાબુઆ ખાતુ પધરામણી કરી હતી. જ્યાં ભવ્યાતિભવ્ય સામૈયા સાથે પૂજ્યશ્રીને વધાવ્યા હતા. અને કલેકટર અરૂણાજી ગુપ્તાએ ભવ્ય સ્વાગત કર્યુ હતું. જીલ્લા મુખ્યાલય સ્થિતિ જેલમાં કેદીઓને પ્રવચન અને માંગલિક સંભળાવવાનું આયોજન કરાયું હતું.

પૂજ્યશ્રીનું કહેવું હતું કે ઘણા સમયથી કેદીઓને મળવું હતું. એમને મળવાનું કારણ એ હતું કે જેલમાં બંધ કેદીઓ બહાર નીકળી ધર્મનો માર્ગ અપનાવે અને સારૂં જીવન જીવે પૂજ્યશ્રીની મધુરવાણીનું શ્રવણ બધા જ કેદીઓએ કર્યું હતું અને ભાવવિભોર બની ગયા હતા.

બ્રજેશ બોહરા

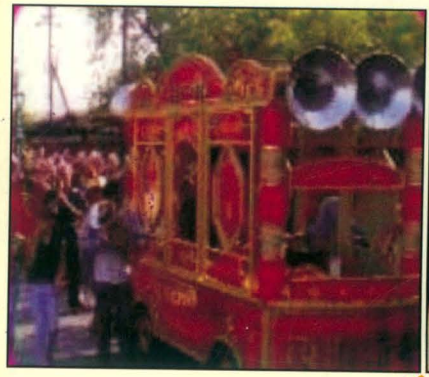

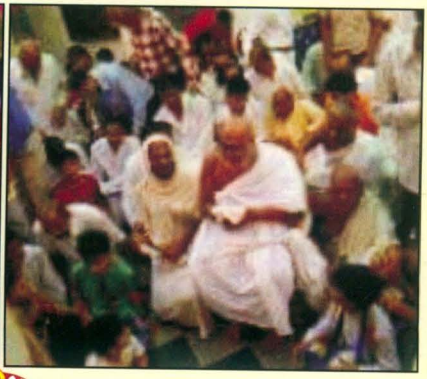

પૂજ્યશ્રીએ શ્રી મોહન ખેડા તીર્થમાં કરી પધરામણી... ગુરૂ દરબારમાં પહોંચી માનતા પુરી કરી

સમર્થ યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ સંવત ૨૦૭૨ ના જેઠ સુદ-૬ ને શુક્રવાર તા. ૧૦-૬-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી મોહન ખેડા તીર્થમાં પધરામણી કરી હતી. અને ગુરૂ દરબારમાં પહોંચી માનતા પુરી કરી હતી.

શ્રી પેપરાલ તીર્થના ચાતુર્માસ બાદ પાલીતાણાના છ'રી પાલક સંઘ અને નવ્વાણુ યાત્રામાં નિશ્રા પ્રદાન કરવા વિહાર કરી રહ્યા હતા તે દરમ્યાન તેઓશ્રીના સ્વાસ્થ્યમાં પ્રતિકુળતા આવતાં તબિયત ઘણી જ બગડી જવા પામી હતી ત્યારે પૂજ્યશ્રીએ દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ને પ્રાર્થના કરી માનતા માની હતી કે આગામી ચાતુર્માસ જ્યાં નિશ્ચિત થાય અને તે ચાતુર્માસ પહેલાં શ્રી મોહન ખેડા તીર્થ પહોંચી દાદા ગુરૂદેવના દર્શન કરી ચાતુર્માસ પ્રવેશ કરીશ. રતલામ નગરના ચાતુર્માસ પ્રવેશ પહેલાં ગુરૂ દરબારમાં જઈ દર્શન-વંદન કરી માનતા પુરી કરી હતી.

ઉલ્લેખનીય છે કે પૂજ્યશ્રી સપરિવાર સહિત મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૫ માં જાબુઆથી જોડાયેલા ૪૦ બાળકો પણ ગુરૂ દરબારમાં પહોંચ્યા હતા અને દર્શન વંદન કરી ધન્યતા અનુભવી હતી. શ્રી રાજેન્દ્ર જયંત પાઠશાળાના ૪૦ બાળકો બાવન જિનાલયના દર્શન કરી જાબુઆ ખાતે બિરાજીત પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી ચારિત્રકલાશ્રીજી મ.સા. ના દર્શન અને માંગલિક સાંભળી ધુલેટ માં પૂજ્યશ્રીના દર્શન કરી મ્યુઝીથ પહોંચ્યા હતા. આ પાઠશાળાના બાળકો સાથે મનોજ સંઘવી, અરવિંદ લોઢા, અશોક સંઘવી, સંદીપ સકલેચા, દર્શન મહેતા વિગેરે રહ્યા હતા.

બ્રજેશ બોહરા

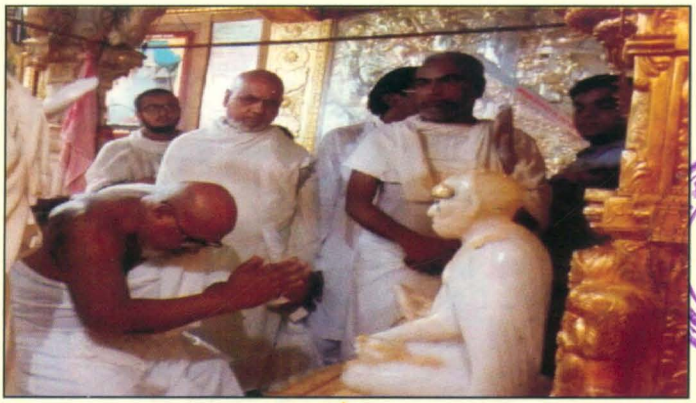

શ્રીરાજ રાજેન્દ્ર જૈન તીર્થ દર્શન જયંતસેન મ્યુઝીયમ મોહન ખેડા રોડ ખાતે... મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૫ ભવ્યાતિભવ્ય રીતે સંપન્ન જ્ઞાનાયતન થી જ્ઞાન ની જ્યોત પ્રજ્વલિત

વર્તમાન સમયમાં ભૌતિકતાની ભરમારમાં બાળકો કુસંસ્કારોએ ન ચઢી જાય તે માટે સમાજની નવી પેઢીમાં ધાર્મિક શિક્ષણ અને સંસ્કારોનું બિજારોપણ અત્યંત જરૂરી જણાતાં મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતનના સંસ્થાપક સમર્થ, યુગ પ્રભાવક, સવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તેમજ તેમના શિષ્યરત્નોની પાવનકારી નિશ્રામાં મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન એટલે જ્ઞાનનું યતન ૧૪ થી ૨૪ વર્ષના તરૂણો અને યુવાનોને ધાર્મિક જીવન, ધાર્મિક શિક્ષણ અને સંસ્કારો મળી રહે તે હેતુએ અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ દ્વારા સંચાલિત મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૫ નું તા. ૧૦ થી ૧૬ જુન દરમ્યાન શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન તીર્થ દર્શન જયંતસેન મ્યુઝીયમ, મોહન ખેડા રોડ (મ.પ્ર.) ખાતે ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું જેમાં ૪૦૦ થી અધિક ધર્મજિજ્ઞાસુ તરૂણો અને યુવાનો એ ભાગ લીધો હતો.

મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન નો શુભારંભ તા. ૨૩-૩-૨૦૧૫ ના રોજથી પૂના ખાતેથી થયો હતો જ્ઞાનાયતન-૨, સુરત-૩, છત્રાલ-૪, ભીનમાલ અને ૫ નું આયોજન મ્યુઝીયમ ખાતે સંપન્ન થયું હતું.

મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૫ માં જોડાયેલા વિદ્યાર્થીઓ સવારે ૫ કલાકે જાગી સામાયિક, ૬ થી ૭ કલાક દરમ્યાન ધાર્મિક પ્રશ્નોતરી, કસરત, ચૈત્યવંદન, ગુરૂ વંદન ત્યારબાદ નવકારશી, નવકારશી બાદ પ્રભુ અભિષેક, કેશર પૂજા, બપોરે ૨ થી ૪ દરમ્યાન તત્વજ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર પર આધારિત પ્રવચનનું શ્રવણ કરી ધન્યતા અનુભવતા હતા. સાંજે અલગ અલગ ખેલ. સાંજે ચૌવિહાર સાંજે ૭ કલાકે પ્રતિક્રમણ ત્યાર પછી સંસ્કાર બૌધ્ધિક શ્રવણ કરતા હતા. કેટલાય વિદ્યાર્થીઓએ મંગળવારના દિવસે ઉપવાસનું પચ્ચખાણ લીધું હતું. જ્યારે ૮ બાળકોએ અઠ્ઠમ નું પચ્ચખાણ લીધું હતું. આ જ્ઞાનાયતન-૫ માં વધુમાં વધુ વિદ્યાર્થીઓએ એકાસણા બિયાસણા, રાત્રિ ભોજન ત્યાગ, બુટ-ચંપલનો ત્યાગ વિગેરે ધાર્મિક ક્રિયાઓ કરી હતી.

મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૫ ના ૪૦૦ થી અધિક વિદ્યાર્થીઓ જ્યારે પૂજશ્રીના આગમન સમયે જયજયકારના ગગનચુંબી નારા લગાવતા હતા ત્યારે મ્યુઝીયમનું પરિસર ગુંજી ઉઠતું હતું અને વાતાવરણ અત્યંત પ્રભુભક્તિમય અને ગુરૂભક્તિમય બની જતું હતું.

જેવા ચશ્મા આંખો પર લગાલેવા હોય ત્યારે તેવી જ દુનિયા નજરે દેખાય છે.

મધુકર સંસ્કાર જ્ઞાનાયતન-૫ ના પાંચમા દિવસે સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. એ તેમની મીઠી મધુર વાણીમાં બાળકોને સંબોધીને પ્રવચન ફરમાવ્યું હતું કે જો ઈન્સાન પોતાને દેખવા મન અંદરનો દૃષ્ટિકોણ બદલી દેતો બહાર એને બધું જ સારું અને સુંદર નજરે દેખાવા લાગશે. કેમ કે આપણે જેવા છીએ એવા જ દરેક જગ્યાએ નજરે આવવાના છીએ કહેવાનો મતલબ એ છે કે જેવા ચશ્મા આંખો પર લગાવેલા હોય ત્યારે તેવી જ દુનિયા નજરે દેખાય છે. સંસારમાં સારા, સજ્જન, સત્કર્મી પુરૂષો પણ છે. તેઓ માત્ર કલ્યાણની ભાવના અને પ્રભુ ભક્તિમાં જ તલ્લીન રહે છે. આપણે પણ તેમના જેવા બનવાનું છે. અને બીજાની ભુલો નીકાળવા કરતાં એમના સારા ગુણો અને ભાવોનો સ્વીકાર કરશું તો આપણો પોતાનો વિકાસ થશે જ. દુનિયા પણ આપણને ખુબસુરત નજરે દેખાશે. જ્ઞાનાયતનના માધ્યમથી તમને જે શીખાડવામાં આવે છે તેનાથી વ્યક્તિગત વિકાસ થશે.

બપોરે સંયમ પર યુવા પ્રવચનકાર પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્નવિજયજી મ.સા. એ પ્રેરણાદાયક પ્રવચન આપ્યું હતું. પ્રભુ ભક્તિ સંગીતકાર દેવેશ જૈન દ્વારા કરાઈ હતી.

બ્રજેશ બોહરા

જ્ઞાનાયતન ની તસ્વીરી ઝલક

જ્ઞાનાયતન ની તસ્વીરી ઝલક

જ્ઞાનાયતન ની તસ્વીરી ઝલક

જ્ઞાનાયતન ની તસ્વીરી ઝલક

ગુરૂ જન્મભૂમિ – તીર્થ ભૂમિ...
શ્રી પેપરાલ તીર્થે શ્રી મધુકર મહાવીર જિનાલય પ્રતિષ્ઠાની પાંચમી વર્ષગાંઠની ભવ્ય ઉજવણી

ગુરૂજન્મ ભૂમિ–તીર્થભૂમિ શ્રી પેપરાલ તીર્થે શ્રી જયંતસેન સૂરિશ્વરજી પ્રભાવક ટ્રસ્ટના ઉપક્રમે શ્રી મધુકર મહાવીર જિનાલયની પાંચમી વર્ષગાંઠની ભવ્ય ઉજવણી કરવામાં આવી હતી.

શ્રી પેપરાલ તીર્થના પનોતા પુત્ર સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રેરણા અને આશિર્વાદથી સંવત ૨૦૭૨ ના વૈશાખ વદ–૬ ને શનિવાર તા. ૨૮–૫–૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી મધુકર મહાવીર સ્વામી જિનાલય પ્રતિષ્ઠાની પાંચમી વર્ષગાંઠની ભવ્ય ઉજવણી કરાઈ હતી.

આ પ્રસંગે સવારે ૬ કલાકે પ્રભાતિયાં ૭–૩૦ કલાકે નવકારશી, સવારે ૧૦ કલાકે સત્તર ભેદી પુજન ૧૨ કલાકે સ્વામીવાત્સલ્ય, બપોરે ૧૨–૩૯ કલાકે ધજાદંડ અને રાત્રિ ભક્તિ ભાવનાના કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. રેવતડા નિવાસી શા. મુનિલાલ મગરાજજી હિરાણી પરિવાર ધ્વારા ધ્વારા ધ્વજાદંડ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. શ્રી સત્તર ભેદી પૂજનમાં પેપરાલ ધરૂ પરિવાર ધ્વારા પ્રભુજીને સોનાની ચેઈન પરિધાન કરાઈ હતી. આ પ્રસંગે જિનાલયને સુંદર રીતે શણગાર કરાયો હતો. તેમજ જિનબિંબ અને ગુરૂબિંબ ને ભવ્ય અને દિવ્ય અંગ રચના કરાઈ હતી. અને દીવાની રોશની કરાઈ હતી. ભક્તિ ભાવનામાં સંગીતકાર કૃનાલ ભાઈએ રમઝટ જમાવી હતી. આ પ્રસંગને દિપાવવા થરાદ, જેતડા, ડીસા, ભોરલ, ધાનેરા, વાસણા, ગેળા, સુરત, અમદાવાદ, મુંબઈ તથા આજુબાજુના ગામોમાંથી શ્રધ્ધાળુભક્તો ઉપસ્થિત રહ્યા હતા. આ પ્રસંગને અત્યંત સફળ બનાવવા અ.ભા. શ્રી રાજેન્દ્ર જૈન નવયુવક પરિષદ શાખા પેપરાલના સભ્યોએ નેત્રદિપક કામગીરી કરી ભારે જહેમત ઉઠાવી હતી.

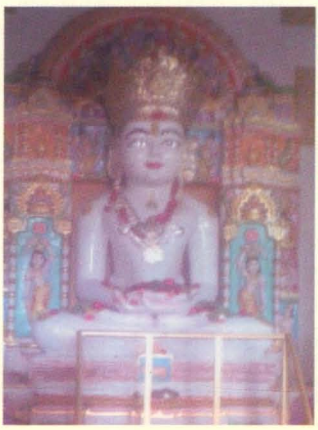

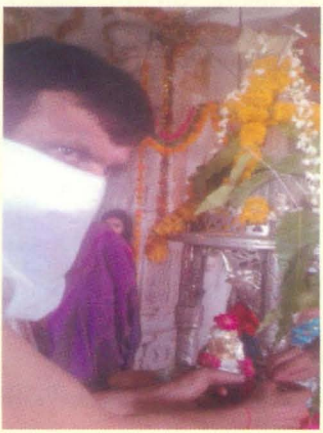

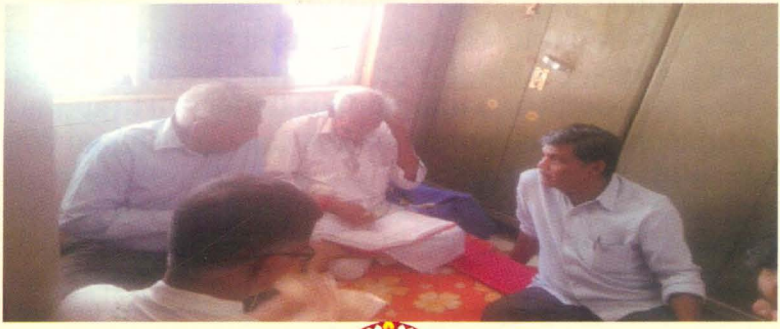

શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી ગુરૂભ્યો નમઃ

"જ્ઞાનનો સાગર"

"વિશ્વનું અજોડ પ્રકાશન"

વિશ્વના દરેક જૈન સંઘો એ વસાવવા જેવો તેમજ દરેક સમુદાયના આચાર્ય ભગવંત, સાધુ ભગવંત, સાધ્વીજી ભગવંત, પંડિતાચાર્યોએ વાંચી મનન અને ચિંતન કરવા જેવો દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્‌વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. વરદ્‌હસ્તે લખાયેલ અલભ્ય ગ્રંથ

"શ્રી અભિધાન રાજેન્દ્ર કોષ"

સાત ભાગ, દશ હજાર પાના, ૬૦ હજાર શબ્દ સમુહ, ૧૦૦ થી વધુ યુક્તિયાં, ૫૦૦ થી વધુ કથાઓ તેમજ સાડાબાર લાખ શ્લોક

દિવ્ય સિધ્ધિઓના સ્વામી સમર્થ, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પ્રેરણાથી પુનઃ પ્રકાશિત થઈ ગયો છે.

આ ગ્રંથમાં સંસ્કૃત અને પ્રાકૃત ભાષામાં અનેક સંદર્ભોને લઈ અનેક સમસ્યાનું સમાધાન તેમજ આગામી ગ્રંથોમાં આવતા તમામ સંદર્ભોનું સ્પષ્ટીકરણ કરવામાં આવેલ છે. આ ગ્રંથ તૈયાર કરવામાં દાદા ગુરૂદેવને ૧૩ વર્ષ, ૬ માસ અને ૩ દિવસનો સમય લાગ્યો હતો.

ઉલ્લેખનીય છે કે અભિધાન રાજેન્દ્રકોષનું ગુજરાતી ભાષાંતર કરી અ-બ વિભાગમાં પૂજ્ય આચાર્યદેવ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ધ્વારા ગુજરાતી પુસ્તક તૈયાર કરાયેલ છે.

પ્રકાશક : શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ શોધ સંસ્થાન ઉજૈન (મ.પ્ર.)

-: પ્રાપ્તિ સ્થાન :-

સમર્થ યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. હસ્તે લેખીત તથા સંકલીત ધાર્મિક પુસ્તકો પ્રકાશન કરતી સંસ્થા

"શ્રી રાજેન્દ્ર પ્રકાશન ટ્રસ્ટ"

શેખનો પાડો, રીલીફ રોડ, અમદાવાદ.

પ્રમુખ : શ્રી નવિનભાઈ મફતલાલ સંઘવી - ૯૮૯૮૪૭૦૭૦૧

ઉ.પ્રમુખ : શ્રી વાઘજીભાઈ ગગલદાસ (વિશ્વાસ) - ૯૮૯૮૦૯૭૧૫૦

કોષ શુભેચ્છા મુલ્ય : રૂા. ૫૦૦૦/-

ગૃપમાં જોડાઓ

માનવ પ્રત્યે મૈત્રી રાખવાવાળા, વચનસિધ્ધ, મોક્ષમાર્ગના મુસાફર, દિવ્ય સિધ્ધિઓના સ્વામી સમર્થ, યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પ્રેરણા અને નિશ્રામાં બારેમાસ યોજાતા ધર્મપ્રભાવક કાર્યક્રમો ને ગૃપમાં જોડાઈ નિહાળો તમારા મોબાઈલમાં વિગતવાર વાંચો શાશ્વત ધર્મ-ગુર્જર જૈન જ્યોતમાં.

-: સંપર્ક :-

બ્રજેશ બોહરા - નાગદા શ્રી સંઘ અને પરિષદના રાષ્ટ્રીય પ્રચારક

મો. ૯૮૨૭૨૪૪૧૭૫ વોટ્સઅપ કરી શકાશે.

સમર્થ યુગપ્રભાવક સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. નો આગામી વિહાર કાર્યક્રમ

તારીખ	ક્યાંથી ક્યાં સુધી	સમય	કિ.મી.
૨૦-૬-૧૬	મ્યુઝીયમ થી રીંગનોદ	સવારે	૬
૨૧-૬-૧૬	–	–	–
૨૨-૬-૧૬	રીંગનોદ થી શ્રી ભોપાવર તીર્થ	સવારે	૬
૨૩-૬-૧૬	–	–	–
૨૪-૬-૧૬	શ્રી ભોપાવર તીર્થ થી રાજગઢ	સવારે	૧૦
૨૫-૬-૧૬	–	–	–
૨૫-૬-૧૬	રાજગઢ થી બોલા	સાંજે	૭
૨૬-૬-૧૬	બોલા થી લાબરીયા	સવારે	૧૬
૨૬-૬-૧૬	લાબરીયા થી બરમન્ડલ	સાંજે	૫
૨૭-૬-૧૬	બરમન્ડલ થી દસઈ	સવારે	૧૬
૨૮-૬-૧૬	દસઈ થી કડોદ	સવારે	૧૫
૨૮-૬-૧૬	કડોદ થી બિડવાલ	સાંજે	૬
૨૯-૬-૧૬	બિડવાલ થી બખતગઢ	સવારે	૧૫
૨૯-૬-૧૬	બખતગઢ થી બદનાવર	સાંજે	૮
૩૦-૬-૧૬	સમતાભવન થી ઉપાશ્રય	સવારે	૨
૩૦-૬-૧૬	બદનાવર થી ઢોલાના	સાંજે	૭
૧-૭-૧૬	ઢોલાના થી બડનગર	સવારે	૭
૨-૭-૧૬	–	–	–
૨-૭-૧૬	બડનગર થી જસ્સા ખેડી	સાંજે	૮
૩-૭-૧૬	જસ્સા ખેડીથી રૂણીજા	સવારે	૧૧
૪-૭-૧૬	રૂણીજા થી ભાટ પચલાણા	સવારે	૧૧
૪-૭-૧૬	ભાટ પચલાણા થી કમઠાના	સાંજે	૬
૫-૭-૧૬	કમઠાના થી ખાચરોદ	સવારે	૧૪
૬-૭-૧૬	–	–	–
૭-૭-૧૬	ખાચરોદ થી ભુવાસા	સાંજે	૭
૮-૭-૧૬	ભુવાસા થી જડવાસા ખુર્દ	સવારે	૧૩
૮-૭-૧૬	જડવાસા ખુર્દ થી સાંઈનાથનગર રતલામ	સાંજે	૭
૯-૭-૧૬	સાંઈનાથ નગરથી વિશાજી મેંન્સન	સવારે	૩

પૂજ્યશ્રીના સ્વાસ્થ્યની અનુકુળતા અને મોસમને અનુસાર વિહાર કાર્યક્રમમાં પરિવર્તન સંભવ છે. પૂજ્યશ્રીને મ.પ્ર.સરકાર દ્વારા રાજકીય અતીથીનો દર્જો આપવામાં આવેલ છે. તદ્નુસાર આપ સહુ પોલીસ થાણા અને પોલીસ ચોકી પર સંપર્ક કરી વિહાર દરમ્યાન સુરક્ષાની વ્યવસ્થા નિશ્ચિત કરવી પૂજ્યશ્રીનું સ્વાસ્થ્ય વર્તમાનમાં અનુકુળ-પ્રતિકુળ ચાલી રહ્યું છે તે માટે સુહને નિવેદન કરાયું છે કે પ્રવેશ સમારોહ (સામૈયા-શોભાયાત્રા) સંક્ષિપ્તમાં કરવાનો પ્રયાશ કરે

સંપર્ક : સુરેશ તાતેડ-૯૪૨૫૦૦૦૦૦૯
શ્રી ચિરાગજી ભંસાલી-૯૪૨૫૧૦૨૨૬૯

श्री संभवनाथ स्वामिने नमः

Open Book Exam

संलेखना मरण कला है, आत्महत्या नहीं

* शुभाशीर्वाद *

युग प्रभावक, गच्छाधिपति, आचार्य प्रवर
श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वर जी म.सा. 'मधुकर'

* प्रेरक *

वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

द्वितीय पुरस्कार
7,000 रु.

प्रथम
पुरस्कार
11,000 रु.

तृतीय पुरस्कार
5,000 रु.

चतुर्थ पुरस्कार
3,000 रु.

पंचम पुरस्कार
1,000 रु.

उत्तीर्ण सभी परिक्षार्थियों
को सांत्वना पुरस्कार

* आयोजक *

श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरी जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, विजयवाड़ा

पेपर सहित पुस्तक का मूल्य मात्र 50 रुपये

उत्तर पत्र जमा कराने की अंतिम तिथि – 14.9.2016
भाद्रपद सुदी –12, बुधवार

–पुस्तक प्राप्त करने का प्राप्ति स्थान–

* अशोक सौलंकी, विजयवाड़ा 9440173238 * संजय रामाणी, नेल्लोर 9866673700 * मीना हरण, चेन्नई 9444467927 * जूली 'जयणा' गोलेचा, उज्जैन 9827266477, प्रीति खाबिया, बड़नगर 9406860007 * संजय कोठारी, रतलाम 9329385073 * पं. कुणाल डी. सुराणा, डीसा (गुज.) 9428976724

कुमकुम सने पगलिये

शानदार सफल रहा ज्ञानायतन-5

पूज्य गुरुदेव राष्ट्रसंत के सान्निध्य में 400 छात्र आध्यात्मिक क्रांति से परिचित

मोहनखेड़ा तीर्थ । श्री मोहनखेड़ा तीर्थ स्थित श्री राज राजेन्द्र जैन तीर्थ दर्शन जयन्तसेन म्युजियम पर पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी जी म.सा. वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंदविजयजी म.सा. आदि साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित मधुकर संस्कार ज्ञानायतन-5 के सात दिवसीय आयोजन में विभिन्न प्रांतों से आए 36 नगरों के 400 से अधिक बच्चों ने भाग लिया एवं नित्य पूज्य गुरुदेव श्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं मुनिगणों के प्रेरक उद्बोधन एवं आशीर्वचनों के माध्यम से आत्मशुद्धि के भाव को प्रशस्त कर जीवन में आत्मकल्याण एवं समाजहित की भावना को लेकर धार्मिक एवं सात्विक जीवन की ओर अग्रसर हुए ।

दिनांक 10 जून को पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यश्री का समस्त साधु-साध्वी भगवंतों के साथ भव्य प्रवेश हुआ जिनकी अगवानी ज्ञानायतन के बच्चों ने एक विशिष्ट अंदाज में की, समस्त मोहनखेड़ा तीर्थ एवं म्युजियम प्रांगण में देवलोक के समान नजारा दिखाई दे रहा था । सभी गुरुभक्तों एवं ज्ञानायतन के सदस्यों द्वारा पू. गुरुदेव की निश्रा में भगवान आदिनाथ एवं दादा गुरुदेव के दर्शन एवं वंदना की गई। तत्पश्चात् म्युजियम प्रांगण में ज्ञानायतन-5 का भव्य शुभारंभ समारोह हुआ जिसमें म्युजियम के अध्यक्ष श्री मिलापजी चौधरी एवं श्रीसंघ के प्रदेशाध्यक्ष श्री सुरेशजी तांतेड़ ने पू. गुरुदेव के प्रति अपने श्रद्धा भाव अर्पित करते हुए ज्ञानायतन की सराहना की । श्री मोहितजी तांतेड़ एवं श्री चिरागजी भंसाली के ज्ञानायतन की विस्तृत जानकारी दी गई .

मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी ने अपने प्रवचन में गुरु के महत्व को बताकर हमारे जीवन में गुरु की महिमा एवं उनके प्रति हमारा क्या औचित्य होना चाहिए उसकी जानकारी

दी।

मुनिराज श्री जिनागमरत्नविजयजी ने फरमाया कि बच्चों को अच्छे संस्कार देने से वह भगवान भी बन सकते हैं एवं आज के बदलते परिवेश में युग पीढ़ी में संस्कारों के सिंचन हेतु ज्ञानायतन से जुड़ने का आह्वान किया गया । बालमुनिराज श्री प्रसिद्धरत्नविजयजी म.सा. ने फरमाया कि आज की वर्तमान पीढ़ी कल के भावी भविष्य का निर्माण करेगी अतः उनके संस्कारों की रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है।

पश्चात पू. गुरुदेव ने मांगलिक श्रवण कराकर अपने प्रवचन में पुराने शिविरों को याद कर उन शिविरों से निकले समाजरत्नों को जिन्होंने अपनी प्रतिभा से सम्पूर्ण जैन समाज का नाम रोशन किया के नाम स्मरण किए एवं इस ज्ञानायतन के लाभार्थी परिवार का सूर्यप्रकाशजी मिश्रीमलजी भंडारी परिवार द्वारा किए गए शासन प्रभावना के कार्यों की अनुमोदना की। ज्ञानायतन को सफल बनाने में अथक प्रयास कर रहे मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा., मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी, मुनिराजश्री जिनागमरत्नविजयजी, मुनिराजश्री प्रसिद्धरत्नविजयजी, मुनिराजश्री चारित्ररत्नविजयजी म. के प्रयत्न एवं मेहनत की सराहना की।

पूज्य गुरुदेव को काम्बली ओढ़ाने एवं गुरुपूजन का लाभ म्युजियम ट्रस्ट अध्यक्ष श्री मिलापचंदजी द्वारा लिया गया।

दोपहर की नवकारसी में ज्ञानायतन के बच्चों द्वारा अनेक नियम तपस्या की गई। इसके पश्चात ज्ञानायतन का प्रथम वाचन सत्र प्रारंभ किया गया जिसमें पूज्य गुरुदेव ने बच्चों को जीवन की महत्ता बताई एवं धर्ममय जीवन जीने की प्रेरणा दी । मुनिराज श्री जिनागम विजयजी ने सभी को माता-पिता को पंचाग प्रणिपात प्रणाम नित्य प्रभु भक्ति एवं साधु भगवंतों के साथ कैसे व्यवहार किया जाए आदि के सूत्र नाटकीय मंचन के साथ बताए। मुनिश्री निपुणरत्नविजयजी ने अपने प्रवचन में एक कहानी के माध्यम से जीवन में सद्कार्य एवं महामंत्र नवकार का सार व उसके पदों की महिमा बताई । शाम की नवकारसी में सभी बच्चों ने एक साथ प्रार्थना करने के पश्चात भोजन किया। नवकारसी के बाद सभी ने सामूहिक प्रतिक्रमण किया । रात्रि में संगीत प्रतियोगिता में कई बच्चों ने भाग लिया जिसमें विजेताओं को आकर्षक उपहार दिए गए।

इसके पश्चात नित्य प्रातः 4.30 बजे

प्रतिक्रमण, सुबह की वाचना, देवदर्शन, गुरुदर्शन, पूज्य गुरुदेव के आशीर्वचन, प्रभु का नाना प्रकार के द्रव्य एवं 103 प्रकार की औषधियों से भव्य अभिषेक ऐसा दृश्य उपस्थित करता था मानों इंद्र समस्त देवी-देवताओं के साथ मेरू शिखर पर अभिषेक कर रहे हों । 'शंखेश्वर प्रभु पार्श्व को अभिषेक विश्व मंगल करे' की धुन पर सभी बच्चों ने बड़े भावपूर्वक अभिषेक किया । दोपहर की नवकारसी के पश्चात पुनः वाचना सत्र प्रारंभ किया जाता जिसमें पु. गुरुदेव एवं मुनिगणों द्वारा बच्चों को प्रेरक उद्बोधन के माध्यम से धार्मिक जीवन जीते हुए देश, धर्म एवं संघ व शासन के प्रति निष्ठावान रहते हुए सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा दी गई ।

दोपहर के सत्र में बच्चों का एक बुद्धि परीक्षण (आई.क्यू.) टेस्ट अन्य कई प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों के मानसिक विकास हेतु अनोखी पहल की गई ।

ज्ञानायतन के पांचवे दिन (पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में) विशेष रूप से संयम संवेदना का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मुनि भगवंतों ने जीवन में संयम की महत्ता एवं मानव जीवन की नश्वरता बताते हुए संसार में संयम जीवन की श्रेष्ठता के बारे में बताया एवं समस्त श्रमण-श्रमणी भगवंतों की अनुमोदना की जिसमें पूरा हॉल संयममयी हो गया । पू. गुरुदेव एवं मुनिभगवंतों के प्रभावशाली उपदेश सुनकर अनेक बच्चों के दीक्षा भाव जाग्रत हो गए एवं कईयों ने दीक्षा अंगीकार करने का संकल्प भी लिया ।

ज्ञानायतन के छटे दिन दि. 15 जून 2016 को प्रातः 9 बजे सभी बच्चे एक कतार में, एक समान वेशभूषा में जय-जय ज्ञानायतन एवं गुरुदेव की जय-जयकार करते हुए श्री जयंतसेन म्युजियम प्रांगण से पंक्तिबद्ध होकर श्री मोहनखेड़ा तीर्थ दर्शन हेतु पहुंचे जहां पूज्य मुनि भगवंतों की निश्रा में प्रभु आदिनाथ एवं दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.के दर्शन वंदन किए एवं प्रभु एवं गुरुभक्ति का ऐसा दृश्य उपस्थित किया कि वहाँ उपस्थित सभी दर्शक मंत्र-मुग्ध रह गए । भक्ति स्तवनों से पूरा मंदिर प्रांगण गुंजायमान हो गया । सभी प्रभु भक्ति में लीन होकर झूमे । प्रभु एवं दादा गुरुदेव के दर्शन वंदन कर सभी पूर्ण अनुशासन में म्युजियम पर आए जहां दोपहर के सत्र में

विशेष रूप से मातृ-पितृ वंदनावली हेतु सूरत के सुश्रावक भाई संजय ने माता-पिता के उपकारों के कई किस्से सुनाए। उन्होंने बच्चों को कई करुणमयी प्रसंग सुनाए एवं माँ की महिमा का गुणगान किया। 'मैय्या तेरे कर्ज को चुकाता है' जैसे गीतों के साथ इतना सजीव वर्णन किया कि उपस्थित सभी बच्चों एवं महानुभवों के आँखों से अश्रुधारा रुकने का नाम नहीं ले रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों सभी आंसुओं से अपने जीवन में की गई गलतियों का पश्चाताप कर अतर्मन से निर्मल हो गए हों। सभी बच्चों ने अपने -अपने माता-पिता को पोस्टकार्ड भी लिखे।

ज्ञानायतन के अंतिम दिन 'शासन स्पर्शना' कार्यक्रम में सभी को जिनशासन की महानता, त्याग एवं इसमें जन्मे महान परोपकारी पुण्य आत्माओं का स्मरण कर जिनशासन का गुणगान किया कि हम बड़े सौभाग्यशाली हैं कि हमें जिनशासन प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर सरदारपुर विधाकर श्री वैलसिंहजी भूरिया, एसडीएम श्री अभयसिंहजी ओहरिया, विशेष अतिथि के रूप में पधारे एवं गुरुदेव से आशीर्वाद लिया। ट्रस्ट मण्डल द्वारा उनका स्वागत किया गया। इस अवसर पर पू. गुरुदेव ने सभी शिविरार्थियों एवं उपस्थित माता-पिता को आशीर्वचन देते हुए फरमाया कि आप सभी ने ज्ञानायतन के ज्ञानतप में अपने आपको सम्मिलित कर अपने जीवन को सार्थक दिशा की ओर अग्रसर किया है। सभी माता-पिता भी अपने बच्चों को संस्कारित करने हेतु उन्हें प्रत्येक ज्ञानायतन में अवश्य भेजें। क्योंकि

आगे चलकर इन्हीं सब में से समाज के रत्न निकलकर आएंगे। सभी शिविरार्थी भी ज्ञानायतन में सिखाए गए ज्ञान, ध्यान, तप आदि को जीवन में निरंतर बनाए रखें।

इस अवसर पर ज्ञानायतन के लाभार्थी श्री बी.एम. शाह परिवार के 'मुन्नाभाई' का बहुमान म्युजिमय ट्रस्ट मण्डल, नवयुवक परिषद एवं ज्ञानायतन के कार्यकर्त्ताओं द्वारा शाल, श्रीफल एवं अभिनंदन पत्र भेंट कर किया गया। इस अवसर पर श्री मिलापजी चौधरी, श्री रमेशजी धाड़ीवाल, श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, श्री सुरेशजी तांतेड़, श्री मोहितजी तांतेड़, श्री मनोहरलालजी पुराणिक, श्री रमेश बोहरा, श्री सुरेन्द्रजी जैन, श्री राजेन्द्रजी दंगवाड़ा, श्री चिरागजी भंसाली, श्री दिनेश मामा आदि समाज के वरिष्ठजन उपस्थित थे।

दोपहर में सभी शिविरार्थियों का बहुमान एवं पुरस्कार वितरण समारोह रखा गया जिसमें सभी बच्चों को आकर्षक उपहार प्रदान किये गये।

ज्ञानायतन से प्रेरित होकर सभी बच्चों ने केशरियाजी तीर्थ की रक्षा हेतु अनेक संकल्प लिए एवं मिठाई, फल आदि का त्याग किया।

पूज्य गुरुदेव का मालवा में भव्य प्रवेश

(आँखो देखी-अशोक श्री श्रीमालसुधीर लोढ़ा)

* मालवा मेरे हृदय में कब से प्रवेश कर चुका है।
* अनुभव मनुष्य का गुरु होता है।
* मालवा जितना सरल है उतना सजग भी
* मालवा में सद्भाव की आशा लेकर आया हूँ।
* मालवा में श्रद्धा, भक्ति, विश्वास की जड़ें गहरी हैं।
* भक्तों का महासागर हिलोरे ले रहा था।
* 84 संघों ने एक ही स्थान खजुरी पर अगवानी की।

कुशलता पूर्वक कुशलगढ़ (राजस्थान) से मालवा की सीमा में प्रवेश करते ही सुहानी-सुहानी पवन ने अपनी मस्त संगीत की झंकारों से आत्मीय अभिनंदन किया। भौर होने की तैयारी में है- सूर्य देवता भी बेसब्री से सूर्योदय काल की प्रतिक्षा कर रहे थे। कब मैं बाहर आऊं और ज्ञान के सूरज के दर्शन करूं ? घुमावदार सड़कों पर आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. सहित काफिला बढ़ते जा रहा था ! दोनों तरफ की पर्वत मालाएं कतार बद्ध होकर अभिवादन कर रही हैं। पहाड़ों के बीच से सूर्य अपनी किरणों से पूज्य गुरुदेव को स्नान करा रहा है। चहकते पंछी लोरी गा रहे - घाट उतरते उतरते घुमावदार सड़कों की तरह विचारों ने भी मस्तिष्क में घूमना आरंभ कर दिया - चारों ओर घाट ही घाट हैं। प्रभु मेरे घट में आकर सारा घाटा उतारकर पुण्य की कोष में अभिवृद्धि करें जिससे धर्म आराधना को बल मिले।

चारों ओर वनों की श्रृंगारता के बीच मालवावासी गुरुदेव के दर्शन वंदन करने और आगवानी के लिए पहुँच गये। म.प्र. के राजकीय अतिथि होने से शासन-प्रशासन भी सेवाएँ देने हेतु पहुँच गया।

कलमकार द्वारा यह पूछे जाने पर कि मालव प्रवेश पर आपको कैसा लग रहा है? आपके आगमन की भव्य तैयारियां चल रही हैं - गुरुदेव कहते हैं, अरे भाई ! मैं तो बचपन से ही मालवा में प्रवेश कर चुका हूँ। मैंने मालवा को हृदय में प्रवेश करवाया अर्थात् मैं मालवा में और मालवा मुझमें। जब मैंने मालवा को दिल से निकाला ही

नहीं तो प्रवेश कैसा ? हाँ तन से जरूर आज पुनः आ रहा हूँ । जब भी स्वास्थ्य की प्रतिकूलता हो जाती, थकान आती तो मैं मालवा चला आता हूँ । यहाँ पूज्य गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी व यतिन्द्रसूरिजी सहित अनेक साधु महात्माओं की कर्म स्थली रही । मैंने भी इसे अपनी कर्मस्थली बनाया । यहाँ के भक्तों का भक्ति रस मेरे लिए 'अमृत-धारा' का संचार करता है- विचारों की उधेडबुन में उदयपुरा आ गया, उदयपुरा मालवा के उदय का प्रतीक है । मालवा उदय हो चुका है । सूर्य देवता भी पूर्ण उदय होकर गुरुदेव से कह रहे हैं कि आप मेरी उपस्थिति में सूखे-सूखे आपकी दैनिक यात्रा सम्पन्न करो मेरी रश्मियाँ और आपकी ज्ञान रश्मियाँ दोनों प्राणी मात्र का उद्धार करेंगी ।

दिन में श्रीसंघों के विशिष्ठ महानुभावों का आना जारी रहा । म.प्र. शासन के शिक्षामंत्री परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पारसजी जैन, परिषद के प्रान्तिय अध्यक्ष श्री सुशीलजी गिरियाँ, श्री विरेन्द्र राठौर बड़नगर, स्थानीय टी.आई. श्री एन.एस. रावत, श्री बघेल, श्री बालोदियाजी साथ ही बीच-बीच में पत्रकार लोग भी आकर अपनी कलम की धार पैनी करते रहे ।

प्रतिदिन की तरह प्रतिक्रमण पश्चात् ज्ञान पिपासुओं का पाट के आस-पास बैठकर सेवा के साथ मेवा की प्राप्ति करना। आध्यात्म का रंग जमता है । गुरुदेव अपने अनुभव के खजाने के द्वार खोलते हैं - विचारों के मोती उछल-उछल कर बाहर आते हैं । दिनभर की थकान उतरती है जीवन को मूल्यवान बिन्दु मिलते हैं । विनोद प्रिय किस्से सुनने की उत्सुकता बढ़ती रहती है ।

''अनुभव मनुष्य का गुरु होता है मनुष्य को जब अनुभव प्राप्त नहीं होता तब तक वह स्वयं को आदर्श स्थिति में नहीं ढ़ाल सकता । मनुष्य को संसार में अनेक अनुभव प्राप्त होते हैं । इन अनुभवों से ही उसका व्यक्तित्व प्रभावी बन सकता है । आत्मिक अनुभव मनुष्य को अलौकिक स्थिति में पहुँचा देता है । मन आघात-प्रत्याघात होते तब मानसिक अनुभव होते हैं । वाचिक अनुभव वाणी का विकास की प्रवृत्ति से प्राप्त होते व परस्पर में एक-दूसरे के प्रति मानापमान की प्रवृत्ति वचन का अनुभव दिलाती है । आत्मा में जो संवेदन होता, वह आन्तरिक अनुभव है । ऐसे अनेक अनुभवों से व्यक्तित्व का निर्माण होता है । अमृत रस का पान चल रहा था, मस्तिष्क को टॉनिक मिल रहा था, निद्रादेवी भी ज्ञान रूपी टॉनिक पाकर अपना कार्य करने लगी, धीरे-धीरे सभी स्वप्नों की दुनिया में चले गये ।

रात के अंधेरे से संघर्ष करता हुआ सूर्य पुनः आने की तैयारी में है । आज वह खजुरी में गुरु-भक्तों के मिलन का साक्षी बनना चाहता है । उदयपुरा से खजुरी मार्ग में आगवानी हेतु श्री पारसजी जैन, श्री सुरेशजी तातेड़, मुकेशजी जैन नाकोड़ा झाबुआ, अशोकजी श्री श्रीमाल, धर्मचन्द्रजी व्होरा, रमेशजी धारीवाल, मोहितजी, वीरेन्द्रजी राठौर, थान्दला के, उमेशजी पिचा,

रूपेशजी, यतिनजी, छिपानी, चंचलजी भण्डारी, संजयजी फुलपगर, वैभवजी छिपानी, विनयजी छिपानी साथ ही थान्दला श्रीसंघ परिषद व महिला परिषद के अग्रगण्य अपनी श्रद्धा भक्ति की मालाएँ लिये गुरु चरणों में अर्पित कर रहे थे।

मार्ग की पगडंडियां, गॉवों के नाम व स्थानों ने उन्हें पुनः 47-48 वर्ष पूर्व पहुँचा दिया। पुरानी यादें ताजा करते हुए कहते हैं - नित्यानंदजी म.सा. की दीक्षा पश्चात मैं, शांतिविजयी म.सा., नित्यानंदजी सा. राणापुर से केसरियाजी को विहार करते हुए यहाँ रुके थे। पहले जमाने में राणापुर के खेमाबा, नाहरबा, शांतीलाल भंसाली, घुमसिंह आदि रसद सामग्री सर पर उठाकर चलते, दाल पानिया, दाल बाटी बनाते उस समय मार्ग में सिर्फ एक-दो बसें चलती थी। दो चार सवारी हमारे पास उतरती, जंगल में मंगल का आभास होता था। विश्रम करते चल देते थे।

मालवा में भक्ति का आलम घुट्टी में रहा। यहाँ के श्रावण जितने सरल उतने ही सजग भी। शिथिलता अथवा प्रमादता पर टोक देते थे। पूज्य यतिन्द्रसूरि जी म.सा. के साथ जब भी मालवा आते वे पहले से ही हिदायतें देते थे। मालवा में ऐसे रहना वैसे रहना आदि। उसी का सुखद परिणाम आज मेरे जीवन में परिलक्षित हो रहा है। मालवा को मैंने क्या दिया- यह मालवावासी जानें ? पर मालवा ने मुझे बहुत दिया- मालवा का मुझ पर अनंत उपकार है ? पहला शिष्य मुझे मालवा ने ही दिया। हिन्दी यहाँ सीखी ?

मंदसौर-निंबाहेडा में रहकर आरम्भिक शिक्षा व्यवहार प्राप्त किये - परिषद जैसे विशाल विराट वृक्ष का बीजारोपण मालवा से हुआ। अनेक शिष्य-शिष्या देने में मालवा कभी पीछे नहीं रहा। नवकार मंत्र की विधिवत आराधना यहाँ से आरम्भ हुई। तरुण परिषद का जन्म यहाँ हुआ।

यहाँ श्रद्धा, भक्ति और विश्वास की मजबूत जडें जमी हुई हैं। जो गहराई में जाकर समाज रूपी विशाल वृक्ष को न केवल मजबूती प्रदान कर रही है बल्कि पोषक तत्वों से पूरे वृक्ष रूपी शरीर में संचार कर रही है।

चलते-चलते खजुरी के पास आते जा रहे थे। चहल-पहल बढ़ती जा रही थी। खजुरी पलक पावडे बिछाकर हृदय की बिछात पर गुरुदेव को विराजमान करने को आतुर थी।

सम्पूर्ण मालवा के संघों का आना आरम्भ हो चुका था। अ.भा. श्री त्रिस्तुतिक श्वेताम्बर श्री संघ के संरक्षक-निर्देशक आदरणिय चेतन्यजी कश्यप, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बाघजी भाई, राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा, मनोहरलालजी पुराणिक, पारसजी जैन, सुरेश तांतेड, रमेश धारीवाल, रमेशजी नडियाद, अशोक श्रीश्रीमाल, मुकेश नाकोड़ा, दिनेश मामा, सांसद कान्तीलाल भूरीया, विधायिका श्रीमती निर्मला भूरिया तथा विशाल मालवा प्रान्त की जनमेद की उपस्थिति में आरम्भ हुआ, प्रवेश का विधिवत शुरूआत का क्रम।

महिला विभाग का नेतृत्व श्रीमती अंगूरबाला सेठीया व पद्मासेठ, तो तरूण परिषद के प्रमुख अभय बरबोटा, दिलीप भण्डारी, विजय बाफना अपनी चिर-परिचित मुस्कान से गुरुवर का अभिवादन कर रहे थे।

गुरुदेव की झलक पाने 84 श्री संघ अपने-अपने बेनर तले गहुली से बधाकर प्रतीक स्वरूप बने अपने गॉव में प्रवेश कराना चाहते थे।

84 संघ गुरुदेव से यह आशीर्वाद चाह रहे थे कि हे गुरुदेव हम 84 लाख योनियों में भटकते हुऐ आज यहाँ पहुँचे हैं आप इस चौरासी के चक्कर से मुक्त कर दो।

दर्शन वंदन की होड़ मची थी सभी अपने आप को गुरुवर के निकट समझ रहे थे और हैं भी।

सूर्य देवता भी एक पल के लिए गुरुदेव को छोड़ना नहीं चाह रहे थे। कभी-कभी तो भक्तों को हटाने अथवा उनकी परीक्षा लेने अपनी तपन को बढ़ा देते हैं। पर भक्त कहाँ मानने वाला, ऐ सूर्य तेरी तेजत्विता देखते-देखते जीवन बीत गया। तू क्या हमें, हमारे गुरुदेव से दूर करेगा तू अगर आग का गोला है मेरे सामने पूनमचंद्र दिल का भोला है। इसी नोक-झोंक में जय-जयकार के नारे, नगाड़े, ढोल, शहनाई बाजे ने पूरे जंगल में साम्राजय जमा दिया। भक्तों का महासागर हिलोरे ले रहा था। इस सागर में मालवा प्रान्त से आई 84 की चौरासी नदियां अपने आप को समाहित करती जा रही हैं।

दोनों ओर कतारबद्ध संघ खड़े होकर अपने नयनों से गुरुदेव को हृदय में उतार रहे थे गुरुदेव की पावन दृष्टी एवं मुस्कुराहट श्रीसंघों पर पड़ती और श्रीसंघ धन्य हो जाता उसकी सभी मुरादें पूरी हो जाती।

आज पूरा मालवा आया, न कोई छोटा संघ न कोई बड़ा सभी समान रूप से गुरुवर को हृदय में बिठा रहे थे। बीच-बीच में विशिष्टों का आना जारी रहा।

अपने निधीरित समय 10 बजे से आरम्भ शोभायात्रा ठीक समय खजुरी के विशाल एवं भव्य पाण्डाल के सामने पहुंच रही थी। जंगल में ऐसा अद्भुत नजारा चक्षुगम्य था। विशाल भोजन शाला। गर्मी में शीतलता का ऐहसास कराने वाले पाण्डाल।

श्री संघ परिषद व समस्त मालवा प्रान्तों के अध्यक्ष वरिष्ठों का समूह प्रवेश द्वार पर अत्मियता की चादर से और अक्षत सुख के पाने की चाहना में अक्षत व मोक्षफल पाने की लालसा में श्रीफल लेकर गहुंली के माध्यम से स्वागत अभिवादन कर अपनी मन की भावनाओं की अभिव्यक्ति दे रहा था।

प्रवचन पाण्डाल में पूरा मालवा समाया हुआ है। बाहर की चमचमाती चांदनी सी धूप व पसीने ने सम्पूर्ण स्नान करा दिया तो प्रवचन की चाहत व राहत पाने गुरु की आभा में गुरुभक्त अपने नियत स्थान पर बैठ गये।

जैन जगत के गगन के ज्ञान रूपी सूर्य बीचों-बीच में शोभायमान हैं, आसपास

उनके रत्नों का प्रकाश दैदीप्यमान है और रोम-रोम में बसने-बसाने वाला भक्तों का समूह उनकी पावन निगाहों के सम्मुख दर्शन पान कर रहा है।

विनयता पूर्वक परिवार के राष्ट्रीय महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल ने द्वादशव्रत विधि से गुरुवन्दन कर मंगलाचरण का अनुग्रह किया। मंगल आशीर्वाद, अतिथि आमंत्रण, स्वागत अभिनन्दन गीत की प्रक्रिया के पश्चात आरम्भ हुआ शब्दों की, भावों की, विचारों की सुगंधित माला लेकर गुरु की महिमा का बखान।

सफल संचालन की शुरूआत करते हुए प्रदेश महामंत्री मोहितजी ने संघ परिषद की ओर से उपस्थित सभी महानुभावों का अभिनन्दन करने विशेषकर थान्दला की संघ-परिषद व इस कार्यक्रम में प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग देने वालों का आभार देने, कार्यक्रम की परिकल्पना, उसे आकार देना साकार करना इन सभी बिन्दुओं को रेखांकित किया। म.प्र. के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री सुरेशजी तांतेड़ ने कहा प्रान्त में प्रवेश का सफल आयोजन मात्र आपकी कृपा से ही संभव है। 84 संघों का एक विराट माहौल बना। जब आप नवकार के 68 अक्षरों के 68 तीर्थों को 68 जिनालय के रूप में एक ही स्थान पर लाने की परिकल्पना कर उसे आकार दे सकते हो तो 84 सघों का मालवा भी एक ही स्थान पर साक्षात आ सकता है। आपका अनुपम प्रेम आज प्रकट हुआ। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता आग बरसाती गरमी, लम्बा विहार और तमाम बाधाओं का विसर्जन कर मालवा में नये इतिहास का सृजन करने आप पधारे हैं। हमें आपकी सरलता, भोलापन भक्तों के प्रति आपके लगाव का पता है। हमें यह भी पता है कि आप भक्तों के अधीन हैं।

गुरुदेव हम रतलाम के बाद आगामी चातुर्मास की विनती भी कर रहे हैं। आज मालवा की 36-40 प्रतिष्ठाएँ आपका इंतजार कर रही हैं। वहाँ का संघ-समाज आपके उपकार की मांग कर रहा है, प्रतिष्ठा होगी तो संघ समाज उठेगा, उन्नति की राह व रफ्तार पकड़ेगा।

म.प्र. की साढ़े सात करोड़ जनता पर आप स्नेह की बरसात करें। श्री चैतन्यजी काश्यपम की अगुआई में म.प्र. के नक्शे पर वासक्षेप कराकर मालवा के लिए खुशहाली मांगी।

परिषद् परिवार की ओर से रमेशजी धारीवाल व सुशीलजी गिरिया ने कहा- मालवा में परिषद् सर्वाधिक सक्रियता की भूमिका निभा रही है। उज्जैन स्थित शोध संस्थान की प्रगति पर रिपोर्ट दी। रमेशजी धारीवाल ने कहा उज्जैन में सिंहस्थ का एक माह का कुम्भ निर्विघ्न पूरा हुआ। अब रतलाम में अध्यात्म का चार माह का महाकुम्भ लगेगा।

स्थानीय विधायिका श्रीमती निर्मला भूरिया व सांसद श्री कांतिलालजी भूरिया भी फूले नहीं समा रहे थे-क्योंकि यह सभी उनके क्षेत्र में हो रहा था।

परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व म.प्र. शासन के केबीनेट शिक्षा मंत्री ने कहा-

आपकी प्रेरणा व आशीर्वाद से शोध-संस्थान पूर्ण आकारित होने जा रहा है । मुख्यमंत्री शिवराजजी का शुभकामना संदेश भी सुनाया और उन्हें 'परम पूज्य गुरुदेव को राजकीय आतिथ्य हेतु धन्यवाद भी दिया ।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजी भाई के शब्दों में पूर्व से सूरज उग रहा है तो इधर अध्यात्म का सूर्य रश्मियाँ बिखेर रहा है, आज का यह अद्‌भुत, अविस्मरणीय व अनुपम नजारा देख कर में गद्-गद् हो गया। मालवावासियों के भक्ति के किस्से गुरुदेव व अग्रजों से सुने थे , कभी-कभार देखते भी थे । पर ऐसा भक्ति का सैलाब और वह भी मात्र प्रान्तीय सीमा प्रवेश पर- अद्वितीय है । अगर इसे स्वर्णाक्षर में लिखा जाए तो रतलाम का चातुर्मास स्वर्ण पुस्तिका में लिखा जायेगा । संघ के वरिष्ठ-संरक्षक पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष रतलाम संघ की आज्ञा से आगामी चातुर्मास के लाभार्थी श्री चेतन्यजी काश्यप ने भाव-विभोर होते हुए कहा- यह हमारा पुण्योदय है - आपका हमारे परिवार और संघ पर अनन्त उपकार है । आपकी चातुर्मास स्वीकृति ने हमारे संचित पुण्य पर मोहर लगा दी । यह चातुर्मास म.प्र. को स्वर्णिम बनायेगा । विद्वानों, साहित्यकारों की 3 दिवसीय गोष्ठी, सम्मेलन से जैन सिद्धान्त और गुरु की महिमा सर्वत्र व्याप्त होगी । अध्यात्म के साथ-साथ अन्य धार्मिक आयोजन भी होंगे । यह चातुर्मास अन्य के लिए प्रेरणास्पद बनेगा ।

समाज के रत्नों ने अपने शब्दों की आभा बिखेरी तो अब अवसर था, गुरुदेव के रत्नों का । जब एक गुरुभक्त वर्ष में दो-चार बार ही ज्ञान-गंगा में डुबकी लगा कर संतृप्त हो जाता तो इस ज्ञान के महासागर में सदैव साथ रहने वाले 'ये मुनिराज भगवंत' कितने पुण्यशाली होंगे ।

पूज्य नित्यानन्दजी म.सा. ने कहा- समय जा रहा है, सदुपयोग कर लो । सूर्य प्रतापी राष्ट्र-संत इस जीवन में मिले हैं । मेरे दीक्षा पर्याय को 47 वर्ष बीत गये । पुत्रवत् पालन किया है । मालवा मेरी जन्म और शिक्षा स्थली है । गुरुदेव की कृपा मुझ पर बरसी और आज इस मुकाम पर हूँ । इन 47 वर्षों में मालवावासियों की भक्ति में निरंतर वृद्धि होती रही । भक्ति और भक्तों की भावना का ज्वार क्या होता है ? कोई यहाँ आकर देखें । मालवा के लोग जगा रहे हैं । आप जितना संतोष रखोगे, लाभ ज्यादा मिलेगा ? महामंत्र का जाप गुरु को स्वस्थ और आपको कल्याणकारी रखेगा । अभी तो डूंगर है- मालवा बाकी है ।

आपकी श्रद्धा और भक्ति में ये हमारे भगवान् सब भूल जाते हैं । मुझे भी लगता आपकी भक्ति-भावना ही इनकी स्वस्थता का राज है ।

पूज्य विद्वतत्नविजयजी म.सा.- 'गुरु के बिना जीवन नहीं शुरू' । राम-सीता और भक्त हनुमान के सिंदूर वाले किस्से के माध्यम से पूज्य मुनि भगवंत कहते हैं- हनुमान जैसे भक्त हों, राम जैसे हमारे गुरु हों, तो आसुरी-शक्ति हमारा किसी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकती । गुरु हमारे सर्वस्व हैं, ये सर्वत्र हैं, ये स्वाभिमानी,

सरल, सहज हैं । कण-कण में बसे हैं । रात-दिन भक्तों की चिन्ता, समाज संघ का चिंतन । आप जो गुरुवर से प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से अपेक्षा रखते हैं, आप जो भावना भाते हैं, ये प्रत्येक के भावना रूपी आवेदन को स्वयं देखते व निराकरण करते हैं ।

पूज्य चारित्ररत्नविजयजी म.सा.- यहाँ मालवा के उपवन की भीनी-भीनी खुशबू आ रही है । आज तेरस है, इनका जन्म दिन और सूरिपद भी तेरस को है । पूज्य गुरुदेव ने समाज से रत्नों को खोजा, उनको तराशकर फिर समाज को गति देने के लिए समाज सेवा से जोड़ दिया। सेठ गगलदास संघवी जिन्होंने समाज का नेतृत्व कर संघ को जोड़े रखा । वे साधु, साध्वी और संघ समाज का बहुत ध्यान रखते थे। चेतन्यजी ने अपनी युवा सोच से एक नई जागृति पैदा की । गुरु की महिमा को सर्वत्र फैलाया है । शासन-प्रशासन में तथा अन्य समुदायों में हमारे संघ को एक विशिष्ठ स्थान दिलवाने में अहम् भूमिका निभा रहे हैं । किशोरजी अल्प समय में अपनी छाप छोड़ गये । तो आज बाघजी निरंतर प्रवास कर इस ध्वजा को ऊँचाई से थामे हैं ।

पूज्य सिद्धरत्नविजयजी महाराज- गुरुदेव ने हम सभी को नमस्कार महामंत्र का एक ऐसा सुरक्षा कवच दिया, जिसे श्रद्धा से धारण करने पर आप पर कोई बाधा नहीं आएगी या कोई बड़ी घटना प्रतीक स्वरूप छोटी में आकर आपको सुरक्षित कर देगी । आपकी गुरुदेव के प्रति आस्था गहराई से हो ।

पूज्य निपुणरत्नविजयश्री म.सा.- जिन्होंने गुरु के चरणों में रहकर अपनी संयम की यात्रा में गुरु के आशीषों की झोली भरते हुए निपुणता की ओर अग्रसर जहाँ भी चातुर्मास में रहते अपनी छाप छोड़ देते हैं, युवाओं को धर्म, संस्कार से जोड़ने की आकर्षणता है- बीजापुर में 'कोई लेणो ने कोई देणो' तो पैपराल में सिक्के वाले महाराज के नाम से जाने-जाने लगे ? पूज्य निपुण-सा कहते हैं -

गुरु की कृपा मिलना भाग्य है ।
दिल गुरु को रखना-सौभाग्य है ।
और गुरु के दिल में रहना परम सौभाग्य है ।

आपने चुटीले अंदाज में कहा- मोदी के अच्छे दिन आये या नहीं आये पता नहीं पर मालवावासियों के अच्छे दिन जरूर आ गये । पूरा मालवा गुरुदेव के दिल में बस गया और बसेगा भी क्यों नहीं - जब पैपराल में स्वास्थ्य प्रतिकूल हुआ तो सबसे पहले मालवा के मोहनखेड़ा में बिराजे गुरुदेव ही याद आये । उनको दर्शन की अर्जी लगाई । अर्जी मंजूर हुई । फिर तो छःपरिपालक संघ, नवाणु यात्रा, स्वयं ने 'ग्यारह बार दादा की यात्रा, बागरा शताब्दी महोत्सव, सब कुछ अच्छा हुआ । तब से मालवा की रट पकड़ ली । रतलाम चातुर्मास का मुख्य कारण भी यही है । आप लोगों की आस्था-समर्पण अद्‌भुत है।

समय तेजी से बीत रहा था, भक्तों का समूह तो गहरे सागर में डूबा था, मोती चुन रहे थे। अमृतवर्षा का पान कर रहे थे । और

इस रिमझिम वर्षा के बाद गुरुदेव की झमाझम वर्षा का इंतजार कर रहे थे । वे गुरुदेव की आत्मियता की बरसात में भीगना चाह रहे थे ।

इसी बीच गुरुदेव की प्रेरणा पाकर सुरेशचन्द्र पूरणमल जैन मेघनगर ने शोध संस्थान उज्जैन हेतु ग्यारह लाख की घोषणा की ।

श्रीसंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सोहनलालजी पारेख व इंदौर ट्रस्ट द्वारा इंदौर की परिचायक पुस्तिका का विमोचन श्री चेतन्यजी व बाघजीभाई के कर कमलों से करवाया ।

सबकी निगाहें पूज्य गुरुदेव की ओर तथा कान उनके मुखारबिन्द से प्रस्फुटित होने वाले शब्दों से पावन होने को आतुर हैं - गुरुदेव फरमाते हैं- परमात्मा ने सारे जगत को जीवन का मंत्र सिखाया । संसार में रहकर आगे बढ़ना सिखाया । संसार में सबसे मूल्यवान, शक्तिवान है तो 'श्रद्धा भक्ति और विश्वास' । अपने स्वयं में अपनी श्रृद्धा, अपनी भक्ति और अपना विश्वास । इसकी जड़ें जितनी मजबूत होंगी उत्तरोत्तर भावों में भी वृद्धि होगी ।

मैं राजस्थान से चलकर मालवा आया, मालवा मेरे दिल में है । स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में गुरुदेव ने मुझे शक्ति दी, स्वास्थ्य दिया । आपका जोश उत्साह देखकर मैं बैठा हूँ ।

सुरेशजी तांतेड़ आये थे, पूरे मालवा की ओर से विनती करने कि मालवा में आपका भव्य प्रवेश करवायेंगे । मालवा तो मुझमें भव्य रूप से प्रवेश कर चुका है । प्रसन्नता है कि इतनी गरमी में भी आप बैठे हैं, सुरेशजी ने ठंडक कर दी । अब बारह, एक डेढ़, जितनी भी बजे बज जाने दो ।

मैं मालवा में सद्भाव की आशा लेकर आया हूँ, हर गांव में आपस में प्रेम, भाईचारा हो, संगठन में मजबूती आये, विवाद और बिखवाद समाप्त हो । अग्रणी जनों के प्रति विनय हो उनके अनुभवों का लाभ लें । अपने समांज के भविष्य को उज्जवल बनावें । समाज एक है, गुरु एक है फिर आपसी मनमुटाव क्यों । छोटे बड़े का भेद क्यों ? विवाद को संवाद में बदलना है। इस हेतु नम जाना और गमखाना । जिससे सुन्दर स्थिति निर्मित होगी । जो छोटा बन गया, झुक गया वह बड़ा बन जायेगा ।

विनम्रता व्यक्तित्व में निखार लाती है । मालवा में एक रंग हो, मालवा में और कोई अन्य रंग नहीं चढ़े । पूज्य गुरुदेव ने पाँचवे ज्ञानायतन की जानकारी भी दी । अन्त में सुरेशजी तातेड़ ने गुरुदेव सहित सभी मुनि-भगवंतों और साध्वीजी का, सम्पूर्ण मालवावासियों का, अतिथि लोगों, सभी जमीनी कार्यकर्ताओं का विशेषकर थान्दला श्री संघ परिषद व अन्य समीपस्थ संघ परिषदों का जिनके अकथनीय प्रयासों से यह कार्यक्रम निर्विघ्न सम्पन्न हुआ उन सभी का आभार प्रकट किया।

राष्ट्रसंत का झाबुआ में प्रवेश
दूसरों का भला करने में ही भलाई हैं

राष्ट्रसंत आचार्यश्री जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. अंतरवेलिया से विहार कर दिनांक 6 जून को प्रातः 6.30 बजे वरिष्ठ मुनिराज पूज्य नित्यानंद विजयजी म.सा. एवं साधु-साध्वी मण्डल एवं श्रावक-श्राविकाओं के साथ झाबुआ के महावीर बाग पर पहुंचे । जहाँ झाबुआ श्रीसंघ के पदाधिकारियों द्वारा आचार्यश्री की भव्य अगवानी की गई । श्रीसंघ व्यवस्थापक श्री धर्मचन्द्र मेहता, उपाध्यक्ष श्री सुभाष कोठारी, यशवंत भण्डारी, सचिव श्री भरत बबेल, श्री प्रमोद भण्डारी एवं श्रीसंघ के सदस्यों ने अगवानी की ।

महावीर बाग पर आचार्यश्री ने प्रभु प्रतिमा के दर्शन किए । यहाँ से भव्य शोभायात्रा प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम आचार्यश्री की अगवानी हेतु जिला कलेक्टर डॉ. अरुणा गुप्ता भी पहुंची । यहाँ से आचार्यश्री, श्रावक-श्राविकाएँ, चारों परिषदों के सदस्य जिला जेल पहुंचे । वहाँ आचार्यश्री ने कैदियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि मैं बहुत दिनों से आप लोगों से मिलना चाहता था किन्तु आज अवसर आया है । मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि यहाँ से छुटने के पश्चात धर्म का मार्ग अपनाएँ ।

इसके पश्चात शोभायात्रा थांदला गेट होती हुई चन्द्रशेखर आजाद मार्ग, बाबेल चौराहा से श्री ऋषभदेव बावन जिनालय पहुंची । यहाँ धर्मसभा हुई ।

धर्मसभा का शुभारम्भ आचार्यश्री के मंगलाचरण से हुआ । धर्मचन्द्र मेहता द्वारा गुरुदेव वंदना करवाई गई ।

धर्मसभा में गुरुदेव को काम्बली ओढ़ाने का लाभ श्रीमती लीलाबाई शांतिलाल भण्डारी परिवार झाबुआ ने लिया एवं वासक्षेप पूजन करने का लाभ श्री प्रमोद कुमारजी चम्पालालजी भण्डारी (पारावाले) सी.ए. ने लिया । आचार्यश्री ने इस अवसर पर कहा की अधिक से अधिक जीवों के प्रति दया करें । दूसरों का भला करने में मालवा की भलाई है । सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन श्री संजय मेहता ने किया ।

डॉ. श्री प्रदीप संघवी द्वारा आचार्यश्री को एक पुस्तक भेंट की गई । इस पुस्तक में आचार्यश्री के सम्बन्ध में 'शाश्वत धर्म' में श्री संघवी द्वारा लिखित लेख सम्मिलित है । आचार्यश्री द्वारा कालीदेवी में इस पुस्तक में प्रकाशित लेख का वाचन मुनिश्री द्वारा करवाया गया । श्रीमती इंदिरा घोड़ावत ने कविता के माध्यम से आचार्यश्री के गुणों का वर्णन किया।

धर्मसभा का समापन आचार्यश्री के मांगलिक से हुआ । आचार्यश्री के दर्शनार्थ दिनभर ज्ञानमंदिर में आने - जाने वालों का तांता लगा रहा । शाम 6 बजे झाबुआ से विहार किया । विहार के समय कई अस्वस्थ लोगों के घर जाकर स्वस्थ होने का आशीर्वाद दिया ।

त्रिस्तुतिक समुदाय के संतों का नागपुर (महाराष्ट्र) में प्रथम बार आगमन

नागपुर। गुरूवार, दि. 19 जून 2016 को मुनिश्री संयमरत्न विजयजी एवं श्री भुवनरत्न विजयजी का श्री सुमतिनाथ मंदिर, रामदास पेठ में प्रथम बार मंगल प्रवेश हुआ । प्रातः 8 से 9 बजे तक प्रवचन, तत्पश्चात् गुरू भक्त परिवार द्वारा नवकारसी रखी गयी । मुनिश्री ने गीतों के माध्यम से प्रवचन दिये, जिसे सुनकर श्रीसंघ ने आनंद के साथ नया अनुभव प्राप्त किया ।

दि. 20 जून 2016 को भी प्रवचन रखे गये तथा शाम को राज्यसभा सांसद अजयजी संचेती अपने पूरे परिवार सहित दर्शन करने आये तथा मुनिश्री को अपने गृह निवास पर धर्म चर्चा व प्रवचन हेतु पधारने की विनंती की, जिसे मुनिश्री ने सहर्ष स्वीकार किया ।

दि. 21 जून 2016 को प्रातः 9 से 10 बजे प्रवचन व शाम को 5 बजे संचेती परिवार व श्रीसंघ के सदस्यों के साथ मुनिद्वय संचेती गृह निवास पर पधारे, जहाँ प्रवचन के पश्चात् मुनिश्री द्वारा लिखित साहित्य राज्यसभा सांसद अजयजी संचेती को दिया गया व अजयजी संचेती ने अपनी माता श्रीमती विजया संचेती द्वारा संकलित साहित्य मुनिश्री को प्रदान किया ।

दि.22 जून 2016 को प्रातः विहार करके श्री जीवनलालजी पारेख के घर मांगलिक प्रदान के बाद अशोकजी दोशी के घर पर आगमन हुआ तत् पश्चात् नलिनजी संघवी के गृह पर पदार्पण हुआ एवं संजयजी दोशी के निवास पर धर्म सभा रखी गयी । जहाँ मुनिश्री के प्रवचन से अनेक लोग प्रभावित हुए । इस प्रकार मुनिश्री का नागपुर नगर में प्रथम बार चार दिवसीय प्रवास सुखदमय रहा । अल्प प्रवास के पश्चात् मुनिद्वय का विहार विजयवाड़ा (आं.प्र.) की ओर हुआ।

उज्जैन में बही ज्ञान और प्रीति की गंगा...
मधुकर ज्ञानोपासना कन्या शिविर में

उज्जैन (वीरेन्द्र गोलेचा)। राष्ट्रसंत, विशाल गच्छाधिपति, युग प्रभावक आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की न केवल उज्जैन या त्रिस्तुतिक शताब्दी शोध संस्थान, उज्जैन में पूज्य आचार्यश्री के आशीर्वाद एवं साध्वीश्री डॉ. प्रीतिदर्शना श्रीजी म.सा., श्री रुचिदर्शना श्रीजी म.सा., श्री श्रुतिदर्शना श्रीजी म.सा. एवं श्री तृप्तिदर्शना श्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में आठ दिवसीय ''मधुकर ज्ञानोपासना कन्या शिविर'' का आयोजन किया गया जिसमें सम्पूर्ण भारतवर्ष से 8 वर्ष से 35 वर्ष की उम्र तक की 150 बालिकाओं एवं महिलाओं ने भाग लिया।

दिनांक 5 जून 2016 तक चलने वाले इस धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक शिविर का आयोजन श्री राजेन्द्रसूरि शताब्दी शोध संस्थान, अ.भा.श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक श्रीसंघ उज्जैन, अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् एवं परिषद् परिवार की उज्जैन शाखा द्वारा सामूहिक रूप से किया गया।

इस शिविर के मुख्य सूत्रधार नवयुवक परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष श्री सुशीलजी गिरिया एवं श्री पंकजजी रूनवाल ने शिविर की तैयारियां दो महीने पहले से प्रारंभ कर दी थीं, जिसमें उन्हें मध्यप्रदेश सरकार के स्कूली शिक्षा मंत्री, शोध संस्थान के अध्यक्ष एवं नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री पारसजी जैन के साथ ही समाज के सभी वरिष्ठों का मार्गदर्शन सतत् मिलता रहा।

शिविर की जानकारी प्रेषित करते हुए

वीरेन्द्र गोलेचा ने बताया कि शिविर संचालिका साध्वी श्री प्रीतिदर्शना श्रीजी म.सा. की सांसारिक बहन डॉ. दीपालीजी रूनवाल, उज्जैन एवं म.प्र. महिला परिषद की शिक्षामंत्री सुश्री सविताजी जैन कुक्षी ने प्रतिदिन विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता आयोजित करवाई, जिसमें 'जीवन में संयम का महत्व' एवं 'आलस्य जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है' जैसे विषयों पर भाषण, तात्कालिक भाषण, शुद्ध सूत्र उच्चारण, शुद्ध प्रतिक्रमण, गवली आदि में शिविरार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। प्रतिदिन प्रातः 5 बजे सामूहिक भक्ताम्बर पाठ से प्रारंभ इस शिविर में रात्रि में 10 बजे तक योगा, सूत्र अर्थ, प्रभु दर्शन, स्नात्र पूजा, अष्टप्रकारी पूजा, जीवन जीने की कला, तत्व दर्शन, श्रावकाचार, देव, गुरु और धर्म, प्रतिक्रमण एवं भक्ति की विभिन्न कक्षाऐं एवं कार्यक्रम हुए।

शिविर के मुख्य विषय :- शिविर में अपने घर को स्वर्ग कैसे बनायें ? माता-पिता का विनय कैसे करें ? कर्म सिद्धांत को जीवन में अप्लाय कैसे करें? तत्वज्ञान से जीवन का निर्माण कैसे करें? कैसे बनें लोकप्रिय? देव-गुरु और धर्म का बहुमान कैसे करें?, व्यसन और फैशन के तूफान से स्वयं को कैसे बचायें? टी.वी. और मोबाइल से जीवन को बर्बाद होते कैसे बचायें? जैन जगत के कोहिनूर एक परिचय एवं कैसे करें मन की शान्ति को अद्भुत प्रयोग जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर अलग-अलग विशेषज्ञों ने ज्ञान की गंगा बहाई।

शुभारंभ :- दिनांक 5 जून को सभी साध्वीवृंद की निश्रा में भव्य समारोह के साथ शिविर का गरिमामयी शुभारंभ हुआ। शिक्षामंत्री पारसजी जैन की अध्यक्षता में इस समारोह का शुभारंभ अतिथिवृंद मध्यप्रदेश सरकार के पर्यटन राज्यमंत्री श्री सुरेन्द्रजी पटवा, त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के राष्ट्रीय मंत्रीद्वय श्री मनोहर पुराणिक श्री जे. के. संघवी, शोध संस्थान के निर्देशक डॉ. तेजसिंहजी गौड़, नवयुवक परिषद् प्रदेश महामंत्री श्री मोहितजी तांतेड़, महिला परिषद् की राष्ट्रीय महामंत्री श्रीमती गुणबालाजी नाहर, श्री राजबहादुरजी मेहता, श्रीमती श्वेताजी भंडारी ने दीप प्रज्ज्वलन एवं परिषद ध्वजवंदन के साथ किया। नवयुवक परिषद् प्रदेश अध्यक्ष श्री सुशील जी गिरिया ने स्वागत भाषण दिया एवं संचालन श्री संजयजी कोठारी एवं पंकज जी रूनवाल ने किया। समारोह में साध्वीगणों सांसारिक पिता बड़नगर निवासी श्री रमेशजी ओरा एवं माताजी प्रेमलताजी ओरा का अभिनन्दन भी किया गया। आभार श्री पुखराजजी चौपड़ा ने व्यक्त किया तो शाल और श्रीफल से सभी अतिथियों का अभिनन्दन सुशीलजी गिरिया, मदनलालजी रूनवाल, प्रकाशजी गादिया, शांतिलालजी रूनवाल, राजमलजी चत्तर, माणकलालजी गिरिया,

कपिलजी सकलेचा, नितेषजी नाहटा, मनीषजी पिपाड़ा, राजेशजी पगारिया, रजतजी मेहता, राजेन्द्रजी पटवा, आदित्यजी भटेवरा, सौरभजी चपलौद, सरलाजी मेहता, चंद्रकांताजी गादिया, जूलीजी गोलेचा, बबीताजी गिरिया, मंजूजी आंचलिया आदि ने किया।

प्रवचनों की धारा :- कन्या शिविर में साध्वीवृंद ने समय-समय पर प्रवचन भी दिये जिसमें साध्वी श्री डॉ. प्रीतिदर्शना श्रीजी म.सा. ने शिविर की आवश्यकता बतलाते हुए कहा कि तुम अधूरे नहीं, तुम अभागे नहीं, फिर भी तुम जागे नहीं, पाश्चात्य संस्कृति के नशे में हम जीवन निर्वाह एवं जीवन निर्माण में अंतर भूल गये हैं। पेड़-पौधों और पशुओं की तरह गति एवं दिशाहीन जीवन जी रहे है। शिविर में **शि** से शिक्षा, **वि** से विनय-विवेक एवं **र** से रत्नत्रयीदाता का सम्पूर्ण ज्ञान मिलता है। बेटियाँ दो घरों की धरोहर होती हैं एवं दो घरों को स्वर्ग बनाती हैं, इसलिये बेटियों को संस्कारित होना बहुत जरूरी है। आज के इस डिग्रीवादी अर्थहीन प्रतिस्पर्धा में शिक्षार्थी अपने जीवन का अंत कर रहे हैं, अपने अंदर की शक्ति को भूलकर संवेदनहीन हो रहे हैं, लेकिन केवल डिग्री से कोई विद्वान नहीं होता, इसके लिये विनय-विवेक एवं संस्कार जरूरी है जो कि जीवन की सही पूंजी है, जो कि ऐसे शिविरों से मिलती है। ऐसे शिविर हर शहर में आयोजित होने चाहिये।

साध्वी श्री रूचिदर्शना श्रीजी म.सा.:- उज्ज्वल भविष्य केवल अच्छा नाम, अच्छी नौकरी, अच्छा पैकेज, अच्छा पैसा ही नहीं होता बल्कि इसके लिये सर्वांगिण विकास जरूरी है। भारतवर्ष की संस्कृति महान आर्य संस्कृति है उसमें भी उच्च संस्कृति है, जैन संस्कृति। हमें इसके महत्व को समझना चाहिए, देव-गुरु-धर्म, माता-पिता एवं समाज के प्रति कर्तव्यों को समझना चाहिये, जिस प्रकार खेल में एम्पायर या रैफरी का कन्ट्रोल होता है, ठीक उसी प्रकार बच्चों पर माता-पिता का कन्ट्रोल जरूरी है।

समापन :- साध्वीवृंद की निश्रा में दिनांक 12 जून को मध्यप्रदेश सरकार के स्कूली शिक्षा मंत्री श्री पारस जी जैन की अध्यक्षता में भव्य शिविर समापन समारोह हुआ जिसमें अतिथिवृंद इन्दौर विधायक श्रीमती उषाजी ठाकुर, त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मनोहरलालजी पुराणिक, श्री बाबूलालजी कटारिया, प्रदेश अध्यक्ष श्री सुरेशजी तांतेड़, परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री रमेशजी धाड़िवाल, श्री राजेन्द्रजी दंगवाड़ा, राष्ट्रीय महामंत्री अशोकजी श्रीश्रीमाल, महिला परिषद् की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती अंगूरबालाजी सेठिया, प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती पद्माजी सेठ, तरुण परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभयजी बरबोटा ने दीप प्रज्ज्वलन एवं माल्यार्पण के

साथ समापन समारोह का शुभारंभ किया।

श्री सुशीलजी गिरिया ने स्वागत भाषण द्वारा सभी अतिथियों का स्वागत किया। राजेशजी पगारिया द्वारा संचालित इस कार्यक्रम में अतिथियों के उद्‌बोधन के साथ ही साथ शिविरार्थियों ने भी प्रस्तुतियाँ दी जिसमें किसी ने पंच परमेष्ठि नृत्य प्रस्तुत किया तो किसी ने गुरुवंदन गीत। भाषण प्रतियोगिता एवं शिविर का सार प्रतियोगिता के विजेताओं ने जीवन में संयम का महत्व, आलस्य जीवन का सबसे बड़ा शत्रु है पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

शिविरार्थियों के अपने अनुभव एवं प्राप्त ज्ञान को सभी से साझा किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अतिथियों ने पुरस्कृत किया। आभार प्रदर्शन माणकलालजी जैन ने किया तो सभी अतिथियों का शाल एवं श्रीफल भेंट कर अभिनंदन राजबहादुरजी मेहता आदि संघ के महानुभावों ने किया।

महिला परिषद् की राष्ट्रीय महामंत्री गुणबालाजी नाहर, श्री अमितजी शाह बम्बई, श्री प्रकाशजी गादिया, श्री पुरूषोत्तमजी टेलर का भी सहयोग रहा।

इस अवसर पर नवयुवक परिषद की केन्द्रिय इकाई द्वारा शिविर संचालन हेतू रूपये 1 लाख की सहयोग राशि की घोषणा की गई। नमकमण्डी उज्जैन की महिला परिषद शाखा द्वारा शिविरार्थियों को रिटर्न गिफ्ट हेतू रू. 51,000/- प्रदान किए गए।

प्रतियोगिताओं के विजेता :-

शिविर में सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी का पुरस्कार सीनियर वर्ग में सुश्री जूलीजी भंडारी एवं जूनियर वर्ग में शैली पगारिया एवं नमामि मनीषजी पिपाड़ा, शिविर के सार में सीनियर वर्ग में नुपूरजी गुगलिया एवं द्वितीय ओजस्वी रूनवाल, परिधी जैन, मोक्षा ओरा, जयाजी नाहर संयुक्त रूप से रहे तो जूनियर वर्ग में सलोनी नाहर प्रथम तो ओजस्वी रूनवाल और श्रेया छाजेड़ द्वितीय रहे।

भाषण प्रतियोगिता में सीनियर वर्ग में प्रथम मोक्षा ओरा तो द्वितीय वर्ग से प्रेक्षा ओरा रहे।

सराहनीय योगदान :– शिविर को सुचारू रूप से संचालित करने में शिविर संचालकों एवं सहसंचालकों के अलावा नवयुवक परिषद् की दोनों शाखाओं के अध्यक्ष नितेषजी नाहटा, मनीषजी पिपाड़ा, राकेशजी सकलेचा, राजेन्द्रजी पटवा, संजयजी कोठारी, राजेशजी पगारिया, रजतजी मेहता, प्रवीणजी गादिया, वीरेन्द्रजी गोलेचा, योगेशजी पगारिया, रितेशजी खाबिया, राजेन्द्रजी पगारिया, आदित्यजी भटेवरा, अक्षयजी लोढ़ा, सौरभजी चपलौद, अभिषेकजी सकलेचा, राहुलजी सकलेचा, मयंकजी जैन, रोमेशजी जैन, सिद्धांत मेहता, प्रियेश भटेवरा आदि ने सराहनीय योगदान दिया। मीडिया के लिये ब्रजेशजी बोहरा नागदा का योगदान भी प्राप्त हुआ।

कुशलगढ़ । राजस्थान की धन्यधरा कुशलगढ़ नगर में दिनांक 10 जुलाई 2016 को सुविशाल गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न मुनिराज डॉ. श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा. एवं मुनिराज श्री विद्वद्रत्न विजयजी म.सा. का चातुर्मास हेतु प्रवेश होगा। मुनिद्वय का चातुर्मास श्रीराज राजेन्द्र जयन्तसेन आराधना भवन गांधी चौक, कुशलगढ़ पर होगा। दोनों मुनि भगवंतों के चातुर्मास से कुशलगढ़वासियों में उत्साह की लहर है।

श्री अखिल भारतीय जैन समाजोत्थान ट्रस्ट (रजि.)

श्री राज राजेन्द्र जयन्तसेन सूरि शिक्षा महाविद्यालय

(श्री महावीर जैन विद्यालय के अन्तर्गत)

(NCTE से मान्यता प्राप्त विक्रम विश्व विद्यालय एवं मा.शि.मंडल भोपाल से सम्बद्धता प्राप्त)

अभिलाषा कालोनी के सामने, देवास रोड़, उज्जैन (म.प्र.)

Website : www.jayantseneducation.com, Email : jayantsensuri.ujjain@gmail.com

संस्थापक मार्गदर्शक – प.पू. गच्छाधिपति राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

प्रवेश प्रारम्भ

B.Ed. &
D.EL.Ed.
(MP ONLINE)

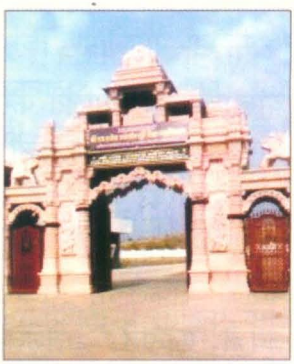

विशेषताएँ –

- नवीन एवं सुसज्जित भवन।
- योग्य एवं अनुभवी शिक्षक।
- समस्त आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध।
- छात्र एवं छात्राओं के लिए पृथक-पृथक सर्वसुविधायुक्त छात्रावास उपलब्ध।
- रियायती दर पर शुद्ध एवं सात्विक भोजन छात्रावासी छात्र-छात्राओं के लिए।
- 24 घंटे आर.ओ. पानी की सुविधा।
- आवागमन के लिए सिटी बस सेवा सुविधा उपलब्ध।
- वाहनों के लिए पार्किंग की समुचित व्यवस्था।
- खेल हेतु आवश्यक सुविधायें उपलब्ध।
- अध्ययन के लिए विशाल लायब्रेरी।
- आधुनिक कम्प्यूटर लेब।
- प्रोजेक्टर द्वारा शिक्षण।
- भव्य प्रवेश द्वार • संपूर्ण परिसर में सीसी टीवी केमरे

B.Ed. और D.EL.Ed. में प्रवेश के इच्छुक छात्र अपनी सीट ON LINE सुरक्षित करवायें। प्रवेश प्रक्रिया के लिए शीघ्रता करे।

सम्पर्क

कोषाध्यक्ष - श्री सुशील जैन कोषाध्यक्ष - श्री मानकलाल जैन ट्रस्टी - श्री प्रकाश सेठिया

डॉ. तेजसिंह गौड़ (निदेशक) – 9406650252, डॉ. परशुराम कुशवाह (प्राचार्य) 9425945479

परिषद प्रांगण से

तरूण परिषद का दौरा सम्पन्न

तरुण परिषद् की राष्ट्रीय इकाई द्वारा आयोजित प्रवास कार्यक्रम में तरुण परिषद अध्यक्ष श्री अभय झमकलाल बरबोटा, महामंत्री श्री अर्पित खाबिया, सहमंत्री श्री पियुष संघवी, शिक्षामंत्री श्री साकेत गिरिया म.प्र. और राजस्थान की निम्बाहेड़ा, नीमच, नयागांव, पालसोडा, नारायणगढ़, मंदसौर, दलौदा, जावरा, पिपलौदा, नामली, रतलाम, बदनावर, दसई, लाबारिया, झकनावदा, राजगढ़, रिंगनोद, टांडा, बाग, कुक्षी, अलीराजपुर, भाभरा, जोबट, राणापुर, पारा, झाबुआ, मेघनगर, कुशलगढ़ शाखाओं में प्रवास किया गया। जिसमें शाखाओं के स्थानीय स्तर के कार्यों का ब्यौरा लिया गया।

प्रवास के दौरान संगठनात्मक कार्य करते हुए सभी शाखाओं को पुनः सक्रिय किया गया और आठ नवीन गठन भी किये गये। प्रवास में दसई और मेघनगर में मधुकर शीतल नीर का उद्घाटन भी किया गया। सभी शाखाओं से मिले स्नेह और वडिलजनों के आशीर्वाद के लिए राष्ट्रीय इकाई आपका बहुत-बहुत आभार व्यक्त करती है।

तरुण परिषद् के प्रवास कार्यक्रम के सम्पूर्ण व्यय का लाभ नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय परामर्शदाता चेतन्यजी काश्यप ने लिया और जीवदया हेतु वितरित किये गए जलपात्र का लाभ पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष चिरागजी भंसाली ने लिया।

प्रवास में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कई वर्तमान और पूर्व पदाधिकारियों का सहयोग प्राप्त हुआ। तरुण परिषद की राष्ट्रीय इकाई आपका आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी इसी तरह सहयोग की आशा करती है। इस अवसर पर पूर्व पदाधिकारियों में श्री प्रवीणजी डूंगरवाल, श्री मनीषजी बाफना, श्री नीलेशजी लोढ़ा, कमलेशजी सालेचा आदि ने भाग लिया एवं प्रणयजी भंडारी, अर्पित कोठारी, सिद्धार्थ तलेसरा, हिमांशु कांठेड़, प्रफुल्ल जैन, अर्पित कांठेड़ आदि उपस्थित थे।

मैसूर परिषद की नई कार्यकारिणी का गठन

मैसूर । अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, मैसूर शाखा का चुनाव दिनांक 8 जून 2016 को सम्पन्न हुआ । जिसमें सर्वसदस्यों की सम्मति से 11 सदस्यों की नई कमेटी को चुना गया ।

कार्यकारिणी की मिटिंग में श्री अमृतलाल राठौड़ (मांडोलीनगर) को अध्यक्ष के रूप में निर्विरोध रूप से चुना गया। उपाध्यक्ष श्री गुलाबचंद मेहता (सायला), सचिव श्री शैलेषजी धोकड़ (भीनमाल) सहसचिव श्री नरेन्द्र मलाणी (चोराऊ), खजांची - श्री नरपतकुमार गोवाणी (चौराऊ) एवं अन्य कमेटी सदस्यों में श्री अशोक कुमार गोवाणी (चोराऊ), श्री अशोक कुमार गटराजजी (सुरणा), श्री प्रकाश कुमार झोटा (दादाल), श्री संतोष कुमार भंडारी (जालोर), श्री विनोद कुमार छत्रियवोर (सुराणा), श्री डॉ. विक्रमकुमार बंदामुथा (मोरसीम) को मनोनीत किया गया।

महिला परिषद की नवीन कार्यकारिणी का गठन

खवासा । पू. साध्वी भगवंत प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा. , पू. साध्वी रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा., पू. सा. श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा. एवं पू.साध्वी श्री तत्वदर्शनाश्रीजी म.सा. खवासा पधारे । जिनकी पावन प्रेरणा से अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन महिला परिषद की नवीन कार्यकारिणी का गठन हुआ ।

पूज्य साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा एवं निवृत्तमान अध्यक्षा कुसुम वागरेचा के निर्देशन में नवीन कार्यकारिणी में सरोज वागरेचा अध्यक्ष मंजू कोठारी उपाध्यक्ष, प्रिया वागरेचा सचिव एवं रुचि वागरेचा को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया । सांस्कृतिक सचिव मंजू वागरेचा एवं दिव्या वागरेचा को मनोनीत किया गया । महिला परिषद द्वारा प्रति माह की सुदी सप्तमी को दादा गुरुदेव की अष्टप्रकारी महापूजन के आयोजन का निर्णय लिया गया ।

पुण्य आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की

झकनावदा । राष्ट्रसंत गच्छाधिपति आचार्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न वयोवृद्ध परम पूज्य मुनिराजश्री जय कीर्तिविजयजी म.सा. का बागरा नगरे कालधर्म हो गया था । उनकी आत्मा की शांति हेतु झकनावदा मूर्ति पूजक जैन श्रीसंघ एवं अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन तरुण एवं नवयुवक परिषद् द्वारा एक श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया ।

सभा में कनकमल माण्डोत, श्री तानमल कुमट, श्री दिनेश कटकानी आदि ने मिलकर मुनिराज को पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजली अर्पित की एवं पुण्य आत्मा की आत्मशांति हेतु नवकार महामंत्र का जाप किया ।

श्री संघ सौरभ

रतलाम–रतलाम नगर की धर्मधरा पर राष्ट्रसंत श्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का चातुर्मास हेतु 10 जुलाई को नगर प्रवेश होगा, वहीं उनके मंगल स्वास्थ्य की कामना में नीमवाला उपाश्रय पर स्वसंचालित वार्षिक 'धर्मानुष्ठान गुरु रहें सदा स्वस्थ' के सात माह 9 जुलाई को पूर्ण होंगे। इस अनूठे धर्मानुष्ठान ने ऐतिहासिक स्वरूप प्राप्त कर लिया है।

उल्लेखनीय है कि नीमवाला उपाश्रय पर साध्वी श्री डॉ. प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्रीजी मसा., साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा. एवं साध्वीश्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी की प्रेरणा से राष्ट्रसंतश्री के 80 वें जन्मोत्सव वर्ष से 81 वें जन्मोत्सव तक आयोजित इस धर्मानुष्ठान में होने वाली धर्माराधना जिसमें प्रत्येक साधक को प्रतिदिन महामंत्र नवकार की 5 माला, प्रति वीदी 10 व प्रति सुदी 15 को प्रभु श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ तथा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. की प्रति सुदी 7 को20 माला के जाप चल रहे हैं। 9 जून तक महामंत्र नवकार के 21 लाख इक्यावन हजार पार्श्व प्रभु के 10 लाख इक्हत्तर हजार व गुरुदेव के 7 लाख 65 हजार जाप हो चुके हैं। इसी क्रम में साधकों द्वारा 2700 सामायिक, 7415 प्रभु पूजन, 3330 प्रतिक्रमण तथा 207 पौषध हो चुके हैं। 15 वर्ष से कम उम्र के 72 बालक–बालिकाओं द्वारा प्रभु पूजन की जा रही है।

त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन, धर्मानुष्ठान संयोजक पारसमल खेड़ावाला एवं सहसंयोजक सुरेशचन्द्र बोराना व निर्मल कटारिया, धर्माराधक सेवा प्रकल्प प्रभारी श्रीमती ममता धनसुख भंडारी, रचनात्मक एवं संस्कारारोपण प्रभारी अनोखीलाल भटेवरा तथा निर्णायक मण्डल के सर्वश्री सुजानमल सोनी, सोहनलाल मूणत, गेंदालाल सकलेचा, महावीर पोरवाड़ तथा श्रीमती सरोज तेजमल कांसवा ने सभी धर्माराधकों की तपाराधना की अनुमोदना करते हुए कहा कि नीमवाला उपाश्रय पर चल रहे स्वसंचालित वार्षिक धर्मानुष्ठान में की जा रही रिकार्ड धर्माराधनाओं ने नया इतिहास रच दिया है। इन धर्माराधनाओं के बीच राष्ट्रसंतश्री का रतलाम में चातुर्मास सोने पर सुहागा है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि रतलाम में त्रिस्तुतिक श्रीसंघ के किसी आचार्य द्वारा लगभग 93 वर्ष बाद यह चातुर्मास होगा।

धर्मानुष्ठान संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने बताया कि राष्ट्रसंतश्री का चातुर्मास श्री जयन्तसेन धाम पर होगा जबकि यह धर्मानुष्ठान नीमवाला उपाश्रय पर हो रहा है। अतः इसका संचालन कैसे किया जाए, इस हेतु शीघ्र ही मुनि भगवन्तों एवं चातुर्मास लाभार्थी व त्रिस्तुतिक श्री संघ राष्ट्रीय परामर्शदाता श्री चेतन्य कुमार काश्यप से विचार विमर्श कर मार्गदर्शन लिया जाएगा।

आचार्य श्री के अच्छे स्वास्थ्य हेतु मंगलकामना की

झकनावदा (मनीष कुमट) । परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के अच्छे स्वास्थ्य हेतु झकनावदा तरुण एवं नवयुवक परिषद द्वारा स्थानीय परिषद् कार्यालय पर नवकार महामंत्र के जाप किए गए व पूज्य आचार्यश्री के अच्छे स्वास्थ्य हेतु भगवान से कामना की कि गुरुदेव जल्द स्वस्थ हों । इस अवसर पर श्री कनकमल माण्डोत, श्री शैतानमल कुमट, श्री दिनेश माण्डोत, श्री शम्भू सेठिया, तरुण परिषद् अध्यक्ष श्री मनीष कुमट, श्री मनीष सेठिया, श्री मनोहर कटकानी, श्री अर्जुन सेठिया आदि उपस्थित थे।

भीमावरम में महिलाओं का ज्ञान शिविर

(महेन्द्र सी. कबदी) । दक्षिण भारत के श्री आंध्रप्रदेशान्तर्गत भीमावरम समीपवर्ती अतिप्राचीन श्री पेदमीरम तीर्थ में निम्न कार्यक्रम साध्वीश्री वितरागदर्शिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 6 कि निश्रा में सानंद सम्पन्न हुए ।

दिनांक 9 जून 2016 सोमवार आखातीज के दिन वरसीतप के पाँच तपस्वीगणों की पारणा के अवसर पर तपस्वीगणों के संबंधीगण व अन्य यात्रिगणों ने पधारकर लाभ लिया एवं साध्वीश्री कि निश्रा में दिनांक 12 जून से 19 जून तक महिलाओं के ज्ञान शिविर का आयोजन रखा गया जिसमें अच्छी संख्या में 95 महिलाओं ने लाभ लिया एवं दिनांक 20.5.2016 को शिविरार्थियों का पारितोषिक बहुमान किया गया इस दिन अच्छी संख्या में अभिभावक व अन्य यात्रिगण मौजूद रहे । शिविर का आयोजन श्रीमती मणीदेवी विजयराजजी गोवाणी, नोगाया सौलंकी परिवार, तेनाली हैदराबाद राज. में चौराऊवाला ने किया । इसी बीच दिनांक 17 जून 2016 मंगलवार के दिन शासन स्थापना दिवस शिविरार्थियों एवं साध्वीजी म.सा. एवं मौजूद यात्रिगणों की उपस्थिति में मनाया गया ।

दिनांक 19 जून को श्री राजेन्द्रसूरी जैन दादावाड़ी की वार्षिक ध्वजारोहण लाभार्थी परिवार में विमल मार्केटिंग विजयवाड़ावालों द्वारा साध्वीजीश्री एवं अन्य मौजूद यात्रिगणों की उपस्थिति में किया गया । शाम को श्री युवराजजी सूरतवालों ने पधारकर शिविरार्थियों को 'बहना तु सम्भल के रहना' का पाठ सिखाया । सभी कार्यक्रम साध्वीजीश्री की निश्रा में बड़े ही हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुए ।

इंदौर श्रीसंघ के चुनाव सम्पन्न

श्री त्रिस्तुतिक श्रीसंघ इंदौर ट्रस्ट मंडल के आगामी 3 वर्षों के लिए हाल ही में हुए मनोनयन में श्री शशिकांतजी सकलेचा अध्यक्ष, श्री उत्सवलालजी पोरवाल उपाध्यक्ष, श्री नरेन्द्रजी बोहरा सचिव, श्री रविजी रांका सहसचिव, श्री धनराजजी संघवी कोषाध्यक्ष मनोनीत किए गए । उक्त जानकारी अनिल सकलेचा ने दी ।

राजेन्द्रसूरि जन कल्याण ट्रस्ट पुर्वगठित

आहोर । आहोर निवासी श्री मिश्रीमल उर्फ भैरूलाल उदेचंदजी दोशी चौपड़ा का स्वर्गवास दिनांक 25 अप्रेल 2016 बैंगलोर में 79 वर्ष की आयु में हो गया । आपश्री राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. के परम भक्त थे । आपके द्वारा संघ एवं शासन के अनेक अनुमोदनीय कार्य किये गये ।

अहमदाबाद । 1983 में बना अ.भा. श्री राजेन्द्रसूरि जनकल्याण ट्रस्ट जो कुछ वर्षों से सक्रिय नहीं था वह पुनः सक्रिय किया गया । जिसमें श्री अरविन्दभाई छोटालाल देसाई (अहमदाबाद प्रमुख), श्री हंसमुखलाल मफतलाल वोहरा (ट्रस्टी), श्री जे.के. संघवी ट्रस्टी, श्री ओ.सी. जैन (ट्रस्टी), श्री चेतन्यजी काश्यप (ट्रस्टी), श्री जयंतीलालजी (रत्नमणी) ट्रस्टी एवं विपिनभाई बाबुलाल मोदी ट्रस्टी के रूप में मनोनीत हुए ।

108 पार्श्वनाथ महापूजन सम्पन्न

डीसा । पूज्य गच्छाधिपति राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वजी म.सा. की निश्रा में सुश्रावक श्री हंसमुखभाई वेदलिया एवं सुश्राविका श्रीमती वर्षाबेन वेदलिया की 108 पार्श्वनाथ तीर्थ यात्रा, उपधान तप एवं नव्वाणु यात्रा आदि सुकृत्यों की उजमणी पर श्री स्वरूप वेदलिया, मफतलाल, धाणजी भाई परिवार द्वारा डीसा में दि. 25 जून 2016 को प्रातः श्री अजिनाथ गृह चैत्य मध्य श्री 108 पार्श्वनाथ महापूजन पढ़ाई गई। विधिकारक श्री कुणालभाई ने विधिवत पूजा करवाई । पूजन में आचार्यश्री बोधिरत्नसूरिजी म.सा. आदि सह समुदाय पधारे । आरती के पश्चात प्रभावना वितरित की गई । दोपहर को डीसा श्रीसंघ का संघ भोजन जैन बोर्डिंग में हुआ जिसमें थाली धोकर पीने वाले महानुभावों का 10 रु. की प्रभावना से बहुमान किया गया । शाम को वेदलिया परिवार तथा आमंत्रित मेहमानों ने श्री शंखेश्वर तीर्थ की ओर प्रस्थान किया । श्री राजेन्द्रसूरि नवकार शाला में आचार्यश्री युगचन्द्रसूरिश्वरजी म.सा. ने उपदेश प्रदान किया एवं दादा के दरबार में स्नात्र पूजा पढ़ाई गई । दोपहर में पू. राष्ट्रसंतश्रीजी की आज्ञानुवर्तिनी श्री संयमप्रभा म.सा. आदि की निश्रा में प्रवचन हुए । वेदलिया परिवार एवं आमंत्रित मेहमानों द्वारा 50 रु. से संघ पूजा की गई ।

अलवर । अलवर नगर की पुण्यधरा पर दिनांक 13 जुलाई 2016 को परमविदुषी गुरुवर्या साध्वी डॉ. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी एवं साध्वी डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म. का चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश होगा ।

जिनका चार्तुमास 'श्री जैन सन्तवाटिका' श्री राज - राजेन्द्रसूरि जैन गुरु मंदिर ट्रस्ट कटी घाटी, अलवर पर होगा ।

शिविरार्थियों द्वारा प्रभु का अभिषेक

मंदसौर । पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में हुए ज्ञानायतन-5 में पूज्य गुरुदेव एवं मुनिगणों की प्रेरणा से अभिभूत मंदसौर से गये शिविरार्थियों ने श्री अजितनाथ जिनालय पर एक समान गणवेश (पूजा वस्त्र) में प्रभु का अभिषेक, अष्टप्रकारी पूजन, सुन्दर स्तवन एवं भाव-विभोर करने वाले चंवर नृत्य से उपस्थित सभी धर्मावलम्बियों को मंत्रमुग्ध कर दिया ।

ज्ञानायतन में दिए गए इस ज्ञान से सभी प्रभावित हुए एवं बच्चों को प्रभावना दी गई। अभिषेक में हर्ष खाबिया, सिद्धार्थ चपरोत, अमन डोसी, यश बाफना, हर्ष वारोडी, निवेश खाबिया, अमल कोलन आदि ने भाग लिया ।

---

* नासिक । दिनांक 10 जुलाई 2016 को नासिक की धन्यधरा पर आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा. आदि का चातुर्मास प्रवेश होगा ।

* मुंबई । श्री मुंबई महानगर के भायखला प्रांगण में आचार्यदेव श्रीमद् विजय जिनोत्तमसूरीश्वरजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणी परिवार ठाणा -23 का भव्य चातुर्मास प्रवेश दिनांक 10 जुलाई 2016 को होगा जिसमें शुभ संदेश सोसायटी से 36 कलश युक्त भव्य सामैया का कार्यक्रम होगा ।

* भारत से कई सालों पहले तस्कर की गई भगवान बाहुबली की मूर्ति दिनांक 9 जून को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीजी के भारत आगमन पर भारत आ गई है । प्रधानमंत्री की चौथे अमेरिका विजिट के दौरान अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा द्वारा उन्हें 200 मूर्तियां लौटाई गईं जिसमें भगवान बहुबली की मूर्ति प्रमुख है।

* अजमेर आचार्य श्री जिनपियुष सागरजी व साध्वी श्री मनोहर श्रीजी म.सा. की निश्रा में अजमेर दादावाड़ी पर दिनांक 9 जून को खतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिन कैलाश सागर सूरीश्वरजी की प्रथम स्वर्गारोहण जयन्ती धूमधाम से मनाई गई । इस अवसर पर नाकोड़ा तीर्थ पर भी प्रभु-भक्ति के कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

* आचार्य पूर्णचन्द्रसूरीश्वरजी म. एवं आचार्य श्री युगचन्द्रसूरिजी म. के सान्निध्य में।

* श्री शंखेश्वर प्रवचन श्रुततीर्थ जिनालय का प्रथम ध्वजारोहण महोत्सव दिनांक 14 मई को सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर पूज्यश्री द्वारा लिखित 25 नवीन पुस्तकों के प्रकाशन की जानकारी दी गई ।

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी दहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड़ (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ, निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिभ्रमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव

श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि.....

दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न
मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

कोबा (गांधीनगर)
पि. ३८२ ००९

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month. कुल पृष्ठ कवर सहित 108

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी है ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी है ।।

प.पू. सुविशाल गच्छाधिपति,
शासन सम्राट,
राष्ट्रसंत, साहित्य मनिषी
श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.
की आज्ञानुवर्ति साध्वीजी
श्री महाप्रभाश्रीजी की सुशिष्या
पू. साध्वी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा.
के संयम जीवन के 39 वें वर्ष के
मंगल प्रवेश पर वंदना
इस शुभावसर पर
आपके दीर्घ व स्वस्थ जीवन की
कामना करते हैं
एवं हार्दिक शुभ कामनाऐं

संघवी शांतीलाल शेषमलजी रामाणी
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय
जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ

SHANTILAL & SONS
JEWELLERS
DIAMONDS • GOLD • SILVER
Nellore - 524 001 (A.P.)

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001